JAISI KARNI WAISI BHARNI (HINDI)

जैसी करनी वैसी भरनी

(मअ़ 54 दिलचस्प व इबरत अंगेज़ ह़िकायात)

(دعوت اسلامی)
शो'बए इस्लाही कुतुब

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी किताब** या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूदे शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

www.dawateislami.net

"जैसी करनी वैसी भरनी" का हिन्दी रस्मुल ख़त्

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह किताब 'उर्दू' ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का '**हिन्दी**' **रस्मुल ख़त्** (लीपियांतर) करने की सआ़दत हासिल की है [**भाषांतर** (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (Transliteration) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़्हा व सत्र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त् का लीपियांतर ख़ाका

ا = अ	ب = ब	بھ = भ	پ = प	پھ = फ	ت = त	تھ = थ
ٹ = ट	ٹھ = ठ	ث = स	ج = ज	جھ = झ	چ = च	چھ = छ
ح = ह़	خ = ख़	د = द	دھ = ध	ڈ = ड	ڈھ = ढ	ذ = ज़
ر = र	ڑ = ड़	ڑھ = ढ़	ز = ज़	ژ = ज़	س = स	ش = श
ص = स	ض = ज़	ط = त़	ظ = ज़	ع = अ़	غ = ग़	ف = फ़
ق = क़	ک = क	کھ = ख	گ = ग	گھ = घ	ل = ल	م = म
ن = न	و = व	ھ = ह	ی = य	آ = आ	ؤ = ू	ئ = ी

✍ –: राबिता :– ✍

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड,

बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

उ़नवान	सफ़हा	उ़नवान	सफ़हा
ग़ीबत से बाज़ रखेगा	1	सच्चे आदमी की बात की क़बूलिय्यत	21
नुक़्सान अपना है	1	किसी की मुसीबत पर खुशी का इज़हार	21
जैसी करनी वैसी भरनी	2	बदगोई की सज़ा	22
जैसा करेगा वैसा भरेगा	2	नर्मी की फ़ज़ीलत	24
खुद भी ज़लील होता है	3	मिज़ाज में नर्मी पैदा करने का नुस्ख़ा	24
दूसरों के साथ अच्छा बरताव कीजिये	4	कल का फ़क़ीर आज का अमीर	24
क़ब्ज़े की कोशिश करने वाली अन्धी हो गई	6	बदकारी की तोहमत लगाने का अन्जाम	25
सात ज़मीनों तक धंसाया जाएगा	8	तुम्हारे ऐब खुल जाएंगे	26
तौक़ गले में डाला जाएगा	8	चालीस साल तक इफ़्लास का शिकार रहा	27
मिट्टी उठा कर मैदाने हश्र में लाए	9	लोगों के बुरे नाम रखना	27
फ़र्ज़ क़बूल होते हैं न नफ़्ल	9	फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं	29
गले में बीस पच्चीस सेर मिट्टी डाल कर देख लो	10	किसी को बे वुक़ूफ़ या उल्लू कहने का हुक्म	29
झूटा इल्ज़ाम लगाने की सज़ा	10	मछली ने अंगूठा काटा	30
बोहतान लगाने की सज़ा	11	मज़्लूम की मदद ज़रूर होती है	32
दोज़ख़ियों की पीप में रहना पड़ेगा	12	मज़्लूम की बद दुआ मक़्बूल है	32
तौबा ज़रूरी है	12	मज़्लूम जानवर की बद दुआ	33
बीवी को शोहर के ख़िलाफ़ भड़काने वाली अन्धी हो गई	13	हाथ बेकार हो गया	33
औ़रत को उस के ख़ावन्द के ख़िलाफ़ उभारना	13	मख्खी से तक्लीफ़ दूर करने का सिला	34
दो दिलों को जोड़ने की कोशिश करो	14	कुत्तों का इलाज करते	35
तू कितना अच्छा है !!	15	फ़क़ीर को धुत्कारा तो खुद फ़क़ीर बन गया	36
लोगों को सताने की सज़ा	15	सदक़ा न रोको	37
मुआ़फ़ी मांग लीजिये	16	तोल कम क्यूं हुवा ?	38
ठट्ठा मस्ख़री कर के सताने वाले की सज़ा	17	कर भला हो भला	39
लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वाले का अन्जाम	17	आसानियां दो आसानियां मिलेंगी	40
मज़ाक़ में भी डराने से रोका	17	तीनों क़त्ल हो गए	41
मश्कीज़ा क्या है ?	19	बुलन्दी चाहने वाले की रुस्वाई	42
झूट गुनाहों की त़रफ़ ले जाता है	20	अपने दो बेटे मर गए	43
		ज़मीन में धंस गया	44

www.dawateislami.net

उ़नवान	सफ़हा	उ़नवान	सफ़हा
अल्लाह जो चाहे दे	45	ज़ालिम को मोहलत मिलती है	74
बेटियों के फ़ज़ाइल	46	ज़बान लटक कर सीने पर आ गई	75
अन्धी लड़की	47	क़ारून का अन्जाम	77
तुम ने उस का हाथ पकड़ा तो किसी		शिकारी खुद शिकार हो गया	80
ने मेरा हाथ पकड़ लिया	48	शिकार करने चले थे, शिकार हो बैठे	82
क्या आप को येह गवारा होगा ?	49	येह मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है	83
मुझे बदकारी की इजाज़त दीजिये	50	पांच दिरहम भी मिल गए और पानी भी	84
अपना बच्चा समझ कर ऑपरेशन		मां के गुस्ताख़ को ज़मीन ज़िन्दा	
करने का सिला	51	निगल गई	85
अच्छा करोगे अच्छा मिलेगा	52	मां बाप के ना फ़रमान को जीते जी	
दुआए ख़ैर का फ़ाइदा	52	सज़ा मिलती है	86
दूसरों की सलामती मांगने का सिला	53	जैसा बोएंगे वैसा काटेंगे	87
ज़ालिम अपने अन्जाम को पहुंचा	53	अज़ान का मज़ाक़ उड़ाने वाले का	
बद दुआ न करो	55	अन्जाम	87
बद दुआ करने के चन्द शरई अह्काम	56	नाच रंग की महफ़िल जारी थी कि...	88
मज़्दूर को ज़िन्दा जलाने वाला खुद		कटा हुवा सर	88
भी ज़िन्दा जल गया	56	चोर अपाहज हो गया	88
हज़रते सय्यिदुना यहूया عَلَيْهِ السَّلَام की शहादत	58	महल वीरान हो गया	89
ताबेई बुज़ुर्ग की शहादत	59	मुझे आगे जा कर फेंको	90
ज़ुल्म से छुटकारे की दुआ क्यूं नहीं की ?	61	बूढ़ी मां	92
लालची बीवी का अन्जाम	62	नेकियों और गुनाहों का बदला दुन्या	
शेर ने सर चबा डाला	65	में भी मिल कर रहता है	95
ज़ुल्म का अन्जाम	66	झूटे गवाह बनने वाले ग़र्क़ हो गए	98
एक टांग कट गई	67	आज तो मुझे क़त्ल ही करा दिया था	99
पुर अस्रार मा'ज़ूर	68	पानी के चन्द क़तरों का वबाल	100
जैसी करनी वैसी भरनी	70	यक़ीन की दौलत	102
क़ुरआने करीम भुला दिया गया	70	लुक़्मे के बदले लुक़्मा	103
हाफ़िज़े की तबाही का एक सबब	72	न्यू इयर नाइट मनाने से बाज़ रहा	104
ख़ौफ़नाक डाकू	73	माख़ज़ो मराजेअ़	106

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

ग़ीबत से बाज़ रखेगा

हज़रते अ़ल्लामा मजदुद्दीन फ़ीरोज़ाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى से मन्क़ूल है : जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो तो यूं कहो : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो तुम को **ग़ीबत** से बाज़ रखेगा, और जब मजलिस से उठो तो कहो : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد तो फ़िरिश्ता लोगों को तुम्हारी **ग़ीबत** करने से बाज़ रखेगा।

(اَلْقَوْلُ الْبَدِيع، ص۲۷۸)

कौन जाने दुरूद की क़ीमत है अ़जब दुरे शाहवार दुरूद
हम को पढ़ना ख़ुदा नसीब करे दम ब दम और बार बार दुरूद

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾1﴿ नुक़्सान अपना है

हज़रते मौलाना जलालुद्दीन रूमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने मस्नवी शरीफ़ में एक सबक़ आमोज़ हिकायत लिखी है कि मिट्टी खाने का शौक़ीन शख़्स एक दुकान से शकर (चीनी) ख़रीदने के लिये गया तो दुकानदार ने कहा कि मेरे बाट मिट्टी के हैं, अगर मन्ज़ूर हो तो इसी से तोल दूं ? येह सुन कर गाहक कहने लगा : मुझे शकर से मत़लब है चाहे किसी भी बाट से तोलो। उधर दुकानदार शकर लेने दुकान के अन्दर गया इधर

www.dawateislami.net

मिट्टी खाने के शौक़ीन गाहक ने मिट्टी के बाट को चाटना शुरूअ़ किया, साथ ही साथ वोह डर भी रहा था कि कहीं दुकानदार को पता न चले कि मैं उस का नुक़्सान कर रहा हूं। दूसरी त़रफ़ दुकानदार उसे मिट्टी खाते हुवे देख चुका था और जान बूझ कर शकर डालने में ताख़ीर कर रहा था कि येह नादान शख़्स जितनी मिट्टी खाएगा उतना ही बाट का वज़्न कम हो जाएगा और उसे शकर कम मिक़्दार में मिलेगी और जब घर जा कर येह शकर तोलेगा तो उसे पता चलेगा कि ह़क़ीक़त में येह अपना ही नुक़्सान कर आया है। (مثنوی مولوی معنوی، دفتر چہارم، ص ۷۱، ۷۲)

जैसी करनी वैसी भरनी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस में कोई शक नहीं कि येह दुन्या दारुल अ़मल (या'नी अ़मल करने की जगह) है और आख़िरत दारुल जज़ा (या'नी बदला मिलने का मक़ाम) हम दुन्या में जो अच्छा या बुरा बीज बोएंगे उस की फ़स्ल आख़िरत में काटेंगे बा'ज़ अवक़ात तो दुन्या में भी बदला मिल जाता है, अच्छा या बुरा बदला मिलने को हमारे हां "जैसी करनी वैसी भरनी", "जैसा करोगे वैसा भरोगे", "जैसा बोओगे वैसा काटोगे" और "मुकाफ़ाते अ़मल" जब कि अ़रबी ज़बान में "كَمَا تَدِينُ تُدَانُ" नीज़ "بِالْكَيْلِ الَّذِي تَكْتَالُ يُكَالُ لَكَ" और अंग्रेज़ी ज़बान में "As you sow so shall you reap" कहा जाता है।

जैसा करेगा वैसा भरेगा

येही बात हमारे सरकारे वाला तबार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाई है :

www.dawateislami.net

اَلْبِرُّ لَا يَبْلٰى وَالْاِثْمُ لَا يُنْسٰى وَالدَّيَّانُ لَا يَمُوْتُ فَكُنْ كَمَا شِئْتَ كَمَا تَدِيْنُ تُدَانُ

या'नी नेकी पुरानी नहीं होती और गुनाह भुलाया नहीं जाता, जज़ा देने वाला (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) कभी फ़ना नहीं होगा, लिहाज़ा जो चाहो बन जाओ, तुम जैसा करोगे वैसा भरोगे।

(مصنف عبدالرزاق،کتاب الجامع،باب الاغتیاب والشتم،۱۰/ ۱۸۹،حدیث: ۲۰۴۳۰)

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى "अत्तैसीरे शर्हुल जामेइ़स्सग़ीर" में "كَمَا تَدِيْنُ تُدَانُ" की वज़ाहत में लिखते हैं : या'नी जैसा तुम काम करोगे वैसा तुम्हें इस का बदला मिलेगा, जो तुम किसी के साथ करोगे वोही तुम्हारे साथ होगा। (التیسیر،۲/۲۲۲)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जो किसी को रुस्वा करता है वोह ख़ुद भी ज़लील होता है

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो किसी मुसलमान को ऐसी जगह रुस्वा करे जहां उस की बे इ़ज़्ज़ती और आबरू रेज़ी की जा रही हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसी जगह ज़लील करेगा जहां वोह अपनी मदद चाहता होगा और जो किसी मुसलमान की ऐसी जगह मदद करे जहां उस की इ़ज़्ज़त घटाई जा रही हो और उस की आबरू रेज़ी की जा रही हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐसी जगह उस की मदद करेगा जहां वोह अपनी मदद का त़लबगार होगा।

(ابوداؤد،کتاب الادب،باب من رد۔الخ،۴/۳۵۵،حدیث:۴۸۸۴)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : इस त़रह़ कि जब कुछ लोग किसी मुसलमान की आबरू रेज़ी कर रहे हों तो येह भी उन के साथ शरीक हो कर उन की मदद करे उन की हां में हां मिलाए। ("अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसी जगह में ज़लील करेगा जहां वोह अपनी मदद चाहता होगा" के तह़्त मुफ़्ती साह़िब लिखते हैं :) या'नी अल्लाह तआ़ला इस जुर्म की सज़ा में उसे ऐसी जगह ज़लील करेगा जहां उसे इ़ज़्ज़त की ख़्वाहिश होगी। ख़याल रहे कि येह अह़काम मुसलमान के लिये हैं। कुफ़्फ़ार, मुर्तद्दीन, बे दीन लोगों की अल्लाह तआ़ला के हां कोई इ़ज़्ज़त नहीं उन की बे दीनी ज़ाहिर करना इ़बादत है। ग़रज़ कि كَمَا تَدِيْنُ تُدَانُ जैसा करोगे वैसा भरोगे। كَرْدَنِیْ خَوِیْش آمَدَنِیْ پِیْش मुसलमान भाई की इ़ज़्ज़त करो अपनी इ़ज़्ज़त करा लो, उसे ज़लील करो अपने को ज़लील करा लो। जगह आ़म है दुन्या में हो या आख़िरत में जहां भी उसे मदद की ज़रूरत होगी रब तआ़ला उस की मदद फ़रमाएगा, सिर्फ़ एक बार नहीं बल्कि हमेशा। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/569)

گَنْدَمْ اَزْ گَنْدَمْ بِرُوْیَدْ جَوْزِجَوْ! اَزْمُکَافَاتِ عَمَلْ غَافِلْ مَشَو

*(**तर्जमा :** गन्दुम से गन्दुम और जव से जव उगते हैं मुकाफ़ाते अ़मल से ग़ाफ़िल मत हो)*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दूसरों के साथ अच्छा बरताव कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! हमें चाहिये कि किसी मुसलमान को तक्लीफ़ न दें, उस की चीज़ न चुराएं, उसे धोका न दें, उस पर झूटा इल्ज़ाम न लगाएं, उस का क़र्ज़ न दबाएं, उस की ज़मीन पर क़ब्ज़ा न

www.dawateislami.net

करें, उस की घरेलू ज़िन्दगी में ज़हर न घोले, बद गुमानियां न फैलाएं, किसी का दिल न दुखाएं, पीठ पीछे उस की बुराइयां न करें, उस का मज़ाक़ उड़ा कर उस की इ़ज़्ज़त का जनाज़ा न निकालें, साज़िशें कर के उस की तरक़्क़ी में रोड़े न अटकाएं और उस की बुराइयां लोगों में फैला कर बदनाम न करें क्यूंकि जो आज हम किसी के साथ करेंगे कल हमारे साथ भी वोही कुछ हो सकता है। इस के बर अ़क्स अगर हम किसी की इ़ज़्ज़त का तह़फ़्फ़ुज़ करेंगे, उस के माल में ख़ियानत नहीं करेंगे, उसे धोका नहीं देंगे, उस से सच बोलेंगे, उस की ग़ीबत नहीं करेंगे, उस के बारे में हुस्ने ज़न रखेंगे, उस की ख़ैर ख़्वाही करेंगे तो हमें भी भलाई की उम्मीद रखनी चाहिये। "**जैसी करनी वैसी भरनी**"[1] रिसाले में इसी उ़न्वान पर **54** सबक़ आमोज़ ह़िकायात मअ़ मुख़्तसर दर्स पेश की गई हैं, इन्हें ख़ूब तवज्जोह से पढ़िये और "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ" के मदनी मक़्सद को पाने के लिये कोशां हो जाइये।

इस रिसाले को न सिर्फ़ ख़ुद पढ़िये बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों को इस के मुत़ालए़ की तरग़ीब दे कर **सवाबे जारिया** के मुस्तह़िक़ बनिये। **अल्लाह** तआ़ला हमें मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए इस्लाही कुतुब (अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

मदीना

1 .....येह नाम शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی ने अ़त़ा फ़रमाया है।

www.dawateislami.net

﴿2﴾ ज़मीन पर क़ब्ज़ा करने की कोशिश करने वाली अन्धी हो गई

अरवा नामी एक औ़रत ने ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से घर के बा'ज़ हिस्से के मुतअ़ल्लिक़ झगड़ा किया। आप ने इरशाद फ़रमाया : येह ज़मीन इसी को दे दो, मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है :

مَنْ اَخَذَ شِبْرًا مِنَ الْاَرْضِ بِغَیْرِ حَقِّہٖ طُوِّقَہٗ فِی سَبْعِ اَرَضِیْنَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

या'नी जिस शख़्स ने एक बालिश्त ज़मीन भी ना ह़क़ ली क़ियामत के दिन उस के गले में सात ज़मीनों का त़ौक़ डाला जाएगा। इस के बा'द आप ने दुआ़ फ़रमाई :

اَللّٰھُمَّ اِنْ کَانَتْ کَاذِبَۃً فَاَعْمِ بَصَرَھَا وَاجْعَلْ قَبْرَھَا فِی دَارِھَا

या'नी या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर येह झूटी है तो इस को अन्धा कर दे और इस की क़ब्र इसी घर में बना दे। रावी कहते हैं : मैं ने देखा कि वोह औ़रत अन्धी हो चुकी थी, दीवारों को टटोलती फिरती थी और कहती थी : मुझे सईद बिन ज़ैद की बद दुआ़ लग गई है, आख़िरे कार एक दिन घर में चलते हुवे वोह कुंवें में गिर कर मर गई और वोही कुंवां उस की क़ब्र बन गया। (مسلم،کتاب المساقاۃ،باب تحریم الظلم، ص۸۹۶،حدیث:۱۶۱۰)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان लिखते हैं : ज़मीन के सात त़बक़े उपर नीचे हैं सिर्फ़ सात मुल्क नहीं, पहले तो उस ग़ासिब को ज़मीन के सात त़बक़े का त़ौक़ पहनाया जाएगा फिर उसे ज़मीन में धंसाया जाएगा, लिहाज़ा जिन अह़ादीस में है कि उसे ज़मीन में धंसाया जाएगा वोह अह़ादीस इस ह़दीस के ख़िलाफ़ नहीं। अल्लाह तआ़ला उस ग़ासिब की गर्दन

www.dawateislami.net

इतनी लम्बी कर देगा कि इतनी बड़ी हंसली उस में आ जाएगी मा'लूम हुवा कि ज़मीन का ग़सब दूसरे ग़सब से सख़्त तर है।

(मिरआतुल मनाजीह, 4/313)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! फ़ी ज़माना ज़मीनों पर नाजाइज़ क़ब्ज़े के वाक़िआत की कसरत है, अपनी जम्अ़ पूंजी ख़र्च कर के ज़ाती मकान का ख़्वाब आंखों में सजाए कोई शख़्स जब ज़मीन ख़रीदने में कामयाब हो ही जाता है तो उसे येह फ़िक्र सोने नहीं देती कि क़ब्ज़ा ग्रुप से अपनी ज़मीन को महफ़ूज़ किस तरह रखा जाए? एहतियाती तदाबीर अपनाने के बा वुजूद अगर उस की ज़मीन पर क़ब्ज़ा हो जाए तो मिन्नत समाजत करने पर भी बे शर्म क़ब्ज़ा ख़ोरों को उस पर तरस नहीं आता बल्कि उसी की ज़मीन उसे वापस करने के लिये भारी रक़म तलब की जाती है, अगर वोह मज़्लूम शख़्स क़ब्ज़ा छुड़ाने के लिये कोर्ट कचेहरी का दरवाज़ा खट-खटाए तो ऐसे ऐसे ताख़ीरी हर्बे इख़्तियार किये जाते हैं कि ज़मीन का अस्ल मालिक ज़मीन में जा सोता है लेकिन उसे ज़मीन वापस नहीं मिलती। ज़मीनों पर क़ब्ज़ा करने वालों को संभल जाना चाहिये कि आज जिस ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर के वोह ख़ुश हो रहे हैं और मज़्लूम की बद दुआएं ले रहे हैं कल मरने के बा'द येही ज़मीन गले का तौक़ बन कर रुस्वाई का सबब न बन जाए। बसा अवक़ात दुन्या में ही क़ब्ज़ा ग्रुपों का अन्जाम क़त्लो ग़ारत और क़ैद की सूरत में दूसरों को दर्से इ़ब्रत देता है। अगर बिलफ़र्ज़ उन्हें दुन्या में अपने किये की सज़ा न भी मिले तो कल मरने के बा'द उन्हें ज़मीन में ही दफ़्न होना है और बा'दे मर्ग उस हराम व नाजाइज़ फ़े'ल की जो सज़ाएं मिलेगी वोह भी कान खोल कर सुन लें, चुनान्चे,

www.dawateislami.net

(1) सात ज़मीनों तक धंसाया जाएगा

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो ज़मीन का कुछ हिस्सा ना हक़ ले ले उसे क़ियामत के दिन सात ज़मीनों तक धंसाया जाएगा। (بخاری،کتاب المظالم،باب اثم۔الخ،۲/۱۲۹،حدیث:۲۴۵۴)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : येह अ़ज़ाब तो क़ियामत के दिन होगा बा'द में दोज़ख़ का अ़ज़ाब उस के इ़लावा है क्यूंकि हुक़ूक़ुल इ़बाद में बड़ा फ़र्क़ है कि और चीज़ें फ़ानी हैं, ज़मीन पुश्त हा पुश्त तक बाक़ी रहती है, इस की सज़ा भी ज़ियादा। लमआ़त में फ़रमाया गया कि बा'ज़ ग़ासिबीने ज़मीन को धंसाने की सज़ा दी जाएगी और बा'ज़ के गले में (ज़मीन) तौ़क़ बना कर डाली जाएगी लिहाज़ा येह ह़दीस तौ़क़ वाली ह़दीस के ख़िलाफ़ नहीं। (लमआ़त) और हो सकता है कि एक ही ग़ासिब को दो वक़्त में येह दो अ़ज़ाब हों। (मिरआतुल मनाजीह़, 4/323)

(2) तौ़क़ गले में डाला जाएगा

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स ज़ुल्मन बालिश्त भर ज़मीन ले ले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे इस बात का पाबन्द करेगा कि वोह उस ज़मीन को सात

www.dawateislami.net

ज़मीनों की तह तक खोदे फिर क़ियामत के दिन उस का तौक़ पहनाएगा हत्ता कि लोगों के दरमियान फ़ैसला कर दिया जाए।

(مسنداحمد،حدیث یعلی بن مرۃ،٦/١٨٠،حدیث:١٧٥٨٢)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत लिखते हैं : येह ग़ासिबे ज़मीन का तीसरा अज़ाब है या एक ही शख़्स को येह तीनों अज़ाब तीन वक़्त में दिये जाएंगे या किसी को वोह गुज़श्ता अज़ाब और किसी को येह या'नी येह शख़्स ख़ुद सात तह ज़मीन तक बोरिंग (Boring) करे और ख़ुद ही अपने गले में तौक़ बना कर पहने फिरे।

(मिरआतुल मनाजीह, 4/324)

(3) मिट्टी उठा कर मैदाने हश्र में लाए

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने ना हक़ ज़मीन ली क़ियामत के दिन उसे येह तक्लीफ़ दी जाएगी कि उस की मिट्टी उठा कर मैदाने हश्र में लाए।

(مسند احمد،حدیث یعلی بن مرۃ،٦/١٧٧،حدیث:١٧٥٦٩)

(4) फ़र्ज़ क़बूल होते हैं न नफ़्ल

एक हदीस में है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो थोड़ी मिक़्दार ज़मीन भी नाजाइज़ तौर पर ले ले तो सातों ज़मीनों का तौक़ उस के गले में डाला जाएगा, न उस का फ़र्ज़ क़बूल होगा न नफ़्ल। (مسند ابی یعلی،١٠/٣١٥، حدیث:٧٤٠)

www.dawateislami.net

गले में बीस पच्चीस सेर मिट्टी डाल कर देख लो

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ज़मीन पर क़ब्ज़ा करने वाले को झंझोड़ते हुवे फ़तावा रज़विय्या जिल्द 19 सफ़ह़ा 665 पर लिखते हैं : अल्लाह क़ह्हारो जब्बार के ग़ज़ब से डरे, ज़रा मन दो मन नहीं बीस पच्चीस ही सेर मिट्टी के ढेले गले में बांध कर घड़ी दो घड़ी लिये फिरे, उस वक़्त क़ियास करे कि इस ज़ुल्मे शदीद से बाज़ आना आसान है या ज़मीन के सातों त़बक़ों तक खोद कर क़ियामत के दिन तमाम जहान का ह़िसाब पूरा होने तक गले में مَعَاذَاللّٰه येह करोड़ों मन का त़ौक़ पड़ना और सातवीं ज़मीन तक धंसा दिया जाना, والعیاذباللّٰہ تعالٰی، واللّٰہ تعالٰی اعلم । (फ़तावा रज़विय्या, 19/665)

हमेशा हाथ भलाई के वासित़े उठें
बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 76)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿3﴾ झूटा इल्ज़ाम लगाने की सज़ा

एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुत़र्रिफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر पर झूटा इल्ज़ाम लगाया तो आप ने इरशाद फ़रमाया : अगर तुम झूटे हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें जल्दी मौत अ़त़ा फ़रमाए, आप की ज़बान से इन अल्फ़ाज़ का निकलना था कि उस शख़्स की मौत वाक़ेअ़ हो गई । (جامع العلوم والحکم،ص٤٥٧)

www.dawateislami.net

﴾4﴿ बोहतान लगाने की सज़ा

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर एक शख़्स ने तीन झूटे इल्ज़ामात लगाए : (1) येह लश्करे इस्लाम के साथ जिहाद में शरीक नहीं होते (2) माले ग़नीमत बराबर तक़्सीम नहीं करते (3) मुक़द्दमात का फ़ैसला करने में अ़द्ल से काम नहीं लेते। येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : सुनो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं उस के ख़िलाफ़ तीन दुआ़एं करता हूं : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर तेरा येह बन्दा झूटा है, दिखाने और सुनाने के लिये खड़ा हुवा है तो (1) उस की उ़म्र दराज़ फ़रमा दे (2) उस के फ़क़्र में इज़ाफ़ा फ़रमा दे और (3) उसे फ़ितनों में मुब्तला फ़रमा। जब कोई उस से उस का ह़ाल पूछता तो वोह कहा करता था : मैं क्या बताऊं ? मैं वोह बूढ़ा हूं जो फ़ितनों में मुब्तला हूं क्यूंकि मुझ को ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बद दुआ़ लग गई है। हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर ताबेई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है : उस दुआ़ का मैं ने येह असर देखा कि "अबू सा'दह" नामी वोह शख़्स इस क़दर बूढ़ा हो चुका था कि बुढ़ापे की वज्ह से उस की दोनों भवें उस की दोनों आंखों पर लटक पड़ी थीं, वोह दर बदर भीक मांग कर इन्तिहाई फ़क़ीरी और मोह़ताजी की ज़िन्दगी बसर करता था और इस बुढ़ापे में भी वोह राह चलती हुई जवान लड़कियों को छेड़ता और उन के बदन में चुटकियां भरता रहता था।

(بخاری،کتاب الاذان،باب وجوب القرأة۔الخ، ١/ ٢٦٦، حدیث:٧٥٥)

www.dawateislami.net

इस हिकायत से लोगों पर झूटे इल्ज़ाम लगाने के आ़दी अफ़राद को इ़ब्रत हासिल करनी चाहिये कि जो मौक़अ़ की नज़ाकत से फ़ाइदा उठाते हुवे दूसरों पर झूटे इल्ज़ाम लगाना शुरूअ़ कर देते हैं, न उस के मन्सब का लिहाज़ रखते हैं न रुत्बे का ख़याल, शायद ऐसा करने वालों के दिलो दिमाग़ में एक ही बात समाई होती है कि "हम भी मुंह में ज़बान रखते हैं" उन्हें डरना चाहिये कि हमारे साथ भी इसी त़रह़ मुकाफ़ाते अ़मल हो सकता है जैसा उस बूढ़े के साथ हुवा, तोहमत धरने वाले को आख़िरत में जो सज़ा मिलेगी उसे सुन कर ख़ाइफ़ीन के बदन में झुरझुरी आ जाती है, चुनान्चे,

दोज़ख़ियों की पीप में रहना पड़ेगा

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो किसी मुसलमान की बुराई बयान करे जो उस में नहीं पाई जाती तो उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक रद-ग़तल ख़बाल में रखेगा जब तक कि वोह अपनी कही हुई बात से न निकल आए।

(ابوداؤد،کتاب الاقضیۃ،باب فیمن یعین علی خصومۃ ..الخ،۳/ ۴۲۷، حدیث: ۳۵۹۷)

रद-ग़तल ख़बाल जहन्नम में एक जगह है जहां जहन्नमियों का ख़ून और पीप जम्अ़ होगा। (मिरआतुल मनाजीह़, 5/313)

तौबा ज़रूरी है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1199 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" (जिल्द 3)

www.dawateislami.net

हिस्सा 16 में सदरुश्शरीआ, बदरुत्तरीक़ा हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **बोहतान** की सूरत में तौबा करना और मुआफ़ी मांगना ज़रूरी है बल्कि जिन के सामने **बोहतान** बांधा है उन के पास जा कर येह कहना ज़रूर है कि मैं ने झूट कहा था जो फुलां पर मैं ने बोहतान बांधा था। (बहारे शरीअ़त, 3/538)

ह़सद, वा'दा ख़िलाफ़ी, झूट, चुग़ली, ग़ीबतो तोहमत
मुझे इन सब गुनाहों से हो नफ़रत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 332)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾5﴿ बीवी को शोहर के ख़िलाफ़ भड़काने वाली अन्धी हो गई

एक औ़रत ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی की ज़ौजा को आप के ख़िलाफ़ भड़का दिया था, आप ने उस औ़रत की बीनाई ज़ाइल होने की दुआ़ फ़रमाई तो वोह उसी वक़्त अन्धी हो गई। फिर वोह आप की ख़िदमत में आ कर फ़रयाद करने लगी और आप से दुआ़ की दरख़्वास्त की। आप को उस के ह़ाल पर रह़्म आ गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ फ़रमाई तो उस की बीनाई लौट आई और आप की ज़ौजा भी वापस आ गई। (جامع العلوم والحکم،ص ٤٥٧)

औ़रत को उस के ख़ावन्द के ख़िलाफ़ उभारने वाला हम से नहीं

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَیْسَ مِنَّا مَنْ خَبَّبَ اِمْرَاَۃً عَلٰی زَوْجِھَا اَوْعَبْدًا عَلٰی سَیِّدِہٖ

www.dawateislami.net

या'नी जो औरत को उस के ख़ावन्द या किसी गुलाम को उस के आक़ा के ख़िलाफ़ उभारे वोह हम से नहीं।

(ابوداؤد، کتاب الطلاق،باب فیمن خبب ـالخ، ۳۶۹/۲، حدیث: ۲۱۷۵)

दो दिलों को जोड़ने की कोशिश करो

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी हमारी जमाअ़त से या हमारे त़रीक़े वालों से या हमारे प्यारों से नहीं या हम उस से बेज़ार हैं वोह हमारे मक़्बूल लोगों में से नहीं, येह मत़लब नहीं कि वोह हमारी उम्मत या हमारी मिल्लत से नहीं क्यूंकि गुनाह से इन्सान काफ़िर नहीं होता। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/560) मुफ़्ती साह़िब इस ह़दीस के तह़्त लिखते हैं : ख़ावन्द बीवी में फ़साद डालने की बहुत सूरतें हैं : औरत से ख़ावन्द की बुराइयां बयान करे, दूसरे मर्दों की ख़ूबियां ज़ाहिर करे क्यूंकि औरत का दिल कच्ची शीशी की त़रह़ कमज़ोर होता है या उन में इख़्तिलाफ़ डालने के लिये जादू ता'वीज़ गन्डे करे सब ह़राम है, और गुलाम या लौंडी की बिगाड़ने के मा'ना येह हैं कि उसे भाग जाने पर आमादा करे, अगर वोह ख़ुद भागना चाहें तो उन की इमदाद करे, बहर ह़ाल दो दिलों को जोड़ने की कोशिश करो तोड़ो ना। (मिरआतुल मनाजीह़, 5/101)

تُو برائے وَصل کَردن آمدی　　نے برائے فَصل کردن آمدی

(या'नी तू जोड़ पैदा करने के लिये आया है, तोड़ पैदा करने के लिये नहीं आया)

www.dawateislami.net

तू कितना अच्छा है !!!

जो लोग औरत को भड़काते शोहर के ख़िलाफ़ उभारते हैं वोह शैतान के प्यारे हैं, हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरवरे आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : शैतान पानी पर अपना तख़्त बिछाता है, फिर अपने लश्कर भेजता है। उन लश्करों में शैतान के ज़ियादा क़रीब उस का दरजा होता है जो सब से ज़ियादा फ़ितना बाज़ होता है। उस का एक लश्कर वापस आ कर बताता है कि मैं ने फुलां फ़ितना बरपा किया तो शैतान कहता है : तू ने कुछ भी नहीं किया। फिर एक और लश्कर आता है और कहता है : मैं ने एक आदमी को उस वक़्त तक नहीं छोड़ा जब तक उस के और उस की बीवी के दरमियान जुदाई नहीं डाल दी। येह सुन कर शैतान उसे अपने क़रीब कर लेता है और कहता है : तू कितना अच्छा है, और अपने साथ चिमटा लेता है। (مسلم،کتاب صفة القیامة۔الخ،باب تحریش الشیطان۔۔۔الخ،ص ۱۵۱۱، حدیث: ۲۸۱۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿6﴾ लोगों को सताने की सज़ा

एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की मजलिस में आ कर लोगों को तक्लीफ़ दिया करता था, जब उस की शरारतों का सिलसिला हद से बढ़ने लगा तो आप ने दुआ फ़रमाई : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू इस शख़्स की ईज़ा रसानी से ख़ूब वाक़िफ़ है, तू जिस तरह चाहे हमें इस के मुआमले में किफ़ायत फ़रमा। उसी वक़्त

www.dawateislami.net

वोह शख़्स, खड़े खड़े गिर कर मर गया और उस की लाश चारपाई पर रख कर उस के घर ले जाई गई। (جامع العلوم والحكم،ص٤٥٧)

मुसलमानों को तक्लीफ़ देने वालों को ख़बरदार हो जाना चाहिये कि सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : مَنْ اٰذٰى مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِىْ وَمَنْ اٰذَانِىْ فَقَدْ اٰذَى اللّٰه (या'नी) जिस ने (बिला वज्हे शरई) किसी मुसलमान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط،٢/٣٨٧، حديث: ٣٦٠٧) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ईज़ा देने वालों के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 22 सूरतुल अह्ज़ाब आयत 57 में इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۵۷﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक जो ईज़ा देते हैं* **अल्लाह** *और उस के रसूल को उन पर* **अल्लाह** *की ला'नत है दुन्या और आख़िरत में और* **अल्लाह** *ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।*

मुआफ़ी मांग लीजिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर आप कभी किसी मुसलमान की बिला वज्हे शरई दिल आज़ारी कर बैठे हैं तो आप का चाहे उस से कैसा ही क़रीबी रिश्ता है, बड़े भाई हैं, वालिद हैं, शोहर हैं, सुसर हैं या कितने ही बड़े रुत्बे के मालिक हैं, चाहे सद्र हैं या वज़ीर हैं, उस्ताज़ हैं या पीर हैं, मुअज़्ज़िन हैं या इमाम व ख़तीब हैं जो कुछ भी हैं

www.dawateislami.net

बिग़ैर शरमाए तौबा भी कीजिये और उस बन्दे से मुआ़फ़ी मांग कर उस को राज़ी भी कर लीजिये वरना जहन्नम का हौलनाक अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾7﴿ ठट्ठा मस्ख़री कर के सताने वाले की सज़ा

एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद ह़बीब अ़जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से अक्सर हंसी मज़ाक़ और तफ़रीह़ कर के आप को तंग करता था, आप ने दुआ़ फ़रमाई तो वोह बरस के मरज़ में मुब्तला हो गया। (جامع العلوم والحكم،ص٤٥٨)

लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वाले का अन्जाम

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बिला शुबा लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वाले के लिये जन्नत का दरवाज़ा खोल कर उसे बुलाया जाएगा : आओ, क़रीब आओ, जब वोह आएगा तो दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा, इसी त़रह़ कई बार किया जाएगा यहां तक कि जब उस के लिये फिर दरवाज़ा खोल कर उसे बुलाया जाएगा : आओ आओ क़रीब आओ, तो वोह ना उम्मीदी और मायूसी के मारे नहीं आएगा।

(شعب الايمان،باب فی تحريم اعراض الناس،فصل فيما ورد من الاخبار۔الخ، ٥/٣١٠،حديث: ٦٧٥٧)

मज़ाक़ में भी डराने से रोका

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी लैला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का बयान है कि वोह ह़ज़रते रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

के साथ सफ़र में थे, इस दौरान उन में से एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सो गए तो एक दूसरे सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के पास रखी अपनी एक रस्सी लेने गए, जिस से वोह घबरा गए (या'नी उस सोने वाले के पास रस्सी थी या उस जाने वाले के पास थी उस ने येह रस्सी सांप की त़रह़ उस पर डाली वोह सोने वाले उसे सांप समझ कर डर गए और लोग हंस पड़े[1]) तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि दूसरे मुसलमान को डराए।

(ابوداؤد،کتاب الادب،باب من یاخذ...الخ،۳۹۱/٤، حدیث: ٥٠٠٤)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : इस फ़रमाने आ़ली का मक़्सद येह है कि हंसी मज़ाक़ में किसी को डराना जाइज़ नहीं कि कभी उस से डरने वाला मर जाता है या बीमार पड़ जाता है, ख़ुश त़बई वोह चाहिये जिस से सब का दिल ख़ुश हो जाए किसी को तक्लीफ़ न पहुंचे। इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि ऐसी दिल्लगी हंसी किसी से करनी जिस से उस को तक्लीफ़ पहुंचे मसलन किसी को बे वुक़ूफ़ बनाना उस के चपत लगाना वग़ैरा ह़राम है। (मिरआतुल मनाजीह़, 5/270)

भाइयों का दिल दुखाना छोड़ दो

और तमस्ख़ुर भी उड़ाना छोड़ दो

(वसाइले बख़्शिश, स.713)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

مدینہ

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, 5/270

www.dawateislami.net

﴾8﴿ मश्कीज़ा क्या है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : एक मरतबा दौराने सफ़र मेरा गुज़र ज़मानए जाहिलिय्यत के क़ब्रिस्तान से हुवा । यकायक एक **मुर्दा क़ब्र से बाहर निकला**, उस की गर्दन में आग की ज़न्जीर बंधी हुई थी, मेरे पास पानी का एक बरतन था । जब उस ने मुझे देखा तो कहने लगा : "ऐ अ़ब्दल्लाह ! मुझे थोड़ा सा पानी पिला दो !" मैं ने दिल में कहा : "उस ने मेरा नाम ले कर मुझे पुकारा है या तो येह मुझे जानता है या अ़रबों के त़रीक़े के मुत़ाबिक़ "अ़ब्दुल्लाह" कह कर पुकार रहा है।" फिर अचानक उसी क़ब्र से एक और शख़्स निकला, उस ने मुझ से कहा : "ऐ अ़ब्दल्लाह ! इस ना फ़रमान को हरगिज़ पानी न पिलाना, येह काफ़िर है।" दूसरा शख़्स पहले को घसीट कर वापस क़ब्र में ले गया। मैं ने वोह रात एक बुढ़िया के घर गुज़ारी, उस के घर के क़रीब एक क़ब्र थी, मैं ने क़ब्र से येह आवाज़ सुनी بَوْلٌ وَّمَا بَوْلٌ؟شَنٌّ وَّمَا شَنٌّ؟ या'नी "पेशाब-पेशाब क्या है ? मश्कीज़ा-मश्कीज़ा क्या है ?" इस आवाज़ के मुतअ़ल्लिक़ बुढ़िया से पूछा तो उस ने कहा : येह मेरे शोहर की क़ब्र है, इसे दो ख़त़ाओं की सज़ा मिल रही है । पेशाब करते वक़्त **येह पेशाब के छींटों से नहीं बचता था**, मैं इस से कहती कि तुझ पर अफ़्सोस ! जब ऊंट पेशाब करता है तो वोह भी अपने पाउं कुशादा कर के छींटों से बचता है, लेकिन तू इस मुआ़मले में बिल्कुल भी एह़तियात़ नहीं करता, मेरा शोहर मेरी इन बातों पर कोई तवज्जोह न देता, फिर येह मर गया तो

www.dawateislami.net

मरने के बा'द से आज तक इस की क़ब्र से रोज़ाना इसी त़रह़ की आवाज़ें आती हैं। मैं ने पूछा : شَنٌ وَّمَا شَنٌ ؟ या'नी "मश्कीज़ा-मश्कीज़ा क्या है ?" की आवाज़ आने का क्या मक़्सद है ? बुढ़िया ने कहा : एक मरतबा इस के पास एक प्यासा शख़्स आया, उस ने पानी मांगा तो (इस ने उस को परेशान करने के लिये ख़ाली मश्कीज़े की त़रफ़ इशारा करते हुवे) कहा : जाओ ! उस मश्कीज़े से पानी पी लो, वोह प्यासा बेताबाना मश्कीज़े की त़रफ़ लपका, जब उठाया तो उसे ख़ाली पाया, प्यास की शिद्दत से वोह बेहोश हो कर गिर गया और उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई। फिर जब से मेरा शोहर मरा है आज तक रोज़ाना इस की क़ब्र से आवाज़ आती है شَنٌ وَّمَا شَنٌ ؟ या'नी "मश्कीज़ा-मश्कीज़ा क्या है ?" (उ़यूनुल ह़िकायात, स. 307)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

झूट गुनाहों की त़रफ़ ले जाता है

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : तुम पर **सच** बोलना लाज़िम है क्यूंकि **सच** नेकी की त़रफ़ रहनुमाई करता है और नेकी जन्नत का रास्ता दिखाती है, आदमी हमेशा सच बोलता रहता है और सच की जुस्तजू में रहता है यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सिद्दीक़ (या'नी बहुत सच्चा) लिख दिया जाता है और **झूट** से बचो ! क्यूंकि **झूट** गुनाहों की त़रफ़ ले जाता है और गुनाह जहन्नम में पहुंचा देते हैं, आदमी हमेशा **झूट** बोलता रहता है और उस की जुस्तजू में रहता है यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

के नज़दीक **कज़्ज़ाब** (या'नी बहुत बड़ा झूटा) लिख दिया जाता है।

(ترمذی،کتاب البر والصلة،باب ما جاء فی الصدق والکذب،۳/ ۳۹۱، حدیث: ۱۹۷۸)

सच्चे आदमी की बात दुश्मन के बारे में भी क़बूल की जाती है

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़नफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने बेटे से इरशाद फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! सच की फ़ज़ीलत के लिये इतनी बात काफ़ी है कि सच्चे आदमी की बात उस के दुश्मन के बारे में भी क़बूल की जाती है जब कि झूट के बुरा होने के लिये येह बात काफ़ी है कि झूटे शख़्स की बात न तो उस के दोस्त के बारे में क़बूल की जाती है और न दुश्मन के बारे में। (التذکرة الحمدونیة الباب الثامن فی الصدق والکذب،۳/٦٤)

ग़ीबत से और तोहमतो चुग़ली से दूर रख
ख़ूगर तू सच का दे बना या रब्बे मुस्त़फ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 132)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

किसी की मुसीबत पर ख़ुशी का इज़हार

ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम अपने भाई की मुसीबत पर ख़ुशी का इज़हार मत करो, वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़्म कर देगा और तुझे मुब्तला कर देगा।

(ترمذی ، کتاب صفة القیامة ، باب (ت : ۱۱۹) ، ٤/ ۲۲۷ ، حدیث : ۲۵۱٤)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी किसी

www.dawateislami.net

मुसलमान को दीनी या दुन्यावी आफ़त में मुब्तला देख कर उस पर ख़ुशी में त़ा'न न करो ! बा'ज़ दफ़्आ ख़ुशी में भी किसी पर لَاحَوْل पढ़ी जाती है । मुफ़्ती साहिब मज़ीद फ़रमाते हैं : अगर मलामत करना उस की फ़हमाइश के लिये हो तब जाइज़ है जब कि इस त़रीक़े से उस की इस्लाह़ हो सके। मज़ीद फ़रमाते हैं : येह है मुसलमान की आफ़त पर ख़ुशी मनाने का अन्जाम ! कि ख़ुशी मनाने वाला ख़ुद गिरिफ़्तार हो जाता है, बारहा का आज़मूदा । हमेशा ख़ुदा से ख़ौफ़ करना चाहिये । (मिरआतुल मनाजीह, 6/474) मश्हूर है : ''مَنْ ضَحِكَ ضُحِكَ'' या'नी जो दूसरे पर हंसता है उस पर भी हंसा जाता है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾9﴿ बदगोई की सज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद ह़बीब अ़जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى एक दफ़्आ ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار के पास मौजूद थे कि इतने में एक शख़्स वहां आ धमका और ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار पर कुछ दराहिम के मुआ़मले में सख़्ती करने लगा जो उन्हों ने तक़्सीम फ़रमा दिये थे । जब उस की बदगोई का सिलसिला न रुका तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद ह़बीब अ़जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में दस्ते दुआ़ दराज़ किया और अ़र्ज़ की : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस शख़्स ने हमें तेरे ज़िक्र से रोक दिया है, तू जिस त़रह़ चाहे इस के मुआ़मले में हम पर रह़्म फ़रमा । उसी वक़्त वोह शख़्स मुंह के बल ज़मीन पर गिरा और उस का दम निकल गया । (جامع العلوم والحكم،ص٤٥٨)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जारेहाना और तन्ज़िया अन्दाज़े गुफ़्तगू इख़्तियार करते वक़्त हम इस बात की कुछ परवाह नहीं करते कि हमारी ज़बान की "तेज़ धार" से न जाने कितने मुसलमानों के दिल घायल हो जाते होंगे ! किस से किस वक़्त किस अन्दाज़ में बात करनी है हमें शायद मा'लूम ही नहीं, याद रखिये कि तीरो तल्वार के घाव तो कुछ अ़र्से में मुन-दमिल हो जाते हैं लेकिन ज़बान से लगने वाला ज़ख़्म बा'ज़ अवक़ात मरते दम तक नहीं भरता किसी अ़रबी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

جَرَاحَاتُ السِّنَانِ لَهَا الْتِيَام وَلَايَلْتَامُ مَاجَرَحَ اللِّسَانُ

(या'नी नेज़ों के ज़ख़्म तो भर जाते हैं ज़बान के घाव नहीं भरते)

बहर हाल हमें बात करने की भी तर्बिय्यत लेनी होगी और इस की एह़तियातें भी सीखनी होंगी, जी हां अन्दाज़े गुफ़्तगू को यक्सर बदल कर इस पर आ़जिज़ी व नर्मी का पानी चढ़ाना और हुस्ने अख़्लाक़ से आरास्ता करना होगा। यक़ीन मानिये आज हमारी ग़ालिब अक्सरिय्यत को शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ बात चीत करना ही नहीं आती, मा'मूली सा ख़िलाफ़े मिज़ाज मुआ़मला होते ही अच्छा ख़ासा मज़हबी वज़्अ़ क़त़्अ़ का आदमी भी एक दम जारेहाना अन्दाज़ पर उतर आता है ! एक ग़ीबत ही नहीं, तोहमत, चुग़ली, बदगुमानी, झूटा मुबालग़ा, दिल आज़ारी और ईज़ाए मुस्लिम के तअ़ल्लुक़ से बहुत सारी चीज़ें आज कल की जाने वाली अक्सर गुफ़्तगू का ह़िस्सा होती हैं । लिहाज़ा दिल बरदाश्ता हुवे बिग़ैर अव्वलन इस बात को तस्लीम कर लीजिये कि हमें दुरुस्त बोलना ही नहीं आता फिर हम मुसलसल

www.dawateislami.net

जिद्दो जह्द करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शरीअ़तो सुन्नत के मुत़ाबिक़ बात करना सीख ही जाएंगे।

नर्मी की फ़ज़ीलत

मुस्लिम शरीफ़ में है : जिस चीज़ में नर्मी होती है उसे ज़ीनत बख़्शाती है और जिस चीज़ से जुदा कर ली जाती है उसे ऐ़बदार बना देती है। (مسلم ،کتاب البر والصلة،باب فضل الرفق،ص١٣٩٨،حدیث:٢٥٩٤)

मिज़ाज में नर्मी पैदा करने का नुस्ख़ा

बकरी (बकरा) और मेंढे की खाल पर बैठने और पहनने से मिज़ाज में नर्मी और इन्किसारी पैदा होती है।

(बहारे शरीअ़त, 1/403 मुलख़्ख़सन)

है फ़लाह़ो कामरानी नर्मी व आसानी में

हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾10﴿ कल का फ़क़ीर आज का अमीर

एक शख़्स अपनी बीवी के साथ भुनी हुई मुर्ग़ी खा रहा था कि इतने में दरवाज़े पर एक साइल आ गया। उस शख़्स ने बाहर निकल कर साइल को झिड़क दिया जिस पर साइल वापस चला गया। इस वाक़िए़ के बा'द वोह शख़्स मोह़ताजी में मुब्तला हो गया, उस की दौलत जाती रही और उस ने अपनी बीवी को भी त़लाक़ दे दी जिस ने एक और शख़्स से शादी कर ली। येह औ़रत एक दिन अपने उस दूसरे

www.dawateislami.net

शोहर के साथ खाना खा रही थी और उन के सामने भुनी हुई मुर्ग़ी रखी थी कि एक साइल ने दरवाज़े पर सदा लगाई। शोहर ने अपनी बीवी से कहा कि येह मुर्ग़ी उस मांगने वाले को दे दो। बीवी ने मुर्ग़ी उस साइल के ह़वाले की और रोती हुई वापस आई। जब शोहर ने रोने की वज्ह दरयाफ़्त की तो उस ने बताया कि येह साइल उस का साबिक़ा शोहर है और फिर येह वाक़िआ़ बयान किया कि उस के पहले शोहर ने एक साइल को झिड़क कर वापस कर दिया था। औ़रत के दूसरे शोहर ने येह सुन कर कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ही वोह साइल हूं। (المستطرف،۱/۲۰) गर्दिशे ज़माना का एक अ़जीब नज़्ज़ारा येह था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस बद मस्त मालदार की हर चीज़, माल, कोठी, ह़त्ता कि बीवी भी छीन कर उस शख़्स को दे दिया जो फ़क़ीर बन कर उस के घर पर आया था और चन्द साल बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स को फ़क़ीर बना कर उसी के दर पर ले आया। वाक़ेई दौलत पर ग़ुरूर नहीं करना चाहिये कि येह हिरती फिरती छाऊं है। आज इस के पास तो कल उस के पास ! तारीख़ ऐसे सबक़ आमोज़ वाक़िआ़त से भरी पड़ी है अब येह इन्सान का काम है कि इन से इ़ब्रत पकड़े।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿11﴾ बदकारी की तोहमत लगाने का अन्जाम

मदीनए मुनव्वरा में एक नेक परहेज़गार औ़रत का इन्तिक़ाल हुवा, ग़ुस्ल देने वाली औ़रत ने अपनी किसी दुश्मनी की वज्ह से उस नेक औ़रत की पर्दे की जगह पर हाथ रख कर कहा :

www.dawateislami.net

येह किस क़दर बदकार थी । फ़ौरन ही ग़ुस्ल देने वाली औ़रत का हाथ वहां ऐसा चिमट गया कि हज़ारों कोशिशों के बा वुजूद जुदा नहीं हुवा । तमाम उ़लमाए मदीना इस का सबब और तदबीर मा'लूम करने से आ़जिज़ रहे लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने कश्फ़ व करामत से मा'लूम कर लिया और फ़रमाया : इस ग़ुस्ल देने वाली औ़रत को ह़द्दे क़ज़्फ़ (या'नी वोह सज़ा जो शरीअ़त ने ज़िना की तोहमत लगाने वाले के लिये मुक़र्रर की है) लगाई जाए, चुनान्चे, आप के इरशाद के मुत़ाबिक़ जब उस ग़ुस्ल देने वाली को 80 कोड़े लगाए गए तो ख़ुद ब ख़ुद उस का हाथ मरने वाली औ़रत से जुदा हो गया और सब के दिलों में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की इमामतो करामत का नूर जगमगाने लगा । (بستان المحدثین، ص۱۶)

तुम्हारे ऐब खुल जाएंगे

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो अपने मुसलमान भाई के ऐ़ब तलाश करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के ऐ़ब फ़ाश फ़रमा देगा और जिस के ऐ़ब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़ाश करे वोह मकान में होते हुवे भी ज़लीलो रुस्वा हो जाएगा ।

(ترمذی ، کتاب البر والصلة ، باب ما جاء فی تعظیم المومن ، ۳/۴۱۶ ، حدیث : ۲۰۳۹)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : येह क़ानूने क़ुदरत है कि जो किसी को बिला वज्ह बदनाम करेगा क़ुदरत उसे बदनाम कर देगी । (मिरआतुल मनाजीह़, 6/617)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾12﴿ चालीस साल तक इफ़्लास का शिकार रहा

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : मैं ने एक शख़्स को आ़र दिलाते हुवे कहा : "ऐ मुफ़्लिस।" इस के बा'द मैं चालीस साल तक इफ़्लास का शिकार रहा। (صید الخاطر، ص۱۸)

किस वक़्त किस से क्या बोलना है ? काश येह गुर हमें आ जाए तो हमारी ज़िन्दगी पुर सुकून हो जाए, अन्धे को भी अन्धा बोलें तो उसे बुरा लगता है, आंखों वाले को अन्धा कह कर पुकारा जाएगा तो उसे यक़ीनन बुरा लगेगा।

लोगों के बुरे नाम रखना

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा 204 पर लिखते हैं : किसी मुसलमान बल्कि काफ़िर ज़िम्मी को भी बिला ह़ाजते शरइय्या ऐसे अल्फ़ाज़ से पुकारना या ता'बीर करना जिस से उस की दिल शिकनी हो उसे ईज़ा पहुंचे, शरअ़न नाजाइज़ व ह़राम है। अगर्चे बात फ़ी नफ़्सिही सच्ची हो فَاِنَّ كُلَّ حَقٍّ صِدْقٌ وَلَيْسَ كُلُّ صِدْقٍ حَقًّا (हर ह़क़ सच है मगर हर सच ह़क़ नहीं) (फ़तावा रज़विय्या, 23/204) लिहाज़ा जिस का जो नाम हो उस को उसी नाम से पुकारना चाहिये, अपनी त़रफ़ से किसी का उल्टा सीधा नाम मस्लन लम्बू, ठिंगू, कालू वग़ैरा न रखा जाए, उ़मूमन इस त़रह़ के नामों से दिल आज़ारी होती है और वोह उस से चिड़ता भी है लेकिन पुकारने वाला जान बूझ कर बार बार मज़ा लेने के लिये उसे उसी नाम से पुकारता है, ऐसा करने वालों को संभल जाना चाहिये, क्यूंकि रब तआ़ला फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِیْمَانِۚ (پ۲۶، الحجرات:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो क्या ही बुरा नाम है मुसलमान हो कर फ़ासिक़ कहलाना।*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی इस आयत के तह़्त लिखते हैं : (या'नी वोह नाम) जो उन्हें ना गवार मा'लूम हों। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि अगर किसी आदमी ने किसी बुराई से तौबा कर ली हो उस को बा'दे तौबा उस बुराई से आ़र दिलाना भी उस नह्य (या'नी मुमानअ़त के ह़ुक्म) में दाख़िल और ममनूअ़ है। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि किसी मुसलमान को कुत्ता या गधा या सुवर कहना भी इसी में दाख़िल है। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि इस से वोह अल्क़ाब मुराद हैं जिन से मुसलमान की बुराई निकलती हो और उस को ना गवार हो लेकिन ता'रीफ़ के अल्क़ाब जो सच्चे हों ममनूअ़ नहीं जैसे कि ह़ज़रते अबू बक्र का लक़ब अ़तीक़ (जहन्नम से आज़ाद) और ह़ज़रते उ़मर का फ़ारूक़ (ह़क़ और बात़िल में फ़र्क़ करने वाला) और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी का ज़ुन्नूरैन (दो नूरों वाला) और ह़ज़रते अ़ली का अबू तुराब (मिट्टी वाला) और ह़ज़रते ख़ालिद का सैफ़ुल्लाह (**अल्लाह** की तल्वार) (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) और जो अल्क़ाब ब मन्ज़िलए अ़लम (या'नी नाम के मर्तबे में) हो गए और साह़िबे अल्क़ाब को ना गवार नहीं वोह अल्क़ाब भी ममनूअ़ नहीं जैसे कि आ'मश (कमज़ोर निगाह वाला), आ'रज (लंगड़ा)। ("क्या ही बुरा नाम है मुसलमान हो कर फ़ासिक़ कहलाना" के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल लिखते हैं :) तो ऐ मुसलमानो ! किसी मुसलमान की हंसी बना कर या उस को ऐ़ब लगा कर या उस का नाम बिगाड़ कर अपने आप को फ़ासिक़ न कहलाओ। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 950)

www.dawateislami.net

फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं

हज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने किसी शख़्स को उस के नाम के इलावा नाम से बुलाया उस पर फ़िरिश्ते ला'नत करते हैं । (جمع الجوامع،۲۳/۷،حدیث:۲۰۶۱۲) अल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی इस ह़दीसे मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : किसी ऐसे बुरे लक़ब से बुलाना जो उसे बुरा लगे, न कि ऐ बन्दए ख़ुदा ! वग़ैरा अल्फ़ाज़ से । मज़ीद फ़रमाते हैं : फ़िरिश्तों की ला'नत करने से मुराद येह है कि फ़िरिश्ते उस के लिये नेकोकारों के मक़ाम से दूरी की दुआ़ करते हैं । (التیسیر،۴۱۶/۲)

किसी को बे वुक़ूफ़ या उल्लू कहने का हुक्म

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن से **सुवाल** हुवा : जो शख़्स किसी आ़लिम की निस्बत या किसी दूसरे की लफ़्ज़े मर्दूद कहे या यूं कहे कि वोह "बे वुक़ूफ़" है, कुछ नहीं जानता और "उल्लू" है, तो उस शख़्स की निस्बत शरअ़ शरीफ़ क्या हुक्म देगी ? आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **जवाब** दिया : बिला वज्हे शरई किसी मुसलमान को ऐसे अल्फ़ाज़ से याद करना मुसलमान को नाह़क़ ईज़ा देना है और मुसलमान की नाह़क़ ईज़ा शरअ़न ह़राम । रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : مَنْ اٰذٰی مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِیْ وَمَنْ اٰذَانِیْ فَقَدْ اٰذَی اللّٰہ

www.dawateislami.net

رَوَاهُ الطَّبَرَانِیُ فِي الْاَوْسَطِ عَنْ اَنَسٍ رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ بِسَنَدٍ حَسَنٍ जिस ने बिला वज्हे शरई किसी मुसलमान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी। (المعجم الاوسط،۲/۳۸۷،حدیث:۳۶۰۷) फिर उ़लमाए दीने मतीन की शान तो निहायत अरफ़अ़ व आ'ला है उन की जनाब में गुस्ताख़ी करने वाले को ह़दीस में मुनाफ़िक़ फ़रमाया :

ثَلٰثَةٌ لَایَسْتَخِفُّ بِحَقِّهِمْ اِلَّامُنَافِقٌ ذُوالشَّیْبَةِ فِی الْاِسْلَامِ وَذُوالْعِلْمِ وَاِمَامٌ مُقْسِطٌ

رَوَاهُ الطَّبَرَانِیُ فِي الْکَبِیْرِعَنْ اَبِیْ اُمَامَةَ وَاَبُوالشَّیْخِ فِي التَّوْبِیْخِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللّٰہ رضی اللّٰہ تعالٰی عنہم عَنِ النَّبِی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم۔

या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : तीन शख़्स हैं जिन का ह़क़ हल्का न जानेगा मगर मुनाफ़िक़, ﴿एक﴾ इस्लाम में बुढ़ापे वाला ﴿दूसरा﴾ आ़लिम ﴿तीसरा﴾ बादशाहे इस्लाम आ़दिल। (المعجم الکبیر،۸/۲۰۲، حدیث:۷۸۱۹) ऐसा शख़्स शरअ़न लाइक़े ता'ज़ीर है। وَاللّٰہُ سُبْحٰنَہٗ وَتَعَالٰی اَعْلَمُ وَعِلْمُہٗ جَلَّ مَجْدُہٗ اَتَمُّ وَاَحْکَم (फ़तावा रज़विय्या, 13/644)

गुनाहों के अमराज़ से नीम जां हूं
पए मुर्शिदी दे शिफ़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.105)

﴿13﴾ मछली ने अंगूठा काटा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में सज़ा के मुतअ़ल्लिक़ एक और अ़जीबो ग़रीब ह़िकायत मुलाह़ज़ा कीजिये और सज़ा का इन्तिज़ार किये बिग़ैर अपने गुनाहों पर फ़ौरी तौबा कर के आयिन्दा बाज़ रहने का अ़ज़्म कीजिये और जिन गुनाहों की तलाफ़ी ज़रूरी है उस पर भी कमर बांध लीजिये। चुनान्चे, ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन अह़मद

www.dawateislami.net

ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي नक़्ल करते हैं कि किसी बुज़ुर्ग ने एक शख़्स को देखा जिस का बाज़ू कन्धे से काटा हुवा था और वोह आवाज़ लगा रहा था कि जिस ने मुझे देखा वोह हरगिज़ किसी पर ज़ुल्म न करे। मैं ने उस से माजरा पूछा तो वोह कहने लगा : "मेरा मुआ़मला बड़ा अ़जीबो ग़रीब है, मैं बद मआ़शों का साथी था, एक दिन मैं ने एक मछेरे से मछली छीनी और घर की त़रफ़ चल दिया, रास्ते में मछली ने मेरा अंगूठा चबा डाला, जैसे तेसे मैं घर पहुंचा और मछली को एक त़रफ़ डाल दिया। अंगूठे के दर्द और तक्लीफ़ की वज्ह से मैं सारी रात सो न सका। सुब्ह़ हुई, मैं त़बीब के पास गया और उसे अपना सूजा हुवा ज़ख़्मी हाथ दिखाया। उस ने बताया कि अंगूठा काटना पड़ेगा वरना बा'द में सारा हाथ काटना पड़ेगा, चुनान्चे, मैं ने अपना अंगूठा कटवा दिया। फिर एक दिन मेरे हाथ पे चोट आई तो पुराना ज़ख़्म ताज़ा हो गया, मुझे शदीद तक्लीफ़ हो रही थी, मैं त़बीब के पास गया तो उस ने हाथ काटने का कहा, मैं ने कटवा दिया मगर दर्द सारे बाज़ू में फैल गया। मैं सख़्त तक्लीफ़ में था किसी पल चैन न आता था चुनान्चे, पहले कोहनी तक फिर कन्धे तक हाथ कटवाना पड़ा, कुछ लोगों ने मुझ से तक्लीफ़ शुरूअ़ होने का सबब पूछा तो मैं ने उन्हें मछली वाला वाक़िआ़ सुनाया, वोह कहने लगे : "अगर तुम पहले मरह़ले में मछली वाले के पास जा कर उस से मुआ़फ़ी मांग लेते और उस को राज़ी कर लेते तो शायद तुम्हें येह आ'ज़ा कटवाने न पड़ते, अब भी वक़्त है उस शख़्स के पास जाओ और उस को राज़ी करो इस से पहले कि येह तक्लीफ़ पूरे जिस्म में फैल जाए।" मैं ने ब मुश्किल तमाम मछेरे को ढूंड निकाला

www.dawateislami.net

और मुआ़फ़ी मांगने के लिये उस के पाउं में गिर गया। उस ने परेशान हो कर पूछा : तुम कौन हो ? मैं ने कहा : "मैं वोही शख़्स हूं जो तुम से मछली छीन कर ले गया था।" फिर मैं ने उसे सारी तफ़्सील बता कर कटा हुवा हाथ दिखाया तो वोह भी रो दिया और कहने लगा : "मेरे भाई ! मैं ने तुम्हें मुआ़फ़ किया।" मैं ने उसे गवाह बना कर आयिन्दा के लिये किसी पर ज़ुल्म करने से तौबा कर ली। (كتاب الكبائر،ص١٢٧)

मज़्लूम की मदद ज़रूर होती है

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मज़्लूम से फ़रमाता है : मुझे अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम ! बेशक मैं ज़रूर तेरी मदद करूंगा अगर्चे कुछ देर के बा'द। (ترمذی،أحاديث شتی،باب:١٣٢، ٥/٣٤٣،حديث:٣٦٠٩)

मज़्लूम की बद दुआ़ मक़्बूल है

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मज़्लूम की बद दुआ़ से बचो अगर्चे वोह काफ़िर ही हो क्यूंकि उस के सामने कोई हिजाब नहीं होता।

(مسند احمد،مسند انس بن مالك،٤ /٣٠٦،حديث:١٢٥٥١)

शारेहे़ बुख़ारी अ़ल्लामा अबुल ह़सन अ़ली बिन ख़लफ़ क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی शर्हे़ बुख़ारी में लिखते हैं : ज़ुल्म तमाम शरीअ़तों में ह़राम था, ह़दीसे पाक में है : मज़्लूम की दुआ़ रद्द नहीं की जाती अगर्चे वोह काफ़िर ही क्यूं न हो। इस ह़दीस का मा'ना येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

जिस त़रह़ मोमिन पर ज़ुल्म करने से नाराज़ होता है इसी त़रह़ काफ़िर पर ज़ुल्म से भी नाराज़ होता है।

(شرح بخاری لابن بطال،کتاب الزکاۃ،باب اخذ الصدقۃ من الاغنیاء،۳/۵۴۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मज़्लूम जानवर की बद दुआ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? **ज़ुल्म का अन्जाम** किस क़दर भयानक है। इन्सान तो इन्सान जानवर पर भी ज़ुल्म करने की इजाज़त नहीं, मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان मिरक़ात शर्ह़े मिश्कात के ह़वाले से लिखते हैं : मज़्लूम जानवर बल्कि मज़्लूम काफ़िर व फ़ासिक़ की भी दुआ क़बूल होती है अगर्चे मुसलमान मज़्लूम की दुआ ज़ियादा क़बूल है, क्यूंकि मज़्लूम मुज़्त़र व बे क़रार होता है और बे क़रार की दुआ अ़र्श पर क़रार करती है। रब फ़रमाता है : اَمَّنْ یُّجِیْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** या वोह जो लाचार की सुनता है जब उसे पुकारे, (پ۲۰، النمل: ۶۲)। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/300)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾14﴿ हाथ बेकार हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : बनी इस्राईल के एक शख़्स ने एक बछड़े को उस की मां के सामने ज़ब्ह़ किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के हाथ शल फ़रमा

www.dawateislami.net

दिये । एक मरतबा येही शख़्स बैठा हुवा था कि एक परन्दे का बच्चा अचानक घोंसले से गिर पड़ा और अपने वालिदैन को बे बसी से तकने लगा, वालिदैन भी बे बसी से उसे देख रहे थे, येह सब देख कर उस शख़्स को तरस आया और उस ने उस बच्चे को उठा कर घोंसले में रख दिया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के परन्दे के बच्चे पर शफ़्क़त करने की वज्ह से उस पर रह़्म फ़रमाया और उस के हाथ फिर से ठीक हो गए ।

(شعب الایمان ، الخامس و السبعون ، باب فی رحم الصغیر ...الخ ، ۷/ ٤٨٤ ، رقم : ١١٠٨٢)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿15﴾ मख्खी से तक्लीफ़ दूर की तो बीवी भी ठीक हो गई

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल बह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامی फ़रमाते हैं : "मेरी ज़ौजा फ़ातिमा उम्मे अ़ब्दुर्रह़मान के दिल पर वरम आ गया, मुझे बहुत तशवीश हो रही थी, मैं एक ख़ाली रास्ते में तन्हा मौजूद था कि किसी कहने वाले ने कहा : अपने सामने मौजूद सूराख़ में एक मख्खी को मख्खी ख़ोर जानवर से नजात दिला दो ! हम तुम्हारी ज़ौजा को तक्लीफ़ से नजात दे देंगे, मैं ने जा कर सूराख़ देखा तो उस में उंगली जाने की गुन्जाइश नहीं थी, इस लिये मैं ने एक तीली ले कर अन्दर डाली और मख्खी समेत उस जानवर को भी बाहर खींच लिया, वोह जानवर मख्खी की गर्दन पर चिपका हुवा था और मख्खी दर्द से बिलबिला रही थी, मैं ने मख्खी को उस जानवर से नजात दिला दी, उसी वक़्त मेरी ज़ौजा भी ठीक हो गई और उसे तक्लीफ़ से नजात मिल गई । (المنن الکبری ، الباب السابع ، ص٣٠٥)

www.dawateislami.net

﴾16﴿ कीड़े पड़े हुवे कुत्तों का इलाज करते

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद रिफ़ाई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कीड़े पड़े हुवे कुत्तों के पीछे इलाज के लिये चक्कर लगाया करते थे, कई दफ़्अ़ा कुत्ता आप से भाग जाता तो उस के पीछे जाते और फ़रमाते : मैं तो सिर्फ़ तेरा इलाज करना चाहता हूं। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कोढ़ के मरीज़ों के घर जाते, उन के कपड़े धोते, सरों और कपड़ों से जूएं निकालते, खाना ले कर जाते, मिल कर खाते, उन से दुआ़ करवाते, वोह आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को अबुल ईतामे वल मसाकीन कहते। बसा अवक़ात दूसरे शहर में मौजूद किसी फ़क़ीर की बीमारी की ख़बर सुनते तो वहां जा कर उस की बीमार पुर्सी करते और ख़िदमत करते, फिर दो या तीन दिन के बा'द वापस आ जाते, शारेए़ आ़म में इस मक़्सद से खड़े रहते कि अन्धों की रहनुमाई करें, उन बूढ़ों की ख़बर गीरी करते जो बैतुल ख़ला जाने से आ़जिज़ होते और अपने कपड़ों पर ही बोलो बराज़ कर दिया करते थे, उन के कपड़े उतारते, धोते, ख़ुश्क करते, फिर उन्हें पहना देते और उन के पड़ोसियों को उन की ख़बर गीरी की नसीह़त करते। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास एक यतीम लड़का था जिस के मां बाप दोनों ही न थे, वोह दौराने विर्द या मजलिसे वा'ज़ में आप के पास आ जाता और आप से खाने की या खेलने की कोई चीज़ मांगता, आप खड़े होते और वोह चीज़ मुहय्या कर देते, आप के हम अ़स्र मशाइख़ फ़रमाया करते थे कि अह़मद बिन रिफ़ाई (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) को जो मक़ामात ह़ासिल हैं वोह ख़ल्क़ पर कसरते शफ़्क़त की वज्ह से हैं।

(المنن الکبری ، الباب الثانی عشر ، ص۵۰۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾17﴿ फ़क़ीर को धुत्कारा तो खुद फ़क़ीर बन गया

एक शिकस्ता ह़ाल फ़क़ीर ने एक मालदार शख़्स के सामने दस्ते सुवाल दराज़ किया मगर मालदार शख़्स ने फ़रयाद रसी करने के बजाए उल्टा उस पर ज़बान से नेज़ा ज़नी शुरूअ़ कर दी और उसे ख़ूब ज़लील किया, फ़क़ीर का दिल ख़ून ख़ून हो गया और जज़्बात में एक आह भर कर कहा : "तुम्हारे ग़ुस्सा करने की वज्ह शायद येह है कि तुम्हें भीक मांगने की ज़िल्लत का एह़सास नहीं।" येह जुम्ला सुन कर मालदार शख़्स आग बगूला हो गया और फ़क़ीर को ग़ुलाम के ज़रीए धक्के दिलवा कर बाहर निकलवा दिया। ख़ुदा का करना यूं हुवा कि वोह मग़रूर मालदार कुछ अ़र्से बा'द क़ल्लाश हो गया और मोह़ताजी ने उस के आंगन में बसेरा कर लिया। दोस्त, रिश्तेदार और ग़ुलाम व दरबान सब छूट गए और वोह शख़्स सड़क पर आ गया। जिस ग़ुलाम ने फ़क़ीर को अपने आक़ा के हुक्म से धक्के दे कर निकाला था उसे एक नए मालदार आक़ा ने ख़रीद लिया। येह आक़ा बहुत नर्म दिल, फ़रयाद रस और मेहरबान था। ग़रीबों, फ़क़ीरों की इमदाद करने से ज़ियादा उसे किसी चीज़ में ख़ुशी महसूस नहीं होती थी। येही वज्ह थी कि हर वक़्त उस के दरवाज़े पर साइलीन का हुजूम लगा रहता था। एक रात किसी फ़क़ीर ने उस के दरवाज़े पर सदा लगाई, ग़ुलाम ने फ़क़ीर की मदद करने की निय्यत से जैसे ही दरवाज़ा खोला तो उस की चीख़ निकल गई क्यूंकि सामने मौजूद फ़क़ीर कोई और नहीं बल्कि उस का पुराना मग़रूर आक़ा था, अपने पुराने आक़ा की येह ह़ालत देख कर ग़ुलाम आबदीदा हो गया और उस की इमदाद कर के अपने मौजूदा आक़ा के पास चला आया। आक़ा ने जब ग़ुलाम को आज़ुर्दा व

www.dawateislami.net

आबदीदा देखा तो पूछा : क्या किसी ने तुम्हें कोई तक्लीफ़ पहुंचाई है ? येह सुन कर ग़ुलाम ने अपने पुराने आक़ा का सारा ह़ाल उस के गोश गुज़ार कर दिया, सारी कहानी सुनने के बा'द आक़ा बोला : मैं वोही फ़क़ीर हूं जिसे उस ने धक्के दिलवा कर निकलवा दिया था और आज देखो कि वक़्त की काया कैसी पलटी है कि क़ुदरत ने उसे मेरे ही दरवाज़े पर भीक मांगने के लिये ला खड़ा किया। (بوستان سعدی، باب دوم در احسان، ص۸۰)

सदक़ा न रोको कहीं तुम्हारा रिज़्क़ न रुक जाए

ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : सदक़ा व ख़ैरात मत रोको कहीं तुम्हारा रिज़्क़ न रोक दिया जाए।

(بخاری، کتاب الزکاۃ، باب التحریض علی الصدقۃ ...الخ، ۱۰/ ۴۸۳، حدیث: ۱۴۳۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बदरुद्दीन ऐनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीस के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी इस ख़ौफ़ से अपने माल को सदक़ा करने से मत रोक कि वोह ख़त्म हो जाएगा क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर माल की तंगी फ़रमा देगा या तुझ से माल रोक लेगा और रिज़्क़ के वसाइल ख़त्म फ़रमा देगा। ह़दीस इस बात पर दलालत कर रही है कि सदक़ा माल बढ़ाता और उस में बरकत और ज़ियादती का सबब होता है, और बिला शुबा जो बुख़्ल से काम ले और सदक़ा न करे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के माल में तंगी फ़रमाएगा और माल में बरकत और इज़ाफ़ा होने से भी रोक देगा। (عمدۃ القاری، کتاب الزکاۃ، باب التحریض ...الخ، ۶/ ۴۱۰، تحت الحدیث: ۱۴۳۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾18﴿ तोल कम क्यूं हुवा ?

गाऊं में रहने वाला एक किसान खेतीबाड़ी करने के साथ साथ अपने घर में तय्यार किया हुवा मख्खन भी शहर में फ़रोख़्त किया करता था। एक दिन ह़स्बे मा'मूल उस की बीवी ने मख्खन तय्यार कर के उस के ह़वाले किया ताकि वोह उसे शहर जा कर बेच आए। येह मख्खन एक एक किलो के गोल पेड़ों (या'नी टुकड़ों) की शक्ल में था। शहर पहुंच कर के किसान ने मख्खन दुकानदार को फ़रोख़्त किया, उस की रक़म वुसूल की और उसी दुकान से घर का राशन चाए की पत्ती, चीनी और दालें वग़ैरा ख़रीदीं और वापस अपने गाऊं की त़रफ़ रवाना हो गया। किसान के जाने के बा'द दुकानदार ने मख्खन को फ़्रीज़ में रखना शुरूअ़ किया तो अचानक उस के दिल में ख़याल आया कि क्यूं न एक पेड़े का वज़्न किया जाए ! जब वज़्न किया तो मख्खन एक किलो के बजाए 900 ग्राम निकला या'नी 100 ग्राम कम थे। ह़ैरत व सदमे से दो चार उस दुकानदार ने सारे पेड़े एक एक कर के तोल डाले मगर किसान के लाए हुवे सब पेड़ों का वज़्न एक जैसा या'नी 900 ग्राम ही था यूं हर पेड़े में 100 ग्राम कम थे। अगली मरतबा जैसे ही किसान मख्खन ले कर दुकानदार के पास पहुंचा तो उस ने ग़ुस्से से बिफ़र कर कहा : दूर हो जाओ मेरी नज़रों से ! मैं तुम जैसे धोके बाज़ से हरगिज़ मख्खन नहीं ख़रीदूंगा तुम एक किलो का बोल कर मुझे कम मख्खन दे देते हो। किसान मिस्कीन सी सूरत बना कर बोला : भाई ! इस में मेरा क़ुसूर नहीं हम तो ग़रीब लोग हैं हमारे पास वज़्न तोलने के बाट ख़रीदने

www.dawateislami.net

की त़ाक़त कहां ! बात दर अस्ल येह है कि मैं आप से चीनी और दाल वग़ैरा के जो एक एक किलो के पेकेट ले जाता हूं, उस में से एक पेकेट को तराज़ू के एक पलड़े में रख कर एक एक किलो मख्खन के पेड़े तोल लेता हूं और आप के पास ला कर बेच देता हूं। येह सुन कर मारे शर्मिन्दगी के दुकानदार के माथे पर पसीना आ गया और वोह समझ गया कि तोल क्यूं कम हुवा ?

देखे हैं येह दिन अपने ही हाथों की बदौलत
सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾19﴿ कर भला हो भला

एक बूढ़ा और एक जवान शख़्स एक खेत में ह़िस्सेदार थे, जब खेती तय्यार हो कर तक़्सीम हो गई तो बूढ़ा शख़्स अपने ह़िस्से की कुछ खेती छुप कर जवान शख़्स के ह़िस्से में येह सोच कर डालने लगा कि जवान का हाथ कुछ खुल जाएगा, जब कि दूसरी त़रफ़ वोह जवान शख़्स अपने ह़िस्से की कुछ खेती बूढ़े शख़्स के ह़िस्से में येह सोच कर डालने लगा कि उन का कुम्बा बड़ा है, उन्हें ज़ियादा ह़ाजत होगी, जैसे जैसे वोह दोनों येह काम करते जा रहे थे गन्दुम भी बढ़ती जा रही थी और उस के दाने भी बड़े होते जा रहे थे, जब उन्हों ने येह चीज़ देखी तो एक दूसरे को बताई, उस वक़्त के बादशाह ने उस गन्दुम का एक दाना ले कर अपने ख़ज़ाने में रखवा लिया ताकि बा'द वालों के लिये यादगार बन जाए। (نزهة المجالس، باب الكرم...الخ، ١/٢٨٢)

www.dawateislami.net

आसानियां दोगे आसानियां मिलेगी

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने किसी मोमिन से दुन्या की कोई तक्लीफ़ दूर की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की क़ियामत की तक्लीफ़ दूर फ़रमाएगा। जिस ने किसी तंगदस्त पर आसानी की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दुन्या व आख़िरत में आसानी फ़रमाएगा। जिस ने किसी मुसलमान की पर्दापोशी की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे की मदद करता रहता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहता है।

(مسلم ،کتاب الذکر والدعاء ...الخ ، باب فضل الاجتماع ... الخ ، ص۱۴۴۷ ، حدیث : ۲۶۹۹)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी तुम किसी की फ़ानी मुसीबत दफ़्अ़ करो ! **अल्लाह** तुम से बाक़ी मुसीबत दफ़्अ़ फ़रमाएगा, तुम मोमिन को फ़ानी दुन्यवी आराम पहुंचाओ ! **अल्लाह** तुम्हें बाक़ी उख़रवी आराम देगा क्यूंकि बदला एह़सान का एह़सान है। येह ह़दीस बहुत जामेअ़ है, किसी मुसलमान के पाउं से कांटा निकालना भी ज़ाएअ़ नहीं जाता, ह़दीस का मत़लब येह नहीं है कि सिर्फ़ क़ियामत ही में बदला मिलेगा, बल्कि क़ियामत में बदला ज़रूर मिलेगा, अगर्चे कभी दुन्या में भी मिल जाए। मुफ़्ती साहिब फ़रमाते हैं : जो मक़रूज़ को मुआ़फ़ी या मोहलत दे, ग़रीब की ग़ुर्बत दूर करे, तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दीनो दुन्या में उस की मुश्किलें आसान होगी। "जिस ने किसी मुसलमान

www.dawateislami.net

की पर्दापोशी की" के तह़्त मुफ़्ती साहिब फ़रमाते हैं : (या'नी) छुपे हुवे ऐ़ब ज़ाहिर न करे ! बशर्ते येह कि उस ज़ाहिर न करने से दीन या क़ौम का नुक़्सान न हो, वरना ज़रूर ज़ाहिर कर दे ! कुफ़्फ़ार के जासूसों को पकड़वाए ! ख़ुफ़्या साज़िश करने वालों के राज़ को त़श्त अज़् बाम करे ! ज़ुल्मन क़त्ल की तदबीर करने की मज़्लूम को ख़बर दे दे ! अख़्लाक़ और हैं, मुआ़मलात और सियासियात कुछ और । (मिरआतुल मनाजीह़, 1/189)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾20﴿ तीनों क़त्ल हो गए

एक शख़्स को कहीं से बहुत सा सोना मिल गया, वोह उसे चादर में लपेट कर अकेला ही घर की त़रफ़ रवाना हुवा । रास्ते में उसे दो शख़्स मिले, उन्हों ने जब देखा कि उस के पास **सोना** है तो उस को क़त्ल कर देने कि लिये तय्यार हो गए ताकि सोना ले लें । वोह शख़्स जान बचाने की ख़ातिर बोला : तुम मुझे क़त्ल क्यूं करते हो ! हम इस सोने के तीन ह़िस्से कर लेते हैं और एक एक ह़िस्सा बांट लेते हैं । वोह दोनों इस पर राज़ी हो गए । वोह शख़्स बोला : बेहतर येह है कि हम में से एक शख़्स थोड़ा सोना ले कर क़रीब के शहर में जाए और **खाना** ख़रीद कर ले आए ताकि खा पी कर सोना तक़्सीम कर लें । चुनान्चे, उन में से एक शख़्स शहर पहुंचा, खाना ख़रीद कर वापस होने लगा तो उस ने सोचा कि बेहतर येह है कि खाने में ज़ह़र मिला दूं ताकि वोह दोनों खा कर मर जाएं और सारा **सोना** मैं ही ले लूं । येह सोच कर उस ने ज़ह़र ख़रीद कर खाने में मिला दिया । उधर उन दोनों ने येह साज़िश की,

www.dawateislami.net

कि जैसे ही वोह खाना ले कर आएगा हम दोनों मिल कर उस को मार डालेंगे और फिर **सारा सोना** आधा आधा बांट लेंगे। चुनान्चे, जब वोह शख़्स खाना ले कर आया तो **दोनों उस पर पिल पड़े और उस को क़त्ल कर दिया**। इस के बा'द ख़ुशी ख़ुशी खाना खाने के लिये बैठे तो ज़हर ने अपना काम कर दिखाया और येह दोनों लालची भी तड़प तड़प कर ठन्डे हो गए और सोना जूं का तूं पड़ा रहा।

(اِتحافُ السَّادَۃِ المُتّقِین،۹/۸۳۶بتصرف)

पैसों की लालच में दूसरों की जान लेने और दौराने सफ़र नशा आवर मशरूब पिला कर जम्अ़ पूंजी से महरूम कर देने वालों के लिये इस हिकायत में इ़ब्रत ही इ़ब्रत है।

मालो दौलत के आ़शिक़ों की हर
आरज़ू ना तमाम होती है

(वसाइले बख़्शिश, स. 495)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾21﴿ बुलन्दी चाहने वाले की करवाई

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने कोहे सफ़ा के क़रीब एक शख़्स को ख़च्चर पर सुवार देखा, कुछ ग़ुलाम उस के सामने से लोगों को हटा रहे थे, फिर मैं ने उसे बग़दाद में इस ह़ालत में पाया कि वोह नंगे पाउं और ह़सरत ज़दा था नीज़ उस के बाल भी बहुत बढ़े हुवे थे, मैं ने उस से पूछा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" तो उस ने जवाब दिया : "मैं ने ऐसी जगह बुलन्दी चाही

www.dawateislami.net

जहां लोग आ़जिज़ी करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे ऐसी जगह रुस्वा कर दिया जहां लोग रिफ़्अ़त (या'नी बुलन्दी) पाते हैं।" (الزواجر،۱/۱٦٤)

हर इस्लामी भाई को चाहिये कि अपना ज़ेह्न बनाएं कि फ़ानी पर फ़ख़्र नादानी है, इ़ज़्ज़त व मन्सब कब तक साथ देंगे, जिस मन्सब के बलबूते पर आज अकड़ते हैं कल कलां को छिन गया तो शायद उन्हीं लोगों से मुंह छुपाना पड़े जिन से आज तह़क़ीर आमेज़ सुलूक करते हैं, आज जिन पर हुक्म चलाते हैं कल ओ़ह्दा जाने के बा'द अपना काम करवाने के लिये उन्हीं से मिन्नतें करना पड़ेंगी ! अल ग़रज़ फ़ानी चीज़ों पर **ग़ुरूर व तकब्बुर** क्यूं कर किया जाए ! इस लिये कैसा ही बड़ा मन्सब या **ओ़ह्दा** मिल जाए अपनी औक़ात नहीं भूलनी चाहिये । **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **आदमी** को अपनी ह़ालत का लिह़ाज़ ज़रूर है न कि अपने को **भूले** या सिताइशे मर्दुम (या'नी आदमियों के ता'रीफ़ करने) पर **फूले** ।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स.66)

रज़ा जो दिल को बनाना था जल्वा गाहे ह़बीब
तो प्यारे क़ैदे ख़ुदी से रहीदा होना था

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स.47)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿22﴾ क़त्ल की कोशिश करने वाले के अपने दो बेटे मर गए

एक हुक्मरान ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद शम्सुद्दीन ह़नफ़ी मिसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को क़त्ल करने का इरादा किया और एक बरतन में

www.dawateislami.net

ज़हरीला खाना रख कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में पेश कर दिया। किसी की जुरअत नहीं होती थी कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के साथ आप के बरतन में खा सके, जब आप ने उस में से थोड़ा सा खाया तो आप को मा'लूम हो गया कि खाने में ज़हर है, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उठे और (बरतन वहीं छोड़ कर) ख़ानक़ाह में चले आए, सारे बरतन मिक्स (mix) हो गए, इतने में उसी हुक्मरान के दो बेटे आए और आप के बरतन से थोड़ा थोड़ा खा लिया और थोड़ी ही देर में मर गए, जब कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ज़हर ने कुछ नुक़्सान न पहुंचाया।

(جامع کرامات الاولیاء، محمد شمس الدین الحنفی، ۱/ ۲۶۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿23﴾ ज़मीन में धंस गया

कश्मीर के किसी अ़लाक़े में एक शख़्स की 5 बच्चियां थीं, छटी बार विलादत होने वाली थी। उस ने एक दिन अपनी बीवी से कहा कि अगर अब की बार भी तू ने बच्ची को जना तो मैं तुझे नौ मौलूद बच्ची समेत क़त्ल कर दूंगा। रमज़ानुल मुबारक की तीसरी शब फिर बच्ची ही की विलादत हुई। सुब्ह के वक़्त बच्ची की मां की चीख़ो पुकार की परवाह किये बिग़ैर उस बे रहम बाप ने (مَعَاذَاللهِ عَزَّوَجَلَّ) अपनी फूल जैसी ज़िन्दा बच्ची को उठा कर प्रेशर कुकर में डाल कर चुल्हे पर चढ़ा दिया। यकायक प्रेशर कुकर फटा और साथ ही ख़ौफ़नाक ज़लज़ला आ गया, देखते ही देखते वोह ज़ालिम शख़्स ज़मीन के अन्दर धंस गया।

www.dawateislami.net

बच्ची की मां को ज़ख़्मी हालत में बचा लिया गया और ग़ालिबन इसी के ज़रीए इस दर्दनाक क़िस्से का इन्किशाफ़ हुवा। (الامان والحفیظ)

("ज़लज़ला और इस के अस्बाब", स.51)

ज़मीं बोझ से मेरे फटती नहीं है

येह तेरा ही तो है करम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.110)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह चाहे तो बेटा दे या बेटी या कुछ न दे

शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "ज़िन्दा बेटी कुंवें में डाल दी" के सफ़हा 5 पर लिखते हैं :

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस्लाम ने **बेटी** को अ़ज़मत बख़्शी और इस का वक़ार बुलन्द किया है, मुसलमान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का आ़जिज़ बन्दा और उस के अह़काम का पाबन्द होता है, **बेटा** मिले या **बेटी** या बे **अवलाद** रहे हर ह़ाल में उसे राज़ी ब रिज़ा रहना चाहिये।

पारह 25 सूरतुश्शूरा की आयत 49 और 50 में इरशाद होता है :

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۙ﴿۴۹﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿۵۰﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह *ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत, पैदा करता है जो चाहे, जिसे चाहे बेटियां अ़त़ा फ़रमाए और जिसे चाहे बेटे दे या दोनों मिला दे बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे, बेशक वोह इ़ल्म व क़ुदरत वाला है।*

www.dawateislami.net

“ख़ातूने जन्नत” के आठ हुरूफ़ की निस्बत से बेटियों के फ़ज़ाइल पर मब्नी 8 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴾1﴿ **बेटियों** को बुरा मत समझो, बेशक वोह मह़ब्बत करने वालियां हैं ।[1] ﴾2﴿ जिस के यहां **बेटी** पैदा हो और वोह उसे ईज़ा न दे और न ही बुरा जाने और न बेटे को **बेटी** पर फ़ज़ीलत दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स को **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाएगा ।[2] ﴾3﴿ जिस शख़्स पर **बेटियों** की परवरिश का बोझ आ पड़े और वोह उन के साथ हुस्ने सुलूक (या'नी अच्छा बरताव) करे तो येह **बेटियां** उस के लिये जहन्नम से रोक बन जाएंगी ।[3] ﴾4﴿ जब किसी के हां **लड़की** पैदा होती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों को भेजता है जो आ कर कहते हैं : “اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْت या'नी ऐ घर वालो ! तुम पर सलामती हो ।” फिर फ़िरिश्ते उस **बच्ची** को अपने परों के साए में ले लेते हैं और उस के सर पर हाथ फेरते हुवे कहते हैं कि येह एक कमज़ोर जान है जो एक नातुवां (या'नी कमज़ोर) से पैदा हुई है, जो शख़्स इस नातुवां जान की परवरिश की ज़िम्मेदारी लेगा, क़ियामत तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद उस के शामिले ह़ाल रहेगी ।[4] ﴾5﴿ जिस की तीन **बेटियां** हों, वोह उन के साथ अच्छा सुलूक करे तो उस के लिये **जन्नत** वाजिब हो जाती है : अ़र्ज़ की गई : और **दो** हों तो ? फ़रमाया : और दो हों तब भी । अ़र्ज़ की गई : अगर एक हो तो ? फ़रमाया : अगर एक

مدینہ

١ : مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج٦ ص١٣٤ حديث١٧٣٧٨ ٢ : المستدرك ج ٥ ص ٢٤٨ حديث: ٧٤٢٨ ٣ : مسلم ص ١٤١٤ حديث ٢٦٢٩ ٤ : مجمع الزوائد ج٨ ص٢٨٥ حديث١٣٤٨٤

www.dawateislami.net

हो तो भी[1] ﴾6﴿ जिस की तीन **बेटियां** या तीन **बहनें** या दो बेटियां या दो बहनें हों फिर वोह उन की अच्छी त़रह़ परवरिश करे और उन के मुआ़मले (مُعَامَلَہ) में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता रहे तो उस के लिये **जन्नत** है[2] ﴾7﴿ जिस की तीन **बेटियां** या तीन **बहनें** हों और वोह उन के साथ अच्छा सुलूक करे तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा[3] ﴾8﴿ जिस ने अपनी दो **बेटियों** या दो **बहनों** या दो **रिश्तेदार बच्चियों** पर सवाब की निय्यत से ख़र्च किया यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला उन्हें बे नियाज़ कर दे (या'नी उन का निकाह़ हो जाए या वोह साह़िबे माल हो जाएं या उन की वफ़ात हो जाए) तो वोह उस के लिये आग से आड़ हो जाएंगी। (مسند امام احمد بن حنبل ج ١٠ ص ١٧٩ حديث ٢٦٥٧٨)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾24﴿ अन्धी लड़की

एक माहनामे में दी गई इ़ब्रतनाक ह़िकायत कुछ यूं है कि दो सगी बहनों ने अपनी अवलाद के रिश्ते आपस में त़ै किये, लड़की की नज़र कमज़ोर थी जिस की वज्ह से वोह चश्मा लगाती थी। कुछ अ़र्से बा'द दोनों बहनों के दरमियान इख़्तिलाफ़ात ने सर उठाया, बात यहां तक पहुंची कि एक बहन दूसरी से कहने लगी : मैं अपने सह़ीह़ सलामत बेटे की शादी तुम्हारी अन्धी बेटी से नहीं कर सकती। येह सुन कर दूसरी बहन के दिल पर गोया तीरों की बरसात हो गई कि ऐ़ब निकालने वाली कोई और नहीं उस की सगी बहन थी, बहर ह़ाल त़ा'ना

---

[1] معجم الاوسط ج ٤ ص ٣٤٧ حديث ٦١٩٩ مُلَخَّصاً [2] ترمذی ج ٣ ص ٣٦٧ حديث ١٩٢٣

[3] ترمذی ج ٣ ص ٣٦٦ حديث ١٩١٩

www.dawateislami.net

देने वाली रिश्ता तोड़ कर जा चुकी थी। दूसरी त़रफ़ जब वोह घर पहुंची तो उसे ख़याल आया कि लोहे के पाइप नीचे सेह्न में रखे हुवे हैं उन्हें छत पर मुन्तक़िल कर देती हूं, उस ने अपने बेटे को भी इस काम में शामिल कर लिया। ख़ुदा की करनी ऐसी हुई कि अचानक लोहे का पाइप उस के हाथ से छूटा और सीधा बेटे की आंख पर जा लगा उस की आंख पपोटे समेत बाहर निकल पड़ी, उस के दिल पर क़ियामत गुज़र गई और उस के ज़ेह्न में अपनी सगी बहन को कहे गए अल्फ़ाज़ गूंजने लगे कि मैं अपने सह़ीह़ सलामत बेटे की शादी तुम्हारी अन्धी लड़की से नहीं कर सकती, अब उसे अपने अन्दाज़ पर नदामत होने लगी लेकिन अब क्या फ़ाइदा ! बेटे की आंख तो जा चुकी थी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾25﴿ तुम ने उस का हाथ पकड़ा तो किसी ने मेरा हाथ पकड़ लिया

किसी शहर में एक पानी भरने वाला माश्की रहता था जो एक सुनार के घर पानी भरा करता था। उसे पानी भरते हुवे तीस साल का अ़र्सा हो गया था। उस सुनार की ज़ौजा नेक और पारसा ख़ातून थी। एक रोज़ वोह माश्की पानी भरने आया तो उस ने सुनार की बीवी का हाथ पकड़ लिया और उसे अपनी त़रफ़ खींचा। औ़रत ने ब मुश्किल हाथ छुड़ाया और दरवाज़ा बन्द कर लिया। थोड़ी देर बा'द सुनार घर आया तो उस की बीवी ने पूछा : आज दुकान पर कौन सा काम ख़ुदा की ना फ़रमानी का किया है ? सुनार बोला कि आज एक औ़रत के हाथ में कंगन पहनाते हुवे मुझे उस का बाज़ू बहुत ख़ूबसूरत नज़र आया तो

www.dawateislami.net

मैं ने उस का हाथ पकड़ कर अपनी त़रफ़ खींचा था, बस येही लग़्ज़िश मुझ से वाक़ेअ़ हुई है। बीवी बोली : अब मा'लूम हुवा कि तुम्हारे माश्की ने आज मेरा हाथ क्यूं पकड़ कर खींचा था ! सुनार ने सारा वाक़िआ़ सुना तो कहने लगा कि मैं अपनी ग़लती से तौबा करता हूं, खुदा मुझे मुआ़फ़ फ़रमाएं। दूसरे रोज़ माश्की पानी भरने आया तो उस ने भी अपने किये की मुआ़फ़ी मांगी। (روح البیان،٤/١٥٠)

शीशे के घर में बैठ कर पथ्थर हैं फेंकते

दीवारें आहनी पर, ह़माक़त तो देखिये

क्या आप को येह गवारा होगा ?

दूसरों की इ़ज़्ज़त की त़रफ़ गन्दी और ललचाई हुई नज़रों से देखने वालों के लिये इस वाक़िए़ में दर्से इ़ब्रत है। **बदकारी** की लज़्ज़ते बद के शौक़ीन लम्ह़ा भर के लिये सोचें कि अगर येही काम कोई मेरी बहन या बेटी या बहू या बीवी के साथ करे तो क्या मुझे गवारा होगा ? यक़ीनन नहीं ! तो फिर कोई दूसरा येह कैसे गवारा कर सकता है कि आप उस की बहन या बेटी या बहू या बीवी के साथ इस त़रह़ का फ़े'ल करें, शीशे के घर में बैठ कर दूसरों पर पथ्थर बरसाने वाले को याद रखना चाहिये कि कोई उस के घर पर भी पथ्थर बरसा सकता है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :

عِفُّوا تَعِفَّ نِسَاؤُكُم وَ بَرُّوا آبَاءَ كُمْ يَبَرَّكُمْ اَبْنَاؤُكُم या'नी पाक दामनी इख़्तियार करो, तुम्हारी औ़रतें भी पाक दामन रहेंगी और अपने वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करो, तुम्हारी अवलाद तुम से अच्छा सुलूक करेगी। (معجم اوسط، ٤/٣٧٦، حدیث:٦٢٩٥)

www.dawateislami.net

मुझे बदकारी की इजाज़त दीजिये

एक नौजवान सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और बदकारी की इजाज़त मांगी। येह सुनते ही सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जलाल में आ गए और उसे मारना चाहा। रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें ऐसा करने से रोका और नौजवान को अपने क़रीब बुला कर बिठाया और निहायत नर्मी और शफ़्क़त के साथ सुवाल किया : ऐ नौजवान ! क्या तुझे पसन्द है कि कोई तेरी मां से ऐसा फ़े'ल करे ? उस ने अ़र्ज़ की : मैं इस को कैसे रवा रख सकता हूं ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तो फिर दूसरे लोग तेरे बारे में इसे कैसे रवा रख सकते हैं ? फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : तेरी बेटी से अगर इस त़रह़ किया जाए तो तू इसे पसन्द करेगा ? अ़र्ज़ की : नहीं। फ़रमाया : अगर तेरी बहन से कोई ऐसी ना शाइस्ता ह़रकत करे तो ? और अगर तेरी ख़ाला से करे तो ? इसी त़रह़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक एक रिश्ते के बारे में सुवाल फ़रमाते रहे और वोह जवाब में येही कहता रहा कि मुझे पसन्द नहीं और लोग भी रज़ामन्द नहीं होंगे। तब सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के सीने पर हाथ रख कर दुआ़ की : या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! इस के दिल को पाक कर दे, इस की शर्मगाह को बचा ले और इस का गुनाह बख़्श दे। इस के बा'द वोह नौजवान तमाम उ़म्र ज़िना से बेज़ार रहा। (مسند احمد، حدیث ابی امامة الباهلی، ۸/۲۸۵، حدیث: ۲۲۲۷٤ ملخصًا)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾26﴿ अपना बच्चा समझ कर ऑपरेशन करने का सिला

एक ख़ातून का बयान है कि पाकिस्तान की एक मश्हूरो मा'रूफ़ सर्जन का इक लौता बेटा जो मुश्किल से छे साल का है मेरे स्कूल में पढ़ता था, एक सुब्ह् अचानक सर दर्द की वज्ह से ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। पता चला कि उसे बहुत तेज़ बुख़ार भी है, मैं ने बच्चे की वालिदा से ब ज़रीअ़ए मोबाइल राबिता़ करने की बहुत कोशिश की मगर राबिता़ न हो सका, एक के बा'द एक कॉल मगर बे फ़ाइदा ! दूसरी त़रफ़ बच्चे की ह़ालत दर्द से बिगड़ती जा रही थी। मजबूरन अपनी ज़िम्मेदारी पर डॉकटर को बुलाया गया, डॉकटर ने चेक किया और इन्जेक्शन लगा दिया। थोड़ी देर बा'द उसे सुकून मिला तो वोह सो गया। मैं बार बार उस की वालिदा के नम्बर पर राबिते़ की कोशिश करती रही मगर कोई जवाब न आया। उन के अस्पताल फ़ोन किया तो पता चला कि वोह ऑपरेशन में मसरूफ़ हैं, मैं ने उन के नम्बर पर एक मेसेज भेज दिया ताकि वोह ऑपरेशन से फ़ारिग़ हो कर उसे ले जाएं। वोह बच्चा मेरी गोद में सोया रहा। जब उस की वालिदा आईं उन का चेहरा थकावट से ज़र्द और आंखे सुर्ख़ सूजी हुई थी। अपने बच्चे को सुकून से सोता देख कर मेरे पास बैठ गईं। उन्हों ने बताया कि कई घन्टे से वोह एक बच्चे का ऑपरेशन कर रही थीं जो अपने वालिदैन की इक लौती अवलाद है, इस दौरान उन्हें अपने बच्चे का ख़याल भी आता रहा कि उन का अपना भी इकलौता बच्चा है। इसी लिये उन्हों ने उसे अपना बच्चा समझ कर बड़ी तवज्जोह से उस का कामयाब ऑपरेशन किया। उस के वालिदैन बहुत ख़ुश हैं। जब मुझे आप का मेसेज मिला तो मेरी

www.dawateislami.net

आंखे भर आई थीं कि मैं किसी के बच्चे को अपना समझ कर उसे बचाने के लिये उतनी कोशिश करती रही मगर मेरा बेटा पता नहीं अकेला कितनी तक्लीफ़ में होगा ! पता नहीं किसी ने उस को संभाला भी होगा या नहीं ? मगर जब मैं ने उस को आप की गोद में इतने सुकून से सोता देखा तो सारी परेशानी दूर हो गई और इस बात पर मेरा यक़ीन मज़बूत हो गया कि दुन्या मुकाफ़ाते अ़मल है ।

अच्छा करोगे अच्छा मिलेगा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : दूसरों के लिये आ़फ़िय्यत त़लब करो तुम्हें भी आ़फ़िय्यत नसीब होगी ।

(الترغيب والترهيب، ٣/١١٩ ، حديث: ٢١٩٩ ، مطبوعة : دار الحديث ـ القاهرة)

मुसलमान भाई के लिये दुआए ख़ैर का फ़ाइदा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना : मुसलमान की अपने मुसलमान भाई के लिये उस की पसे पुश्त दुआ ज़रूर क़बूल है, उस के सर के पास फ़िरिश्ता मुक़र्रर होता है कि वोह जब अपने भाई के लिये दुआए ख़ैर करता है तो मुक़र्रर फ़िरिश्ता कहता है : आमीन और तुझे भी उस जैसा मिले । (مسلم ،كتا ب الذكر والدعاء ،باب فضل الدعاء للمسلمين بظهر الغيب ،، ص١٤٦٢ حديث: ٢٧٣٢)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी तुम मुसलमान भाई के लिये दुआ करो तो फ़िरिश्ता तुम्हारे लिये दुआ करेगा अगर तुम ने फ़िरिश्ते की दुआ लेना है तो दूसरों को दुआ दो । बा'ज़ बुज़ुर्ग जब कोई दुआ करना चाहते हैं तो पहले दूसरों के लिये दुआ करते

www.dawateislami.net

हैं और अपने लिये भी जम्अ़ के सीगे़ से दुआ़ करते हैं, इन अ़मलों का माख़ज़ येह ह़दीस है। येह अ़मल भी है कि पहले अपने लिये दुआ़ कर ले फिर दूसरे के लिये رَبِّ اغۡفِرۡلِیۡ وَلِوَالِدَیَّ (या'नी ऐ मेरे रब मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा और मेरे वालिदैन की) । (मिरआतुल मनाजीह़, 3/293)

दूसरों की सलामती मांगो तुम्हें भी सलामती मिलेगी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ शीराज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को फ़ुक़हाए किराम के दरमियान शैख़े मुत़लक़ कहा जाता है, इस की वज्ह येह मन्क़ूल है कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़्वाब में सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवे तो अ़र्ज़ की : मुझे ऐसे कलिमात सिखाइये जिन की बदौलत मैं नजात पा सकूं। सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ शैख़ ! दूसरों के लिये सलामती त़लब करो, तुम्हें भी सलामती नसीब होगी। (فیض القدیر، ۱/۶۸۸)

﴾27﴿ ज़ालिम अपने अन्जाम को पहुंचा

तब्रिस्तान का एक ज़ालिम व बदकार बादशाह शहर की कुंवारी लड़कियों का गोहरे इ़स्मत लूटा करता था। एक दिन उस ने एक ग़रीब बुढ़िया को पैग़ाम भिजवाया कि आज वोह उस की बेटी के पास आएगा। येह जान लेवा ख़बर सुन कर ग़रीब बुढ़िया उस वक़्त के मशहूर वली ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू सई़द क़स्साब علیہ رَحمۃُ اللّٰہِ التَّوّاب की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और रो रो कर दर्दे दिल बयान करते हुवे दुआ़ की दरख़्वास्त की। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली ने दुख्यारी मां की फ़रयाद सुन कर अपना सर झुका लिया, फिर कुछ देर बा'द सर उठा कर इरशाद

www.dawateislami.net

फ़रमाया : मोहतरमा ! उस अ़लाक़े में ज़िन्दा लोगों में कोई ऐसा शख़्स नहीं जो मुस्तजाबुद्दा'वात हो (या'नी जिस की हर दुआ क़बूल होती हो) हां ! फुलां क़ब्रिस्तान में आप को इस इस त़रह़ का एक शख़्स मिलेगा, वोह आप की ह़ाजत पूरी कर सकता है। बुढ़िया क़ब्रिस्तान पहुंची तो वहां एक ह़सीनो जमील नौजवान नज़र आया जिस के नूरानी वुजूद और ख़ूबसूरत लिबास से निकलने वाली ख़ुश्बू ने सारे माह़ोल को मुअ़त्त़र कर रखा था। बुढ़िया ने सलाम के बा'द आने का मक़्सद बताया। नौजवान ने बड़ी तवज्जोह से सारी बात सुनी फिर कहा : "दोबारा ह़ज़रते अबू सईद क़स्साब علیہ رَحمۃُ اللّٰہِ التَّوّاب के पास जा कर दुआ कराइये ! उन की दुआ क़बूल होगी।" बुढ़िया ने झुंझला कर कहा : "अ़जीब बात है। मेरी मुश्किल कोई ह़ल नहीं कर रहा, मैं कहां जाऊं ? ज़िन्दा मुझे मुर्दों के पास भेजता है और मुर्दा ज़िन्दे के पास।" नौजवान ने कहा : "वहां जाइये ! اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब मस्अला ह़ल हो जाएगा।" चुनान्चे, बुढ़िया फिर ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू सईद क़स्साब علیہ رَحمۃُ اللّٰہِ التَّوّاب की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई। बुढ़िया की रूदाद सुन कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सर झुका लिया, कुछ ही देर में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के जिस्म से पसीना टपकने लगा, फिर एक ज़ोरदार चीख़ मारी और बे होश हो गए। अचानक पूरे शहर में शोर बरपा हुवा : "**बादशाह मर गया, बादशाह की गर्दन टूट गई।**" हुवा यूं कि जब वोह बद बख़्त बादशाह बुढ़िया की बेटी की त़रफ़ चला तो अचानक घोड़े को ठोकर लगी बादशाह मुंह के बल गिरा और फ़ौरन ही मौत के घाट उतर गया और यूं اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ एक वलिय्ये कामिल की दुआ की बरकत से लोगों को एक ज़ालिम व बदकार बादशाह से नजात मिल गई।

www.dawateislami.net

फिर जब लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू सईद क़स्साब علیہ رَحمۃُ اللّٰہِ التَّوّاب से पूछा कि बुढ़िया को क़ब्रिस्तान क्यूं भेजा गया ? पहले ही दुआ़ क्यूं न फ़रमा दी गई ? तो इरशाद फ़रमाया : मुझे येह बात पसन्द न थी कि मेरी बद दुआ़ से कोई हलाक हो, इस लिये मैं ने उसे ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास भेजा था। फिर उन्हों ने इशारा भिजवाया कि ऐसे बदकार व सरकश के लिये बद दुआ़ करना जाइज़ है, लिहाज़ा मैं ने बद दुआ़ की तो वोह अपने अन्जाम को पहुंच गया। (روض الریاحین،ص۲٦٦)

बादशाहों की बिखरी हुई हड्डियां

कह रही हैं न बनना कभी हुक्मरां

एह़तिसाब इस का गुज़रेगा तुम पर गिरां

ह़श्र में जब कि जाओगे मर कर मियां

(वसाइले बख़्शिश, स. 655)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बद दुआ़ न करो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपनी जानों, अपनी अवलाद और अपने अम्वाल पर बद दुआ़ न करो कहीं ऐसा न हो कि क़बूलिय्यत की घड़ी हो और बद दुआ़ क़बूल हो जाए।

(مسلم، کتاب الزھد والرقائق، باب حدیث جابر الطویل، ص۱٦۰٤، حدیث: ۳۰۰۹)

www.dawateislami.net

बद दुआ़ करने के चन्द शरई अह़काम

❁ अगर किसी काफ़िर के ईमान न लाने पर यक़ीन या ज़न्ने ग़ालिब हो और जीने से दीन का नुक़्सान हो, या किसी ज़ालिम से उम्मीद तौबा और तर्के ज़ुल्म की न हो और उस का मरना तबाह होना ख़ल्क़ के ह़क़ में मुफ़ीद हो, ऐसे शख़्स पर बद दुआ़ दुरुस्त है।

(फ़ज़ाइले दुआ़, स.187)

❁ किसी मुसलमान को येह बद दुआ़ कि तुझ पर ख़ुदा का ग़ज़ब नाज़िल हो ! और तू आग या दोज़ख़ में दाख़िल हो ! न दे, कि ह़दीस शरीफ़ में इस की मुमानअ़त वारिद है। (फ़ज़ाइले दुआ़, स.203)

(ابــو داود، کتاب الادب، باب فی اللعن، ٣٦٢/٤، حدیث: ٤٩٠٦)

❁ अपने और अपने अह़बाब के नफ़्स व अहलो माल व वलद (बच्चों) पर बद दुआ़ न करे ! क्या मा'लूम कि वक़्ते इजाबत हो और बा'दे वुक़ूए़ बला (मुसीबत में मुब्तला होने के बा'द) फिर नदामत हो। (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 212)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾28﴿ मज़दूर को ज़िन्दा जलाने वाला ख़ुद भी ज़िन्दा जल गया

एक वकील के बयान का लुब्बे लुबाब है कि हमारे अ़लाक़े में जागीर दारों का एक ख़ानदान है, ख़ानदान का सरबराह बहुत बड़े सरकारी ओ़हदे से रिटाइर होने के बा'द ज़मीनों की देख भाल किया करता था। उस के दो अ़जीबो ग़रीब शौक़ थे, एक महंगी गाड़ी पर सैर सपाटे करना और दूसरा मोटी रक़म अपने पास रखना और वक़्तन फ़

www.dawateislami.net

वक़्तन उसे गिनते रहना। एक दोपहर वोह अपने डेरे पर मौजूद था कि ना मा'लूम किस बात पर एक मज़ारेअ़ (ज़मीनों पर काम करने वाले मज़दूर) पर ग़ुस्सा आ गया, ज़मीनदार ने डन्डा पकड़ा और उस की पिटाई शुरूअ़ कर दी। उस बेचारे ने जान बचाने के लिये भाग कर एक झोंपड़े में पनाह ली। ज़मीनदार ने बहार से कुंडी लगा कर झोंपड़े को आग लगा दी, झोंपड़ा घांस फूंस और लकड़ी का ही तो था, चुनान्चे, देखते ही देखते अलाव की शक्ल इख़्तियार कर गया। किसी माई के लाल में जुरअत नहीं थी कि ज़मीनदार की मौजूदगी में आगे बढ़ कर उस ग़रीब की मदद करता लिहाज़ा वोह ग़रीब झोंपड़े के अन्दर ही जल कर भस्म हो गया। किसी ने ज़मीनदार के ख़िलाफ़ क़ानूनी कारवाई की हिम्मत नहीं की, कुछ दिन क़ुर्बो जवार में सरगोशियों के अन्दाज़ में इस सानेहे का ज़िक्र हुवा फिर ख़ामोशी छा गई।

इस के चन्द हफ़्तों बा'द ज़मीनदार के घुटनों में शदीद तक्लीफ़ शुरुअ़ हो गई, पहले दर्द फिर सूजन और फिर फ़ालिज का मरज़ लाहिक़ हो गया। ज़मीनदार के लिये हिलना जुलना दूभर हो गया, मुलाज़िम उसे बिस्तर से इस्तिन्जा ख़ाने ले जाते और वापस बिस्तर पर डाल देते। उस की ज़िन्दगी बे रौनक़ हो गई। फिर मई का महीना आया और गन्दुम की कटाई शुरूअ़ हो गई। ज़मीनदार ने ज़मीनों पर जाने की ख़्वाहिश का इज़हार किया कि थ्रेशर से गन्दुम निकलते हुवे भी देख लूंगा, हवा ख़्वारी भी हो जाएगी यूं मेरा दिल बहल जाएगा। मुलाज़िमों ने उठा कर गाड़ी में डाला और ड्राइवर ले कर चल दिया। चलते चलते वोह ऐसी जगह पहुंचा जहां ज़मीन पर गन्ने के ख़ुश्क पत्ते बिखरे हुवे थे जिसे "छूई" कहते हैं। थ्रेशर के ज़रीए़ गन्दुम के दाने ऐसी जगह अलग

www.dawateislami.net

किये जा रहे थे जहां गाड़ी ले जाना दुश्वार था, ड्राइवर ने ज़मीनदार को आगाह किया तो उस ने कहा कि मैं यहीं गाड़ी में बैठा हूं तुम जा कर देखो कि कितनी गन्दुम बाक़ी है ? ड्राइवर हुक्म की ता'मील के लिये चल पड़ा। पीछे ज़मीनदार ने सिगरेट सुलगाया और जलती हुई तीली गाड़ी से बाहर फेंक दी। मई का महीना, चिलचिलाती धूप और गाड़ी के नीचे और चारों त़रफ़ "छूई" बिखरी हुई थी जो आग पकड़ने का बहाना मांगती है, गाड़ी के चारों त़रफ़ आग का अलाव भड़क उठा, मा'ज़ूर ज़मीनदार भागता भी तो कैसे ! वहीं गाड़ी के साथ जल कर राख हो गया। बा'द में पता चला कि येह वोही जगह थी जहां उस ने ग़रीब मज़्दूर को जला कर मारा था।

जब कि पैके अजल रूह ले जाएगा
जिस्मे बे जां तड़प कर ठहर जाएगा
लह़द में कोई तेरी नहीं आएगा
तुझ को दफ़्ना के हर इक पलट जाएगा

(वसाइले बख़्शिश, स. 553)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿29﴾ हज़रते सय्यिदुना यह्या عَلَيْهِ السَّلَام की शहादत

दिमश्क़ के बादशाह "ह़द्दाद बिन ह़दार" ने अपनी बीवी को तीन त़लाक़ें दे दी थीं। फिर वोह चाहता था कि बिग़ैर ह़लाला उस को वापस कर के अपनी बीवी बना ले। उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना यह्या عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से फ़तवा त़लब किया तो आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि वोह अब तुम पर ह़राम हो चुकी है उस की बीवी को येह बात सख़्त ना गवार गुज़री और वोह

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना यह्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़त्ल के दर पे हो गई। चुनान्चे, उस ने बादशाह को मजबूर कर के क़त्ल की इजाज़त ह़ासिल कर ली और जब ह़ज़रते सय्यिदुना यह्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام "मस्जिदे जबरून" में नमाज़ पढ़ रहे थे ब ह़ालते सजदा उन को क़त्ल करा दिया और एक त़श्त में उन का सरे मुबारक अपने सामने मंगवाया ! मगर कटे हुवे सरे मुबारक में से इस ह़ालत में भी येही आवाज़ आती रही कि "तू बिग़ैर ह़लाला कराए बादशाह के लिये ह़लाल नहीं" उस औ़रत पर खुदा عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब नाज़िल हो गया और वोह ज़मीन में धंस गई।(1)

(अ़जाइबुल क़ुरआन, स. 292, والبدايه والنهايه،١٠/٥١٠ ملتقطا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾30﴿ ताबेई बुज़ुर्ग की शहादत

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत ही जलीलुल क़द्र ताबेई हैं बल्कि बा'ज़ मुह़द्दिसीन ने आप को ख़ैरुत्ताबेईन (तमाम ताबेईन में बेहतरीन) लिखा है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बसरा के ज़ालिम गवर्नर हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी को उस की ख़िलाफ़े शरअ़ बातों पर

دینہ

(1)....."**दा'वते इस्लामी**" के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 2 के सफ़ह़ा नम्बर 177 पर है : "ह़लाला की सूरत येह है कि अगर औ़रत मदख़ूला है (या'नी जिस से जिमाअ़ किया गया हो) तो त़लाक़ की इ़द्दत पूरी होने के बा'द औ़रत किसी और से निकाह़े सह़ीह़ करे और शोहरे सानी उस औ़रत से वत़ी भी कर ले अब शोहरे सानी के त़लाक़ या मौत के बा'द इ़द्दत पूरी होने पर शोहरे अव्वल से निकाह़ हो सकता है और अगर औ़रत मदख़ूला नहीं है (या'नी उस से जिमाअ़ नहीं किया गया) तो पहले शोहर के त़लाक़ देने के बा'द फ़ौरन दूसरे से निकाह़ कर सकती है कि उस के लिये इ़द्दत नहीं।"

www.dawateislami.net

रोक टोक करते रहते थे, इस लिये उस ज़ालिम ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़त्ल करा दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत का वाक़िआ़ बड़ा ही अ़जीबो ग़रीब है, ह़ज्जाज ने पूछा : सईद बिन जुबैर ! बोलो मैं किस त़रीक़े से तुम्हें क़त्ल करूं ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि जिस त़रह़ तू मुझे क़त्ल करेगा क़ियामत के दिन उसी त़रीक़े से मैं तुझे क़त्ल करूंगा। ह़ज्जाज ने कहा कि तुम मुझ से मुआ़फ़ी मांग लो मैं तुम्हें छोड़ दूंगा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी दूसरे से मुआ़फ़ी नहीं मांग सकता। ह़ज्जाज ने जहल्ला कर जल्लाद से कहा : इस को क़त्ल कर दे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह सुन कर हंसने लगे। ह़ज्जाज ने तअ़ज्जुब से पूछा : इस वक़्त किस बात पर हंस पड़े ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने तुम्हारी जुरअत पर मुझे तअ़ज्जुब हुवा और हंसी आ गई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जल्लाद के सामने क़िब्ला रू खड़े हो गए और येह आयत पढ़ी :

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۷۹﴾ (پ۷،الانعام:۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मैं ने अपना मुंह उस की त़रफ़ किया जिस ने आस्मानो ज़मीन बनाए एक उसी का हो कर और मैं मुशरिकों में नहीं।*

ह़ज्जाज ने जल्लाद से कहा : इस का मुंह क़िब्ले से फेर दे। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ा :

فَاَیْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ (پ۱،البقرة:۱۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो तुम जिधर मुंह करो उधर वज्हुल्लाह (ख़ुदा की रह़मत तुम्हारी त़रफ़ मुतवज्जेह) है।*

www.dawateislami.net

ह़ज्जाज बोला : मुंह के बल ज़मीन पर लिटा कर क़त्ल कर डालो। जब जल्लाद ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुंह के बल ब ह़ालते सजदा लिटाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयत तिलावत फ़रमाई :

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَ مِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ﴿۵۵﴾

(پ۱۶، طٰہٰ: ۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हम ने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे।*

जब जल्लाद ने ख़न्जर उठाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बुलन्द आवाज़ से لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ पढ़ा और येह दुआ मांगी कि "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे क़त्ल के बा'द ह़ज्जाज को किसी मुसलमान पर क़ाबू न दे।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह दुआ मक़्बूल हो गई और आप की शहादत के बा'द ह़ज्जाज सिर्फ़ पन्दरह रात ज़िन्दा रहा और किसी मुसलमान को क़त्ल न कर सका। उस के पेट में केन्सर हो गया था। त़बीब बदबूदार गोश्त की बोटी को धागे में बांध कर उस के ह़ल्क़ में डालता था और वोह उस को घूंट जाता था। फिर उस को निकालता था तो वोह बोटी ख़ून में लिपटी हुई निकलती थी और इन पन्दरह रातों में ह़ज्जाज कभी सो नहीं सका क्यूंकि आंख लगते ही वोह ख़्वाब देखता कि ह़ज़रते सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस की टांग पकड़ कर घसीट रहे हैं, बस आंख खुल जाती। (आईनए इ़ब्रत, स. 36)

ज़ुल्म से छुटकारे की दुआ क्यूं नहीं की ?

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुस्तजाबुद्दा'वात बुज़ुर्ग थे। आप ने एक मुर्ग़ पाल रखा था जिस की बांग पर रात में

www.dawateislami.net

नमाज़ के लिये बेदार हुवा करते थे। एक रात मुर्ग़ ने अपने वक़्त पर बांग न दी जिस के सबब ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ के लिये न उठ सके। येह बात आप पर गिरां गुज़री और आप ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस की आवाज़ को मुन्क़त़अ़ करे ! इसे क्या हुवा ? आप की ज़बान से इन अल्फ़ाज़ का निकलना था कि इस के बा'द उस मुर्ग़ ने कभी बांग न दी। आप की वालिदए मोह़तरमा ने आप से फ़रमाया : बेटा ! आज के बा'द किसी चीज़ पर बद दुआ़ न करना। इस क़दर मक़्बूलुद्दुआ़ होने के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ के ज़ुल्म पर सब्र किया यहां तक कि आप को शहीद कर दिया गया लेकिन आप ने इस मुसीबत से छुटकारे के लिये दुआ़ न की। (جامع العلوم والحکم،ص٤٥٨بتصرف)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾31﴿ लालची बीवी का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना शमऊ़न رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हज़ार माह इस त़रह़ इबादत की, कि रात को क़ियाम और दिन को रोज़ा रखने के साथ साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद भी करते। वोह इस क़दर **त़ाक़तवर** थे कि लोहे की वज़्नी और मज़बूत़ ज़न्जीरों को अपने हाथों से तोड़ डालते थे। कुफ़्फ़ारे ना हन्जार ने जब देखा कि **ह़ज़रते शमऊ़न** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर कोई भी ह़रबा कारगर नहीं होता तो बाहम मश्वरा करने के बा'द बहुत सारे मालो दौलत का लालच दे कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजा को इस बात पर आमादा कर लिया कि वोह किसी रात नींद की ह़ालत में पाए तो उन्हें निहायत ही **मज़बूत़ रस्सियों**

www.dawateislami.net

से ख़ूब अच्छी त़रह़ जकड़ कर उन के ह़वाले कर दे। चुनान्चे, **बे वफ़ा बीवी** ने ऐसा ही किया। जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बेदार हुवे और अपने आप को **रस्सियों** से बन्धा हुवा पाया तो फ़ौरन अपने आ'ज़ा को ह़रकत दी। देखते ही देखते रस्सियां टूट गईं और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आज़ाद हो गए। फिर अपनी बीवी से इस्तिफ़्सार किया : मुझे किस ने बांधा था ? **बे वफ़ा बीवी** ने वफ़ादारी की नक़्ली अदाओं से झूट मूट कह दिया कि मैं तो आप की त़ाक़त का अन्दाज़ा कर रही थी कि आप इन रस्सियों से किस त़रह़ अपने आप को आज़ाद करवाते हैं ? बात रफ़्अ़ दफ़्अ़ हो गई। एक बार नाकाम होने के बा वुजूद **बे वफ़ा बीवी** ने हिम्मत नहीं हारी और मुसलसल इस बात की ताक में रही कि कब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर नींद त़ारी हो और वोह उन्हें बांध दे। **आख़िरे कार** एक बार फिर मौक़अ़ मिल ही गया, लिहाज़ा जब आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर नींद का ग़लबा हुवा तो उस ज़ालिमा ने निहायत ही चालाकी के साथ आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को **लोहे की ज़न्जीरों** में अच्छी त़रह़ जकड़ दिया। जूं ही आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की आंख खुली, एक ही झटके में **ज़न्जीर** की एक एक कड़ी अलग कर दी और ब आसानी आज़ाद हो गए। बीवी येह मन्ज़र देख कर सटपटा गई मगर फिर मक्कारी से काम लेते हुवे वोही बात दोहरा दी कि मैं तो आप को आज़मा रही थी। दौराने गुफ़्तगू ह़ज़रते **शमऊ़न** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपनी बीवी के आगे अपना राज़ इफ़्शा कर दिया कि मुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बड़ा करम है उस ने मुझे अपनी विलायत का शरफ़ इनायत फ़रमाया है, मुझ पर दुन्या की कोई चीज़ असर नहीं कर सकती मगर हां ! **''मेरे सर के बाल''**।

www.dawateislami.net

चालाक औ़रत सारी बात समझ गई। आख़िर एक बार मौक़अ़ पा कर उस ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को आप ही के उन **आंठ गेसूओं** से बांध दिया जिन की दराज़ी ज़मीन तक थी। (येह अगली उम्मत के बुज़ुर्ग थे, हमारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते गेसू ज़ियादा से ज़ियादा शानों तक है। फ़तावा रज़विय्या में है : शानों से नीचे ढलकते हुवे औ़रतों के से बाल रखना ह़राम है।) (फ़तावा रज़विय्या, 21/600) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आंख खोलने पर बड़ा ज़ोर लगाया मगर आज़ाद न हो सके। दुन्या की दौलत के नशे में बदमस्त बे वफ़ा औ़रत ने अपने नेक और पारसा शोहर को दुश्मनों के ह़वाले कर दिया। कुफ़्फ़ारे बद अत़वार ने **ह़ज़रते शमऊ़न** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **को एक सुतून से बांध दिया और इन्तिहाई बे दर्दी और सफ़्फ़ाकी से उन के कान और होंट काट दिये,** तमाम कुफ़्फ़ार वहीं जम्अ़ थे, तब उस मर्दे मुजाहिद ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की, कि मुझे इन बन्धनों को तोड़ने की कुव्वत बख़्श दे और इन काफ़िरों पर येह सुतून मअ़ छत के गिरा दे और मुझे इन के चुंगल से नजात दे दे। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें कुव्वत अ़त़ा फ़रमाई वोह हिले तो उन के तमाम बन्धन टूट गए, उन्हों ने सुतून को हिलाया जिस की वज्ह से छत काफ़िरों पर आ गिरी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन सब को हलाक कर दिया और **ह़ज़रते शमऊ़न** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को उन से नजात बख़्श दी गई।

(मुकाशफ़तुल कुलूब, फ़ी फ़ज़्ले लैलतुल क़द्र, स. 306, बित्तग़य्युरिन)

गुनाह बे अ़दद और जुर्म भी हैं ला ता'दाद
मुआ़फ़ कर दे न सह पाऊंगा सज़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स.78)

www.dawateislami.net

﴾32﴿ शेर ने सब चबा डाला

शहज़ादिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا पहले अबू लहब के बेटे "उ़तैबा" के निकाह़ में थीं लेकिन अबू लहब के मजबूर कर देने से बद नसीब उ़तैबा ने उन को रुख़्सती से क़ब्ल ही त़लाक़ दे दी और उस ज़ालिम ने बारगाहे नुबुव्वत में इन्तिहाई गुस्ताख़ी भी की। यहां तक कि बद ज़बानी करते हुवे हुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर झपट पड़ा और आप के मुक़द्दस पैराहन को फाड़ डाला। उस गुस्ताख़ की बे अदबी से आप के क़ल्बे नाज़ुक पर इन्तिहाई रन्ज व सदमा गुज़रा और जोशे ग़म में आप की ज़बाने मुबारक से येह अल्फ़ाज़ निकल गए कि "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने कुत्तों में से किसी कुत्ते को इस पर मुसल्लत़ फ़रमा दे।" इस दुआ़ए नबवी का येह असर हुवा कि अबू लहब और उ़तैबा दोनों तिजारत के लिये एक क़ाफ़िले के साथ मुल्के शाम गए और मक़ामे "ज़रक़ा" में एक राहिब के पास रात में ठहरे। राहिब ने क़ाफ़िले वालों को बताया कि यहां दरिन्दे बहुत हैं, आप लोग ज़रा होशयार हो कर सोएं। येह सुन कर अबू लहब ने क़ाफ़िले वालों से कहा कि ऐ लोगो ! मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने मेरे बेटे उ़तैबा के लिये हलाकत की दुआ़ कर दी है। लिहाज़ा तुम लोग तमाम तिजारती सामानों को इकठ्ठा कर के उस के ऊपर उ़तैबा का बिस्तर लगा दो और सब लोग इस के इर्द गिर्द चारों त़रफ़ सो जाओ ताकि मेरा बेटा दरिन्दों के ह़म्ले से मह़फ़ूज़ रहे। चुनान्चे, क़ाफ़िले वालों ने उ़तैबा की ह़िफ़ाज़त का पूरा पूरा बन्दोबस्त किया लेकिन रात में बिल्कुल अचानक एक शेर आया और सब को सूंघते हुवे कूद कर

www.dawateislami.net

उ़तैबा के बिस्तर पर पहुंचा और उस के सर को चबा डाला। लोगों ने हर चन्द शेर को तलाश किया मगर कुछ भी पता नहीं चल सका कि येह शेर कहां से आया था और किधर चला गया ?

(شرح الزرقانی،فی ذکر اولادہ الکرام،٤/٣٢٥)

न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा की क़सम

कि जिस को तुम ने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

ख़ुदा की शान देखिये कि अबू लहब दोनों बेटों उ़तबा और उ़तैबा ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दोनों शहज़ादियों को अपने बाप के मजबूर करने से त़लाक़ दे दी मगर उ़तबा ने चूंकि बारगाहे नुबुव्वत में कोई गुस्ताख़ी और बे अदबी नहीं की थी इस लिये वोह क़हरे इलाही में मुब्तला नहीं हुवा बल्कि फ़त्हे मक्का के दिन उस ने और उस के एक दूसरे भाई "**मुअ़त्तिब**" दोनों ने इस्लाम क़बूल कर लिया और दस्ते अक़्दस पर बैअ़त कर के शरफ़े सह़ाबिय्यत से सरफ़राज़ हो गए। "उ़तैबा" ने चूंकि बारगाहे अक़्दस में गुस्ताख़ी व बे अदबी की थी इस लिये वोह क़हरे क़ह्हार व ग़ज़बे जब्बार में गिरिफ़्तार हो कर कुफ़्र की ह़ालत में एक ख़ूंख़्वार शेर के ह़म्ले का शिकार बन गया।

(والعیاذ باللّٰہ تعالٰی منہ) (सीरते मुस्त़फ़ा, स. 695)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿33﴾ ज़ुल्म का अन्जाम

अबू नस्र मुह़म्मद बिन मरवान एक कुरदी के हमराह खाना खा रहा था, दस्तरख़्वान पर दो भुने हुवे चकोर भी मौजूद थे। कुरदी ने एक चकोर उठाया और हंसना शुरूअ़ कर दिया। अबू नस्र मुह़म्मद

www.dawateislami.net

बिन मरवान ने उस से हंसने का सबब दरयाफ़्त किया तो कुरदी कहने लगा कि मैं जब जवान था तो चोर था। एक रोज़ मैं ने एक ताजिर को हदफ़ बनाया और उस को क़त्ल करने लगा। येह देख कर ताजिर ने गिड़गिड़ाते हुवे अपनी जां बख़्शी की दरख़्वास्त की लेकिन मैं बाज़ न आया। जब उस ने देखा कि मैं उसे क़त्ल कर के रहूंगा तो वोह यकायक पहाड़ पर बैठी दो चकोरों की त़रफ़ देखने लगा और उन से कहने लगा कि तुम दोनों गवाह हो जाओ येह आदमी मुझे जुल्मन हलाक कर रहा है। फिर मैं ने उस को क़त्ल कर दिया। जिस वक़्त मुझे खाने में इन दो चकोरों की झलक दिखाई दी तो मुझे उस ताजिर की बे वुक़ूफ़ी पर हंसी आई जो कि दो चकोरों को मेरे ख़िलाफ़ गवाह बना रहा था। कुरदी की येह बात सुन कर अबू नस्र बिन मरवान ने कहा : ब ख़ुदा ! इन दोनों चकोरों ने तेरे ख़िलाफ़ ऐसे शख़्स के पास गवाही दी है, जिस के पास गवाही देना मुफ़ीद भी है और वोह तुम्हें सज़ा भी दे सकता है। फिर अबू नस्र बिन मरवान ने कुरदी का सर क़लम करने का हुक्म जारी कर दिया। (ह़यातुल ह़ैवान, 1/324)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾34﴿ एक टांग कट गई

ह़ज़रते अ़ल्लामा कमालुद्दीन दमीरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي नक़्ल करते हैं : "**ज़मख़-शरी**" (जो कि मो'तज़िली फ़िर्क़े का एक मश्हूर आ़लिम गुज़रा है उस) की एक **टांग कटी हुई** थी, लोगों के पूछने पर उस ने इन्किशाफ़ किया कि येह मेरी **मां की बद दुआ़** का नतीजा है, क़िस्सा

www.dawateislami.net

यूं हुवा कि मैं ने बचपन में एक चिड़या पकड़ी और उस की टांग में डोरी बांध दी, इत्तिफ़ाक़ से वोह मेरे हाथ से छूट कर उड़ते उड़ते दीवार की दराड़ में घुस गई मगर डोरी बाहर ही लटक रही थी, मैं ने डोरी पकड़ कर ज़ोर से खींची तो चिड़या फड़कती हुई बाहर निकल पड़ी मगर बेचारी की **टांग** डोरी से कट चुकी थी, मेरी मां ने येह दर्दनाक मन्ज़र देखा तो सदमे से तड़प उठी और उस के मुंह से मेरे लिये येह **बद दुआ** निकल गई : "जिस त़रह़ तू ने इस बे ज़बान की टांग काट डाली, **अल्लाह** तआ़ला तेरी टांग काटे।" बात आई गई हो गई, कुछ अ़र्से के बा'द तह़सीले इ़ल्म के लिये मैं ने "बुख़ारा" का सफ़र इख़्तियार किया, इसनाए राह सुवारी से गिर पड़ा, **टांग** पर शदीद चोट लगी, "बुख़ारा" पहुंच कर काफ़ी इ़लाज किया मगर तक्लीफ़ न गई, बिल आख़िर **टांग कटवानी** पड़ी। (ह़यातुल ह़ैवान, 2/163)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾35﴿ पुर अस्रार मा'ज़ूर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि मैं ने मुल्के शाम में एक आदमी देखा जो बार बार येह सदा लगा रहा था : "हाए अफ़्सोस ! मेरे लिये जहन्नम है।" मैं उठ कर उस के पास गया तो येह देख कर ह़ैरान रह गया कि उस के दोनों हाथ पाउं कटे हुवे हैं, दोनों आंखों से अन्धा है और मुंह के बल ज़मीन पर औंधा पड़ा हुवा बार बार येही कहे जा रहा है कि "हाए अफ़्सोस ! मेरे लिये जहन्नम है।" मैं ने उस से पूछा कि ऐ आदमी ! क्यूं और किस बिना पर तू येह

www.dawateislami.net

कह रहा है ? येह सुन कर उस ने कहा : ऐ शख़्स ! मेरा ह़ाल न पूछ, मैं उन बद नसीबों में से हूं जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद करने के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान में दाख़िल हो गए थे, मैं जब तल्वार ले कर क़रीब पहुंचा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजए मोह़्तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मुझे ज़ोर ज़ोर से डांटने लगीं तो मैं ने गुस्से में आ कर बीबी साहिबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को थप्पड़ मार दिया ! येह देख कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तड़प कर येह दुआ़ मांगी : "अल्लाह तआ़ला तेरे दोनों हाथ और दोनों पाउं काटे, तुझे अन्धा करे और तुझ को जहन्नम में झोंक दे।" ऐ शख़्स ! अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पुर जलाल चेहरे को देख कर और उन की इस क़ाहिराना दुआ़ को सुन कर मेरे बदन का एक एक रोंगटा खड़ा हो गया और मैं ख़ौफ़ से कांपता हुवा वहां से भाग खड़ा हुवा। मैं **अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की चार दुआ़ओं में से तीन की ज़द में तो आ चुका हूं,** तुम देख ही रहे हो कि मेरे दोनों हाथ और दोनों पाउं कट चुके और आंखें भी अन्धी हो चुकी, आह ! अब सिर्फ़ चौथी दुआ़ या'नी मेरा जहन्नम में दाख़िल होना बाक़ी रह गया है। (الرّیا ض النضرة فی مناقِب العَشرة،جُزء:٣،ص٤١)

अ़दावत और कीना उन से जो रखता है सीने में
वोही बद बख़्त है मलऊ़न है मर्दूद शैत़ानी

(वसाइले बख़्शिश, स. 585)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾36﴿ जैसी करनी वैसी भरनी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह ख़ब्बाब बिन अरत्त तमीमी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه लोहार का काम करते थे और मुसलमान हो चुके थे । रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन से मह़ब्बत फ़रमाते और उन के पास तशरीफ़ ले जाते थे । इस बात की ख़बर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की मालिका "उम्मे अंमार" को हो गई, लिहाज़ा वोह सज़ा के त़ौर पर लोहा ले कर दहकाती और उसे आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के सर पर रखा करती । आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बारगाहे नबवी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में फ़रयाद की । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ फ़रमाई : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ख़ब्बाब की मदद फ़रमा । दुआ की क़बूलिय्यत का ज़ुहूर यूं हुवा कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की मालिका के सर में कोई बीमारी हो गई, जिस की तक्लीफ़ की वज्ह से वोह कुत्ते की त़रह़ चिल्लाया करती थी । किसी ने उसे येह इलाज बताया कि अपने सर को लोहे की गर्म सलाख़ों से दाग़ो । उस ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को येह करने का हुक्म दिया । यूं आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه लोहा दहकाते और उस का सर दाग़ा करते थे । (اسد الغابة،رقم الترجمه:١٤٠٧،خباب بن الارت ١٤٢/٢)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾37﴿ क़ुरआने करीम भुला दिया गया

ह़ाफ़िज़ अबू अ़म्र मद्रसे में कुरआने पाक पढ़ाते थे, एक बार एक ख़ूबसूरत लड़का पढ़ने के लिये आ गया, उस की त़रफ़ गन्दी

www.dawateislami.net

लज़्ज़त के साथ देखते ही उन को सारा कु़रआन शरीफ़ भुला दिया गया, ख़ूब तौबा की और रोते हुवे मशहूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन बसरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर रूदाद अ़र्ज़ कर के त़ालिबे दुआ़ हुवे। फ़रमाया : इसी साल ह़ज की सआ़दत ह़ासिल करो और **मिना** शरीफ़ की **मस्जिदुल ख़ैफ़** शरीफ़ में जा कर वहां **पेश इमाम** से दुआ़ करवाओ। चुनान्चे, (साबिक़ा) ह़ाफ़िज़ साह़िब ने ह़ज किया और मस्जिदुल ख़ैफ़ शरीफ़ में ज़ोहर से पहले ह़ाज़िर हो गए, एक नूरानी चेहरे वाले बूढ़े पेश इमाम साह़िब लोगों के झुरमट के अन्दर मेह़राब में तशरीफ़ फ़रमा थे। कुछ देर के बा'द एक साह़िब तशरीफ़ लाए, ब शुमूल इमाम साह़िब सब ने खड़े हो कर उन का इस्तिक़्बाल किया, नौ वारिद (नए आने वाले साह़िब) भी उसी **ह़ल्क़े** में बैठ गए। अज़ान हुई और नमाज़े ज़ोहर के बा'द लोग मुन्तशिर हो गए। पेश इमाम साह़िब को तन्हा पा कर (साबिक़ा) ह़ाफ़िज़ साह़िब आगे बढ़े और सलाम व दस्त बोसी के बा'द रोते हुवे मुद्दआ़ अ़र्ज़ कर के दुआ़ की इल्तिजा की, **पेश इमाम साह़िब के दुआ़ करते ही सारा कु़रआने मजीद फिर ह़िफ़्ज़ हो गया,** इमाम साह़िब ने पूछा : तुम्हें मेरा पता किस ने बताया ? अ़र्ज़ की : ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन बसरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने। फ़रमाने लगे : अच्छा ! उन्हों ने मेरा पर्दा फ़ाश किया है, अब मैं भी उन का राज़ खोलता हूं, सुनो ! ज़ोहर से पहले जिन साह़िब की आमद पर उठ कर सब ने ता'ज़ीम की थी वोह ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन बसरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى थे ! वोह अपनी **करामत** से बसरा से यहां मिना शरीफ़

www.dawateislami.net

की मस्जिदुल ख़ैफ़ में तशरीफ़ ला कर रोज़ाना नमाज़े ज़ोहर अदा फ़रमाते हैं। (तज़किरतुल औलिया, ज़िक्रे ह़सन बसरी, जुज़, 1 स. 40 माख़ूज़न)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ाफ़िज़े की तबाही का एक सबब

ऐ दीदारे मदीना के आरज़ूमन्द आ़शिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! **अम्रद** की त़रफ़ "गन्दी लज़्ज़त" के साथ देखने से **ह़ाफ़िज़ा** भी तबाह हो सकता है। आज कल याद दाश्त की कमी की शिकायत आ़म है, हुफ़्फ़ाज़ की भी एक ता'दाद ह़ाफ़िज़े की कमज़ोरी की आफ़त में मुब्तला है और बहुत सों को तो क़ुरआने पाक ही भुला दिया जाता है (क़ुरआन शरीफ़ या फ़ुलां आयत "भूल" गया कहने के बजाए "भुला दिया गया" कहना चाहिये) बद निगाही और T.V वग़ैरा पर फ़िल्में ड्रामे देखना गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है और इस से **ह़ाफ़िज़ा** भी कमज़ोर हो जाता है। ह़ाफ़िज़ा कमज़ोर होने के और भी कई अस्बाब हैं लिहाज़ा ख़बरदार ! किसी ह़ाफ़िज़ साह़िब की मन्ज़िल कमज़ोर होने की सूरत में महज़ अपनी अटकल से येह ज़ेह्न बना लेना कि बद निगाही के सबब ऐसा हुवा है, **बद गुमानी** है और मुसलमान पर बद गुमानी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

या इलाही ! रंग लाएं जब मेरी बे बाकियां
उन की नीची नीची नज़रों की ह़या का साथ हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 133)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾38﴿ ख़ौफ़नाक डाकू

शैख़ अ़ब्दुल्लाह शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपने सफ़र नामे में लिखते हैं : एक बार मैं शहरे बसरा से एक क़र्या (या'नी गाऊं) की त़रफ़ जा रहा था। दोपहर के वक़्त यकायक एक **ख़ौफ़नाक डाकू** हम पर ह़म्ला आवर हुवा, मेरे रफ़ीक़ (या'नी साथी) को उस ने शहीद कर डाला, हमारा मालो मताअ़ छीन कर मेरे दोनों हाथ रस्सी से बांधे, मुझे ज़मीन पर डाला और फ़िरार हो गया। मैं ने जूं तूं हाथ खोले और चल पड़ा मगर परेशानी के आ़लम में रस्ता भूल गया, यहां तक कि रात आ गई। एक त़रफ़ आग की रोशनी देख कर मैं उसी सम्त चल दिया, कुछ देर चलने के बा'द मुझे एक ख़ैमा नज़र आया, मैं शिद्दते प्यास से निढाल हो चुका था, लिहाज़ा ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े हो कर मैं ने सदा लगाई : اَلْعَطَش! اَلْعَطَش ! या'नी "हाए प्यास ! हाए प्यास !" इत्तिफ़ाक़ से वोह ख़ैमा उसी **ख़ौफ़नाक डाकू** का था ! मेरी पुकार सुन कर बजाए पानी के नंगी तल्वार लिये वोह बाहर निकला और चाहा कि एक ही वार में मेरा काम तमाम कर दे, उस की बीवी आड़े आई मगर वोह न माना और मुझे घसीटता हुवा दूर जंगल में ले आया और मेरे सीने पर चढ़ गया मेरे गले पर तल्वार रख कर मुझे ज़ब्ह़ करने ही वाला था कि यकायक झाड़ियों की त़रफ़ से एक शेर दहाड़ता हुवा बर आमद हुवा, शेर को देख कर ख़ौफ़ के मारे डाकू दूर जा गिरा, शेर ने झपट कर उसे चीर फाड़ डाला और झाड़ियों में ग़ाइब हो गया। मैं इस ग़ैबी इमदाद पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाया। (ज़ुल्म का अन्जाम, स. 2)

सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

www.dawateislami.net

ज़ालिम को मोहलत मिलती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? **ज़ुल्म का अन्जाम** किस क़दर भयानक है। ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى **"बुख़ारी शरीफ़"** में नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़ालिम को मोहलत देता है यहां तक कि जब उस को अपनी पकड़ में लेता है तो फिर उस को नहीं छोड़ता। येह फ़रमा कर सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पारह 12 सूरए हूद की आयत 102 तिलावत फ़रमाई :

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَاۤ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿۱۰۲﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐसी ही पकड़ है तेरे रब की जब बस्तियों को पकड़ता है उन के ज़ुल्म पर। बेशक उस की पकड़ दर्दनाक करीं है।*

(بخاری، کتاب التفسیر، باب وکذلك اخذ ربك...الخ، ۳/۲۴۷، حدیث:۴۶۸۶)

दह्शत गर्दों, लुटेरों, क़त्लो ग़ारतगिरी का बाज़ार गर्म करने वालों को बयान कर्दा ह़िकायत से इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये, उन्हें अपने अन्जाम से बे ख़बर नहीं रहना चाहिये कि जब दुन्या में भी क़ह्र की बिजली गिरती है तो इस त़रह़ के ज़ालिम लोग कुत्ते की मौत मारे जाते हैं और उन पर दो आंसू बहाने वाला भी कोई नहीं होता।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾39﴿ ज़बान लटक कर सीने पर आ गई

बलअ़म बिन बाऊ़रा अपने दौर का बहुत बड़ा आ़लिम और आ़बिदो ज़ाहिद था । उस को इस्मे आ'ज़म का भी इ़ल्म था । वोह अपनी जगह बैठा हुवा अपनी रूहानिय्यत से अ़र्शे आ'ज़म को देख लिया करता था । बहुत ही मुस्तजाबुद्दा'वात था कि उस की दुआ़एं बहुत ज़ियादा मक़्बूल हुवा करती थीं । उस के शागिर्दों की ता'दाद भी बहुत ज़ियादा थी । मश्हूर येह है कि उस की दर्सगाह में त़ालिबे इ़ल्मों की सिर्फ़ दवातें 12 हज़ार थीं । जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام "क़ौमे जब्बारीन" से जिहाद करने के लिये बनी इस्राईल के लश्करों को ले कर रवाना हुवे तो बलअ़म बिन बाऊ़रा की क़ौम उस के पास घबराई हुई आई और कहा कि ह़ज़रते मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) बहुत ही बड़ा और निहायत ही त़ाक़तवर लश्कर ले कर ह़म्ला आवर होने वाले हैं, वोह येह चाहते हैं कि हम लोगों को हमारी ज़मीनों से निकाल कर येह ज़मीन अपनी क़ौम बनी इस्राईल को दे दें । इस लिये مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप मूसा (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के लिये ऐसी बद दुआ़ कर दीजिये कि वोह शिकस्त खा कर वापस चले जाएं, आप चूंकि मुस्तजाबुद्दा'वात हैं इस लिये आप की दुआ़ ज़रूर मक़्बूल हो जाएगी । येह सुन कर बलअ़म बिन बाऊ़रा कांप उठा और कहने लगा : तुम्हारा नास हो, ख़ुदा की पनाह ! ह़ज़रते मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं और उन के लश्कर में मोमिनों और फ़िरिश्तों की जमाअ़त हैं उन पर भला मैं कैसे और किस त़रह़ बद दुआ़ कर सकता हूं ? लेकिन उस की क़ौम ने रो रो कर गिड़ गिड़ा कर इस त़रह़ इस्रार किया कि उस को कहना पड़ा कि इस्तिख़ारा कर लेने के बा'द

www.dawateislami.net

अगर मुझे इजाज़त मिल गई तो बद दुआ कर दूंगा। जब इस्तिख़ारा में बद दुआ की इजाज़त नहीं मिली तो उस ने साफ़ साफ़ जवाब दे दिया कि अगर मैं बद दुआ करूंगा तो मेरी दुन्या व आख़िरत दोनों बरबाद हो जाएंगी। अब की बार उस की क़ौम ने बहुत से गिरां क़द्र हदाया और तह़ाइफ़ उस के सामने रखे और बद दुआ करने पर बे पनाह इस्रार किया। यहां तक कि बलअ़म बिन बाऊ़रा पर **हिर्स व लालच** का भूत सुवार हो गया और वोह माल के जाल में फंस कर उन की ख़्वाहिश पूरी करने पर तय्यार हो गया और अपनी गधी पर सुवार हो कर बद दुआ के लिये चल पड़ा। रास्ते में बार बार उस की गधी ठहर जाती और मुंह मोड़ कर भाग जाना चाहती थी मगर येह उस को मार मार कर आगे बढ़ाता रहा। यहां तक कि गधी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने गोयाई की ताक़त अ़ता फ़रमाई और उस ने कहा : अफ़्सोस ! ऐ बलअ़म ! तू कहां और किधर जा रहा है ? देख ! मेरे आगे फ़िरिश्ते हैं जो मेरा रास्ता रोकते और मेरा मुंह मोड़ कर मुझे पीछे धकेल रहे हैं। ऐ बलअ़म ! तेरा बुरा हो क्या तू **अल्लाह** के नबी और मोमिनीन की जमाअ़त पर बद दुआ करेगा ? मगर बलअ़म बिन बाऊ़रा की आंखों पर लालच की पट्टी बंध चुकी थी लिहाज़ा वोह गधी की तम्बीह सुन कर भी वापस नहीं हुवा और "हुस्बान" नामी पहाड़ पर चढ़ गया और बुलन्दी से ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लश्करों को बग़ौर देखा और बद दुआ शुरूअ़ कर दी। लेकिन ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की शान देखिये कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये बद दुआ करता था मगर उस की ज़बान पर उस की अपनी क़ौम के लिये बद दुआ जारी हो जाती थी। येह देख कर कई मरतबा उस की क़ौम ने टोका कि ऐ बलअ़म ! तुम तो उल्टी बद दुआ कर रहे हो। कहने लगा : मैं क्या

www.dawateislami.net

करूं ! मैं बोलता कुछ और हूं और मेरी ज़बान से कुछ और ही निकलता है ! फिर अचानक उस पर ग़ज़बे इलाही नाज़िल हुवा और उस की **ज़बान लटक कर उस के सीने पर आ गई** । उस वक़्त बलअ़म बिन बाऊ़रा ने अपनी क़ौम से रो कर कहा : अफ़्सोस मेरी दुन्या व आख़िरत दोनों तबाह व बरबाद हो गईं, मेरा ईमान जाता रहा और मैं क़हरे क़हहार व ग़ज़बे जब्बार में गिरिफ़्तार हो गया हूं । जाओ ! अब मेरी कोई दुआ़ क़बूल नहीं हो सकती । **(تفسیر صاوی،پ۹،الاعراف،تحت الآیۃ:۱۷۵،۲/۷۲۷ملخصًا)**

किस के दर पर मैं जाऊंगा मौला
गर तू नाराज़ हो गया या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾40﴿ क़ारून का अन्जाम

क़ारून हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के चचा "यसहर" का बेटा था । बहुत ही शकील और ख़ूबसूरत आदमी था । इसी लिये लोग उस के हुस्नो जमाल से मुतअस्सिर हो कर उस को "मुनव्वर" कहा करते थे । इस के साथ साथ उस में येह कमाल भी था कि वोह बनी इस्राईल में "तौरात" का बहुत बड़ा आ़लिम, और बहुत ही मिलनसार व बा अख़्लाक़ इन्सान था और लोग उस का बहुत ही अदबो एह़तिराम करते थे लेकिन बे शुमार दौलत उस के हाथ में आते ही उस के ह़ालात में एक दम तग़य्युर पैदा हो गया और सामरी की त़रह़ मुनाफ़िक़ हो कर हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का बहुत बड़ा दुश्मन हो गया और बहुत ज़ियादा मुतकब्बिर और मग़रूर हो गया । जब ज़कात का हुक्म नाज़िल हुवा तो उस ने

www.dawateislami.net

आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रू बरू येह अ़हद किया कि वोह अपने तमाम मालों में से हज़ारवां हिस्सा ज़कात निकालेगा मगर जब उस ने मालों का हिसाब लगाया तो एक बहुत ही बड़ी रक़म ज़कात की निकली। येह देख कर उस पर एक दम हिर्स व बुख़्ल का भूत सुवार हो गया और न सिर्फ़ ज़कात का मुन्किर हो गया बल्कि आम तौ़र पर बनी इस्राईल को बहकाने लगा कि ह़ज़रते मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) इस बहाने तुम्हारे मालों को ले लेना चाहते हैं। यहां तक कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से लोगों को बरगश्ता (या'नी ख़िलाफ़) करने के लिये उस ख़बीस ने येह गन्दी और घिनावनी चाल चली कि एक बे शर्म औ़रत को बहुत ज़ियादा मालो दौलत दे कर आमादा कर लिया कि वोह आप पर बदकारी का इल्ज़ाम लगाए। चुनान्चे, ऐ़न उस वक़्त जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام वा'ज़ फ़रमा रहे थे। क़ारून ने आप को टोका कि आप ने फ़ुलानी औ़रत से बदकारी की है। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि उस औ़रत को मेरे सामने लाओ। चुनान्चे, वोह औ़रत बुलाई गई तो ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : ऐ औ़रत ! उस **अल्लाह** की क़सम ! जिस ने बनी इस्राईल के लिये दरया को फाड़ दिया और आ़फ़िय्यत व सलामती से साथ दरया के पार करा कर फ़िरऔ़न से नजात दी, सच सच कह दे कि **अस्ल बात क्या है ?** वोह औ़रत सहम कर कांपने लगी और उस ने मजमए़ आ़म में साफ़ साफ़ कह दिया : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ! मुझ को क़ारून ने कसीर दौलत दे कर आप पर **बोहतान** लगाने के लिये आमादा किया है। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आबदीदा हो कर सजदे में गिर गए और ब ह़ालते सजदा आप ने येह दुआ़ मांगी कि या

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! क़ारून पर अपना क़हरो ग़ज़ब नाज़िल फ़रमा दे। फिर आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने लोगों से फ़रमाया कि जो क़ारून का साथी हो वोह क़ारून के साथ ठहरा रहे और जो मेरा साथी हो वोह क़ारून से जुदा हो जाए। चुनान्चे, दो ख़बीसों के सिवा तमाम बनी इस्राईल क़ारून से अलग हो गए।

फिर हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ज़मीन को हुक्म दिया कि ऐ ज़मीन ! तू इस को पकड़ ले तो क़ारून एक दम घुटनों तक ज़मीन में धंस गया फिर आप ने दोबारा ज़मीन से येही फ़रमाया तो वोह कमर तक ज़मीन में धंस गया। येह देख कर क़ारून रोने और बिलबिलाने लगा और क़राबत व रिश्तेदारी का वासिता देने लगा मगर आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस पर तवज्जोह नहीं फ़रमाई यहां तक कि वोह बिल्कुल ज़मीन में धंस गया। दो मन्हूस आदमी जो क़ारून के साथी हुवे थे, लोगों से कहने लगे कि हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने क़ारून को इस लिये धंसा दिया है ताकि क़ारून के मकान और उस के ख़ज़ानों पर ख़ुद क़ब्ज़ा कर लें। येह सुन कर आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ मांगी कि क़ारून का मकान और ख़ज़ाना भी ज़मीन में धंस जाए। चुनान्चे, क़ारून का मकान जो सोने का था और उस का सारा ख़ज़ाना, सभी ज़मीन में धंस गया। (تفسیر صاوی، پ۲۰، القصص، تحت الآیۃ: ۸۱، ۴/ ۱۵۴۶ ملخصًا، عجائب القرآن، ص۱۹۴)

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
बुरी आदतें भी छुड़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 100)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾41﴿ शिकारी ख़ुद शिकार हो गया

एक शख़्स को किसी बादशाह के दरबार में ख़ुसूसी रुत्बा ह़ासिल था । वोह रोज़ाना बादशाह के रू बरू खड़े हो कर बत़ौरे नसीह़त कहा करता था : **"एह़सान करने वाले के एह़सान का बदला दे, बुरे शख़्स से बुराई से पेश न आओ क्यूंकि बुरे इन्सान के लिये तो ख़ुद उस की बुराई ही काफ़ी है ।"** बादशाह उस की बेहतरीन नसीह़तों की वज्ह से उसे बहुत मह़बूब रखता था । बादशाह की त़रफ़ से दी जाने वाली इ़ज़्ज़त व मह़ब्बत देख कर एक दरबारी को उस शख़्स से **ह़सद** हो गया । एक दिन ह़ासिद दरबारी उस शख़्स की इ़ज़्ज़त के ख़ातिमे के लिये बादशाह से झूट बोलते हुवे कहने लगा : येह शख़्स आप के बारे में लोगों से कहता फिरता है कि "बादशाह के मुंह से बहुत बदबू आती है ।" बादशाह ने पूछा : "तुम्हारे पास इस का क्या सुबूत है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "कल उसे अपने क़रीब बुला कर देखिये, येह अपनी नाक पर हाथ रख लेगा । अगले रोज़ **ह़ासिद**, उस मुक़र्रब शख़्स को अपने घर ले गया और उसे बहुत सारा कच्चा लह़सन वाला सालन खिला दिया ।" येह मुक़र्रब शख़्स खाने से फ़ारिग़ हो कर ह़स्बे मा'मूल दरबार पहुंचा और बादशाह के रू बरू नसीह़त बयान की । बादशाह ने उसे अपने क़रीब बुलाया, उस ने इस ख़याल से कि मेरे मुंह की लह़सन की बू बादशाह तक न पहुंचे, अपने मुंह पर हाथ रख लिया । बादशाह को इस ह़रकत के बाइ़स यक़ीन हो गया कि दूसरा दरबारी दुरुस्त कह रहा था । बादशाह ने अपने हाथ से एक "आ़मिल" (या'नी सरकारी अहल कार) को ख़त़ लिखा : इस ख़त़ के लाने वाले की **फ़ौरन गर्दन** उड़ा दो और इस की लाश में भुस भर कर हमारी त़रफ़ रवाना करो ।

www.dawateislami.net

बादशाह की येह आ़दत थी कि जब किसी को इन्आ़मो इकराम देना मक़्सूद होता तो ख़ुद अपने हाथ से ख़त़ लिखता, इस के इ़लावा कोई भी हुक्म अपने हाथ से न लिखता था लेकिन इस मरतबा उस ने ख़िलाफ़े मा'मूल अपने हाथ से सज़ा का हुक्म लिख दिया। जब वोह मुक़र्रब आदमी ख़त़ ले कर शाही महल से बाहर निकला तो **ह़ासिद** ने उस से पूछा : "येह तुम्हारे हाथ में क्या है?" उस ने जवाब दिया : "बादशाह ने अपने हाथ से फ़ुलां आ़मिल के लिये ख़त़ लिखा था, येह वोही है।" **ह़ासिद** ने ख़त़ लिखने के साबिक़ा त़रीक़े पर क़ियास करते हुवे लालच में आ कर कहा : "येह ख़त़ मुझे दे दो।" मुक़र्रब ने आ'ला ज़रफ़ी का मुज़ाहरा करते हुवे ख़त़ उस के ह़वाले कर दिया। **ह़ासिद** फ़ौरन आ़मिल के पास पहुंचा और ख़त़ उस के हाथ में देने के बा'द इन्आ़मो इकराम त़लब किया। आ़मिल ने कहा : "इस में तो ख़त़ लाने वाले के क़त्ल करने का हुक्म दर्ज है।" अब तो **ह़ासिद** के अवसान ख़त़ा हो गए, बड़ी आ़जिज़ी से बोला : "यक़ीन करो कि येह ख़त़ तो किसी दूसरे शख़्स के लिये लिखा गया था, तुम बादशाह से मा'लूम करवा लो।" आ़मिल ने जवाब दिया : "बादशाह सलामत के हुक्म में किसी "**अगर मगर**" की गुन्जाइश नहीं होती।" येह कह कर उसे क़त्ल करवा दिया।

दूसरे दिन मुक़र्रब आदमी, ह़स्बे मा'मूल दरबार में पहुंचा और नसीह़त बयान की। बादशाह ने मुतअ़ज्जिब हो कर अपने ख़त़ के बारे में पूछा। उस ने कहा : "वोह तो मुझ से फ़ुलां दरबारी ने ले लिया था।" बादशाह ने कहा : "वोह तो तुम्हारे बारे में बताता था कि तुम मुझे गन्दा दह्न (या'नी बदबूदार मुंह वाला) कहा करते हो!" मुक़र्रब

www.dawateislami.net

शख़्स ने अ़र्ज़ की : "मैं ने तो कभी ऐसी कोई बात नहीं की ।" बादशाह ने मुंह पर हाथ रखने की वज्ह दरयाफ़्त की, तो उस ने अ़र्ज़ की : "उस शख़्स ने मुझे बहुत सा कच्चा लह्सन खिला दिया था, मैं नहीं चाहता था कि उस की बू आप तक पहुंचे ।" बादशाह सारा मुआ़मला समझ गया और कहा : तुम अपनी जगह पर लौट जाओ, तुम ने सच कहा, बुरे आदमी की बुराई उसे किफ़ायत कर गई ।

(احیاء علوم الدین،کتاب ذم الغضب۔الخ، بیان ذم الحسد،۳/۲۳۳)

शिकार करने चले थे, शिकार हो बैठे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ह़सद व लालच के मज़्मूम (या'नी बुरे) जज़्बे ने दरबारी को कैसी ख़त़रनाक और शर्मनाक साज़िश करने पर तय्यार किया लेकिन "ख़ुद आप अपने दाम में सय्याद आ गया" के मिस्दाक़ वोह अपने ही फैलाए हुवे जाल में फंस कर मौत के मुंह में जा पहुंचा । नीज़ इस ह़िकायत से येह दर्स भी मिला कि किसी की ने'मतें या फ़ज़ीलतें देख कर दिल नहीं जलाना चाहिये और न ही उस से ने'मतों के छिन जाने की तमन्ना करनी चाहिये क्यूंकि उसे येह सब कुछ देने वाला हमारा ख़ालिक़ो मालिक عَزَّوَجَلَّ है और वोह बे नियाज़ है जिस को चाहे जितना चाहे नवाज़ दे, हम कौन होते हैं उस की तक़्सीम पर ए'तिराज़ या शिक्वा करने वाले !

रिहाई मुझ को मिले काश ! नफ़्सो शैत़ां से
तेरे ह़बीब का देता हूं वासित़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾42﴿ येह मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है

वक़्त बे वक़्त किसी को टोकते रहने, डांट पिला देने या झाड़ने की आ़दत से मुमकिन है कि वोह ऐसे वक़्त में हमारी मदद से इन्कार कर दे जब कि हम शदीद परेशानी में मदद के त़लबगार हों। इस बात को एक ह़िकायत से समझने की कोशिश कीजिये : चुनान्चे, एक नक चढ़ा रईस अपने नौकरों को वक़्त बे वक़्त डांटता, झाड़ता रहता था जिस की वज्ह से नौकरों के दिल में उस की अ़दावत बैठ चुकी थी। उस रईस ने हर नौकर को उस की ज़िम्मेदारियों की तह़रीरी लिस्ट (List) बना कर दी हुई थी अगर कोई नौकर कभी कोई काम छोड़ देता तो रईस उसे वोह लिस्ट दिखा दिखा कर ज़लील करता। एक मरतबा वोह घुड़ सुवारी का शौक़ पूरा कर के घोड़े से उतर रहा था कि उस का पाउं रिकाब में उलझ गया उसी दौरान घोड़ा भाग खड़ा हुवा, अब रईस उल्टा लटका घोड़े के साथ साथ घिसट रहा था। उस ने पास खड़े नौकर को मदद के लिये पुकारा मगर उसे तो बदला चुकाने का मौक़अ़ मिल गया था, चुनान्चे, उस ने अपने मालिक की मदद करने के बजाए जेब से रईस की दी हुई लिस्ट निकाली और दूर ही से उस को दिखा कर कहने लगा कि इस में येह कहीं नहीं लिखा कि अगर तुम्हारा पाउं घोड़े की रिकाब में उलझ जाए तो उसे छुड़ाना मेरी ड्यूटी है। येह सुन कर रईस नौकरों से किये हुवे बुरे सुलूक पर पछताने लगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾43﴿ पांच दिरहम भी मिल गए और पानी भी

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है : एक बार सफ़र के दौरान मुझे एक ख़ुश्क बयाबान से गुज़रना पड़ा, इस दौरान मुझे प्यास लगी लेकिन कहीं से पानी दस्तयाब न हो सका । मैं ने एक आ'राबी को देखा जिस के पास पानी का मश्कीज़ा था । मैं ने उस से पूछा कि पानी का येह मश्कीज़ा कितने का बेचोगे ? उस ने कहा : पांच दिरहम में । मैं ने क़ीमत कम कराने की कोशिश की लेकिन वोह न माना और आख़िर मैं ने पांच दिरहम के बदले उस से मश्कीज़ा ख़रीद लिया । कुछ देर बा'द मैं ने उस से कहा : मेरे भाई ! मेरे पास सत्तू मौजूद हैं, क्या आप खाएंगे ? उस ने कहा : क्यूं नहीं, चुनान्चे, एक प्याले में डाल कर उसे सत्तू दिये गए और वोह उन्हें खाने लगा । सत्तू खा कर उसे प्यास लगी और उस ने पूछा : पानी का एक प्याला कितने का मिलेगा ? मैं ने कहा : पांच दिरहम में, उस ने मिन्नत समाजत की लेकिन मैं न माना । आख़िरे कार उस ने पांच दिरहम के बदले पानी का प्याला ह़ासिल किया, इस त़रह़ मुझे पानी भी ह़ासिल हुवा और अपने पांच दिरहम भी वापस मिल गए । (المناقب للموفق،۱/۱۸۹)

इस ह़िकायत में गिरां फ़रोशों (या'नी बहुत महंगा माल बेचने वालों) के लिये दर्से इ़ब्रत है कि हो सकता है कि बत़ौरे करयाना फ़रोश आप किसी की मजबूरी से फ़ाइदा उठाने की कोशिश में हों और कोई डॉक्टर आप की मजबूरी से फ़ाइदा उठाने के लिये तय्यार बैठा हो, जो रक़म आप कमाएं वोह किसी डॉक्टर किसी मिकेनिक किसी इलेक्ट्रीश्यन की जेब में चली जाए, **कर भला हो भला** ! ! !

www.dawateislami.net

﴾44﴿ मां के गुस्ताख़ को ज़मीन ज़िन्दा निगल गई

किसी गाऊं में एक किसान के घर के अन्दर सास बहू के दरमियान हमेशा ठनी रहती थी, कई बार किसान की बीवी रूठ के मैके चली गई और वोह मिन्नत समाजत कर के उस को ले आया। आख़िरी बार बीवी ने किसान से कह दिया कि अब इस घर के अन्दर मैं रहूंगी या तुम्हारी मां। किसान अपनी बीवी पर लट्टू था, उस नादान ने दिल ही दिल में तै़ कर लिया कि रोज़ रोज़ के झगड़े का ह़ल येही है कि मां को रास्ते से हटा दिया जाए। चुनान्चे, एक बार वोह किसी ह़ीले से मां को अपने गन्ने के खे़त में ले गया, गन्ने काटते काटते मौक़अ़ पा कर मां का रुख़ कर के जूं ही उस पर कुल्हाड़ी का वार करना चाहा एक दम ज़मीन ने उस किसान के पाउं पकड़ लिये, कुल्हाड़ी हाथ से छूट कर दूर जा पड़ी और मां घबरा कर चिल्लाती हुई गाऊं की त़रफ़ भाग निकली। ज़मीन ने आहिस्ता आहिस्ता किसान को निगलना शुरूअ़ कर दिया, वोह घबरा कर चीख़ता रहा और अपनी मां को पुकार पुकार कर मुआ़फ़ी मांगता रहा लेकिन मां बहुत दूर जा चुकी थी, कुछ देर बा'द जब लोग वहां पहुंचे तो वोह छाती तक ज़मीन में धंस चुका था, लोग उसे निकालने की नाकाम कोशिशें करते रहे मगर ज़मीन उसे निगलती ही रही यहां तक कि वोह ज़मीन के अन्दर समा गया।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तौबा ! तौबा !! लरज़ उठो !!! और अगर मां बाप को कभी नाराज़ किया है तो जल्दी जल्दी उन के क़दमों में गिर कर रो रो कर उन से मुआ़फ़ी की भीक मांग लो, येह तो

www.dawateislami.net

दुन्या की सज़ा थी जो उस मां के ना फ़रमान नादान किसान की देखी गई अगर वोह किसान मुसलमान था तो हम ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ से उस के लिये रह़मो करम की दरख़्वास्त करते हैं। दुन्या की सज़ा जब ना क़ाबिले बरदाश्त हुवा करती है तो आख़िरत की सज़ा कैसे सही जा सकेगी ? (नेकी की दा'वत, स. 438)

दिल दुखाना छोड़ दे मां बाप का

वरना है इस में ख़सारा आप का

(वसाइले बख़्शिश, स.713)

मां बाप के ना फ़रमान को जीते जी सज़ा मिलती है

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : सब गुनाहों की सज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे तो क़ियामत के लिये उठा रखता है मगर मां बाप की ना फ़रमानी की सज़ा जीते जी देता है।

(مُستَدرَک،کتاب البر والصلة،باب کل الذنوب۔الخ،۵/۲۱۶،حدیث: ۷۳۴۵)

जहां में है इ़ब्रत के हर सू नमूने

मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने

कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने

जो आबाद थे वोह महल अब हैं सूने

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है

येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

जैसा बोएंगे वैसा काटेंगे

हमें अपनी ज़िन्दगी से फ़ाइदा उठाते हुवे ख़ूब इबादत कर लेनी चाहिये कि मरने के बा'द इस का मौक़अ़ न मिल सकेगा। हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब लोगों के पास बैठते तो फ़रमाते : "ऐ लोगो ! शबो रोज़ गुज़रने के साथ साथ तुम्हारी उ़म्रें भी कम होती जा रही हैं, तुम्हारे आ'माल लिखे जा रहे हैं। मौत अचानक आएगी, पस जो नेकी की फ़स्ल बोएगा जल्द ही उसे शौक़ से काटेगा और जो बुराई की खेती बोएगा उसे नदामत के साथ काटना पड़ेगा। हर एक अपनी ही उगाई हुई खेती काटेगा। सुस्ती व काहिली करने वाला अपने अ़मल के ज़रीए़ आगे कभी नहीं बढ़ पाएगा और हि़र्स व लालच में मुब्तला सिर्फ़ अपना मुक़द्दर ही ह़ासिल कर पाएगा। जिसे भी भलाई की तौफ़ीक़ मिली वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है और जिसे बुराई से बचाया गया तो वोह भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के करम से है। मुत्तक़ी व परहेज़गार आ़म लोगों के सरदार और फ़ुक़हा, रहनुमा हैं। उन की सोह़बत इख़्तियार करना नेकियों में इज़ाफ़े का सबब है।" (الزھد للامام احمد، باب فضل ابی ھریرۃ، ص۱۸۳، رقم:۸۸۹)

﴿45﴾ अज़ान का मज़ाक़ उड़ाने वाले का अन्जाम

एक ग़ैर मुस्लिम जब मुअज़्ज़िन को اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه कहते सुनता तो कहता : झूटा जल जाए (مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ)। एक दिन उस की ख़ादिमा रात में आग ले कर आई तो उस में से एक चिंगारी उड़ी जिस से घर में आग लग गई और वोह शख़्स अपने अहले ख़ाना समेत जल कर हलाक हो गया। (تفسیر کبیر، پ۶، المائدۃ، تحت الآیۃ:۵۸، ۴/۳۸۸)

www.dawateislami.net

नाच रंग की महफ़िल जारी थी कि...

3 रमज़ानुल मुबारक **1426** हि. ब मुताबिक़ **8-10-2005** को इस्लामाबाद की पुर शिकोह इमारत "**मार्गला टावर**" में कुछ मग़रिबी तहज़ीब के दिलदाह मुसलमानों ने यहूदो नसारा के साथ मिल कर مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ ! एहतिरामे रमज़ानुल मुबारक को बालाए ताक़ रख कर **शराब** पी कर ख़ूब **नाच रंग** की महफ़िल बरपा की। येह लोग अपनी आक़िबत के अन्जाम से बिल्कुल बे ख़बर गुनाहों के इन घिनौने कामों में अभी मश्ग़ूल थे कि अचानक **ख़ौफ़नाक ज़लज़ला** आया और उस ने ऐश परस्तों की तमाम तर मसर्रतों और सर मस्तियों को **ख़ाक** में मिला कर रख दिया !

कटा हुवा सर

इस्लामाबाद मार्गला टावर के मलबे में एक शख़्स का कटा हुवा सर मिला, धड़ न मिल सका उस के बा'ज़ शनासाओं ने बताया कि येह बद नसीब शख़्स जब **अज़ान** शुरूअ़ होती तो गानों की आवाज़ मज़ीद ऊंची कर लेता था।

याद रख तू मौत अचानक आएगी

सारी मस्ती ख़ाक में मिल जाएगी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾46﴿ चोर अपाहज हो गया

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल हसन नूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى लबे दरया कपड़े रख कर पानी में ग़ुस्ल करने के लिये गए, इतने में एक चोर

www.dawateislami.net

आप के कपड़े ले कर **नौ दो ग्यारह** हो गया। जब आप ग़ुस्ल कर के वापस आए तो उधर से चोर भी ह़ज़रत के कपड़े लिये वापस आ गया, उस के हाथ मा'ज़ूर हो गए थे। आप ने अपने कपड़े पहन लिये तो दुआ़ मांगी : मालिको मौला ! इस ने मेरे कपड़े वापस कर दिये तू इस की तन्दुरुस्ती और सिह़्ह़त इसे वापस कर दे। वोह फ़ौरन सिह़्ह़त याब हो कर चला गया। (روض الریاحین،ص۲۹۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾47﴿ महल वीरान हो गया

एक इस्राईली मोमिना का वाक़िआ़ है कि उस का मकान शाही महल के सामने था जिस की वज्ह से महल की ख़ुशनुमाई दाग़दार हो रही थी। बादशाह ने बार बार कहा कि येह मकान मेरे हाथ फ़रोख़्त कर दो मगर वोह राज़ी नहीं हुई और इन्कार कर दिया। एक बार जब वोह सफ़र पर गई तो बादशाह ने उस की झोंपड़ी गिरा देने का हुक्म दे दिया, जब वोह वापस आई तो अपनी गिरी हुई झोंपड़ी देख कर पूछा : येह किस ने गिराई। उसे बताया गया : बादशाह ने। वोह आस्मान की त़रफ़ सर उठा कर अ़र्ज़ करने लगी : ऐ मेरे मालिक, ऐ मेरे मौला ! मैं सफ़र में थी मगर तू तो मौजूद था, कमज़ोरों और मज़्लूमों का तू ही तो मददगार है, येह कह कर वहीं ज़मीन पर बैठ गई। बादशाह जब सुवारी पर उधर से गुज़रा तो पूछा : किस का इन्तिज़ार कर रही हो ? कहने लगी : तेरे महल के वीरान होने का इन्तिज़ार है, येह सुन कर बादशाह हंसा और उस मज़्लूमा का मज़ाक़ उड़ाया मगर जब रात हुई तो बादशाह का महल ज़मीं बोस हो गया और बादशाह मअ़ अहले ख़ाना

www.dawateislami.net

उस में दफ़्न हो गया। महल की एक दिवार पर कुछ अश्आ़र लिखे हुवे नज़र आए जिन का मफ़्हूम येह है :

क्या दुआ़ को ह़क़ीर जान कर उस का मज़ाक़ उड़ाता है ? क्या उसे मा'लूम नहीं कि दुआ़ ने क्या कर डाला ? रात के तीर कभी ख़ता नहीं करते, लेकिन उस के लिये एक वक़्फ़ा होता है, और मुद्दत का इख़्तिताम कभी तो है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वोही किया जो तू ने देखा और तुम्हारी बादशाही को दवाम हरगिज़ नहीं। (روض الریاحین،ص۲۰۳)

ऊंचे ऊंचे मकान थे जिन के
तंग क़ब्रों में आज आन पड़े

आज वोह हैं न हैं मकां बाक़ी
नाम को भी नहीं हैं निशां बाक़ी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾48﴿ मुझे आगे जा कर फेंको

कहते हैं एक जवान अपने बूढ़े बाप से तंग आ कर उस को दरया में फेंकने गया। बाप ने कहा : बेटा ! मुझे ज़रा और आगे गहराई में जा कर फेंको। बेटे ने कहा : यहां किनारे पर क्यूं नहीं और वहां गहराई में क्यूं ? बाप ने जवाब दिया : इस लिये कि यहां तो मैं ने अपने बाप को फेंका था। येह सुन कर बेटा कांप उठा कि कल येही अन्जाम मेरा होगा। वोह बाप को घर ले आया और उस की ख़िदमत शुरूअ़ कर दी।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह बात ज़ेहन से निकाल दें कि आज आप अपने मां-बाप की ना फ़रमानी करें और कल आप की

www.dawateislami.net

अवलाद आप की फ़रमां बरदार हो और आप के लिये फ़ितना, आज़माइश और जग हंसाई का बाइस न बने। कांटे बो कर गुलाबों की तवक़्क़ोअ़ रखना बेकार है। ख़ज़ां के मौसिम में बहारों की उम्मीदें बांधना नादानी है। बन्जर ज़मीनों में बीज बो कर नख़्लिस्तानों के ख़्वाब देखना हमाक़त है। अगर मोतिये, चम्बेली और गुलाबों की पैवन्द कारी करेंगे तो यक़ीनन त़रह़ त़रह़ की ख़ुश्बूओं से आप की ज़िन्दगी महक जाएगी, येही क़ानूने क़ुदरत है। आज से अपने वालिदैन को फूलों की सेज पर बिठाएं, उन के अह़कामात सर आंखों पर रखें, उन्हें उफ़ तक न कहें ताकि कल आप की अवलाद आप के सर पर इ़ज़्ज़त व वक़ार और क़द्रदानी का ताज पहनाए। येह दुन्या दारुल अ़मल है, आख़िरत दारुल जज़ा है। दारुल जज़ा में बदला पाने से पहले इस दुन्या में ही बेहतरीन जज़ा के ह़क़दार बन कर दिखाएं ताकि **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा और रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त के ह़क़दार ठहरें।

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : बे अ़क़्ल और शरीर और ना समझ जब त़ाक़त व तवानाई ह़ासिल कर लेते हैं तो बूढ़े बाप पर ही ज़ोर आज़माई करते हैं और उस के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते हैं जल्द नज़र आ जाएगा कि जब ख़ुद बूढ़े होंगे तो अपने किये हुवे की जज़ा अपने हाथ से चखेंगे, كَمَا تَدِيْنُ تُدَانُ जैसा करोगे वैसा भरोगे (ت)। (फ़तावा रज़विय्या, 24/424)

www.dawateislami.net

﴾49﴿ बूढ़ी मां

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी किताब "**नेकी की दा'वत**" के सफ़ह़ा 442 पर लिखते हैं : **इंग्लेन्ड** के एक जरीदे में कुछ इस त़रह़ का सन्सनी ख़ैज़ क़िस्सा लिखा था, एक मां की एक ही इक लौती बेटी "मेरी" MARY के इ़लावा कोई अवलाद नहीं थी, "मेरी" जब जवान हुई तो मां ने एक खाते पीते और समाजी त़ौर पर मुअ़ज़्ज़ज़ नौजवान से उस की शादी कर दी और ख़ुद भी उन्हीं के साथ मुक़ीम हो गई। उन के यहां एक चांद सी मुन्नी पैदा हुई, उस का नाम एलीज़ाबेथ (ELIZABETH) रखा गया, नानी को गोया एक खिलौना मिल गया, नवासी एलीज़ाबेथ उस के साथ ख़ूब हिल गई, वक़्त गुज़रता गया इधर एलीज़ाबेथ बड़ी होती जा रही थी तो उधर नानी बुढ़ापे की त़रफ़ रवां दवां थी। अब नन्ही एलीज़ाबेथ इतनी संभल गई थी कि अपने कपड़े वग़ैरा ख़ुद तब्दील कर लेती थी। "मेरी" ने सोचा मां अब बूढ़ी हो चुकी है, मेहमान वग़ैरा आते हैं तो उन में येह जचती नहीं है, लिहाज़ा उस ने मां को बूढ़ों के ख़ुसूसी घर या'नी ओल्ड हाऊस (OLD HOUSE) में दाख़िल करवा दिया, मां ने बहुत एह़तिजाज किया, घर में अपनी ज़रूरत का एह़सास दिलाया, नवासी एलीज़ाबेथ की परवरिश का उ़ज़्र किया, मगर उस की एक न चली। एलीज़ाबेथ को भी नानी से प्यार हो गया था, उस ने भी नानी की बहुत ह़िमायत की मगर उस की भी शनवाई न हुई। "मेरी" ह़ीले बहाने करती रही कि मकान में तंगी हो रही है, आप बे फ़िक्र रहें हम

www.dawateislami.net

वक़्तन फ़ वक़्तन ओल्ड हाउस मिलने आया करेंगे, हफ़्ता इतवार (दो दिन) घर पर भी लाया करेंगे, भला ओल्ड हाउस में जाने से कोई रिश्ते भी टूटते हैं ? शुरूअ़ शुरूअ़ में "मेरी" ने मां से मुलाक़ातें भी कीं मगर रफ़्ता रफ़्ता इस में फ़ासिले बढ़ते गए। और बिल आख़िर "इन्तिज़ार" बुढ़िया का मुक़द्दर बन गया। वोह महब्बत भरे लम्बे लम्बे ख़त तय्यार करती, नवासी एलीज़ाबेथ को प्यार लिखती मगर कोई ख़ास फ़र्क़ न पड़ा । एक बार ख़त में बेटी ने लिखा कि अब की बार क्रिस्मस (CHRISTMAS) की अगली रात मैं आप को लेने आऊंगी, घर चलेंगे। बुढ़िया की ख़ुशी की इन्तिहा न रही, उस ने ऊन (WOOL) से अपनी प्यारी नवासी के लिये स्वेटर वग़ैरा बुना ताकि उसे तोहफ़े में दे। 24 दिसम्बर को रात सख़्त बर्फ़ बारी थी "मेरी" ने लेने के लिये आना था इस लिये वोह अपना "तोहफ़ए महब्बत" लिये इन्तिज़ार में बिल्डिंग की बालकूनी में बैठी बे क़रारी के साथ सड़क पर आने जाने वाली हर गाड़ी को ग़ौर से देख रही थी, कि देखूं "मेरी" की गाड़ी कब आती है ! ओल्ड हाऊस की एक ख़ादिमा लड़की "नेन्सी" (NENSI) को बुढ़िया की बे क़रारी देख कर बड़ा तरस आ रहा था उस ने हीटर वाले कमरे में चलने के लिये बहुत इस्रार किया मगर बुढ़िया न मानी। नेन्सी ने एक गर्म शॉल ला कर उसे औढ़ा दी और हमदर्दी के साथ बार बार गर्मा गर्म चाए पेश करती रही, बुढ़िया ने सख़्त सर्दी के अन्दर ठिठरते ठिठरते इन्तिज़ार में सारी रात जाग कर गुज़ार दी मगर बेटी ने न आना था, न आई। शदीद सर्दी की वज्ह से बुढ़िया को सख़्त नमोनिया हो गया, जो कि सर्दी लगने, खांसी हो जाने और गला ख़राब होने से लाहिक़ होता है, इस में फेफड़े के किसी हिस्से में सूजन हो जाती है, जिस से वहां हवा नहीं जा सकती और मरीज़ को सांस लेने में सख़्त

www.dawateislami.net

तक्लीफ़ होती है और उस का दरजए ह़रारत (या'नी बुख़ार) 105 डिग्री तक बढ़ जाता है। इस बिमारी की ताब न लाते हुवे बुढ़िया ने दम तोड़ दिया। कुछ दिन बा'द "मेरी" अपनी मां का सामान लेने ओल्ड हाऊस आई, उस ने वहां की ख़ादिमा नेन्सी का बहुत शुक्रिया अदा किया क्यूंकि वोह आख़िरी वक़्त तक उस की बूढ़ी मां की ख़िदमत करती रही थी, चूंकि नेन्सी अभी जवान थी और काफ़ी ख़िदमत गुज़ार भी, इस लिये "मेरी" ने बेहतर तनख़्वाह का लालच दे कर उसे अपने घर ख़िदमत गारी के काम के लिये चलने की ऑफ़र की। "नेन्सी" ने चोट करते हुवे कहा : आप के घर ज़रूर आऊंगी, मगर अभी नहीं, जिस दिन आप की बेटी एलीज़ाबेथ आप को यहां ओल्ड हाऊस में छोड़ जाएगी, मैं उस के साथ उस की ख़िदमत के लिये चली जाऊंगी।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह तो एक ग़ैर मुस्लिम ख़ानदान का वाक़िआ़ था, इसे सुन कर आप को शायद कुछ अ़जीब सा महसूस हो रहा होगा। ग़ैर इस्लामी मुमालिक में ब कसरत ओल्ड हाऊस हैं और अफ़्सोस अब उन की देखा देखी इस्लामी मुल्कों ह़त्ता कि पाकिस्तान में भी इस का आग़ाज़ हो चुका है ! दा'वते इस्लामी के आलमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में 16 रबीउ़न्नूर शरीफ़ 1432 हिजरी (19-02-2011) को मुअ़म्मर ह़ज़रात (या'नी बूढ़ों) का मदनी मुज़ाकरा हुवा था जिस में मुल्क भर से हज़ारों सिन रसीदा बुज़ुर्गों ने शिर्कत की थी और येह मदनी मुज़ाकरा "मदनी चैनल" पर ब राहे रास्त टेलीकास्ट (TELECAST) किया गया था। किसी पाकिस्तानी ओल्ड हाऊस में मुक़ीम दो निहायत कमज़ोर बुज़ुर्गों ने इस्लामी भाइयों

www.dawateislami.net

से निहायत ग़मगीन लहजे में अपना दर्द बयान किया और ओल्ड हाऊस में छोड़ कर **चले जाने** पर अपने अ़ज़ीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ निहायत तअस्सुफ़ व ह़सरत का इज़हार किया और कहा कि हमारी आरज़ू है कि हमारे ख़ानदान वाले हमें घर वापस ले चलें हम यहां काफ़ी दुखी हैं। हाए ! हाए ! वोह अवलाद कितनी एह़सान फ़रामोश और ना ख़लफ़ व ना लाइक़ है जो बचपन में मां-बाप की त़रफ़ से किये जाने वाले तमाम एह़सानात को फ़रामोश कर के बुढ़ापे में उन्हें ठुकरा देती है। ह़ालांकि बुढ़ापे में तो बे चारों को हमदर्दियों की ज़ियादा ह़ाजत होती है। इस्लामी भाइयो ! आप अ़हद कीजिये कि चाहे कुछ भी हो जाए मां-बाप को उ़म्र भर निभाएंगे और उन की ख़िदमत कर के ख़ुद को जन्नत का ह़क़दार बनाएंगे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (नेकी की दा'वत, स. 442)

मुत़ीअ़ अपने मां बाप का कर मैं उन का
हर इक हुक्म लाऊं बजा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 101)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नेकियों और गुनाहों का बदला दुन्या में भी मिल कर रहता है

अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या में जो भी चीज़ पैदा फ़रमाई वोह आख़िरत का नमूना है इसी त़रह़ दुन्या में पेश आने वाले मुआ़मलात भी उख़रवी मुआ़मलात का नमूना है। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जन्नत की ने'मतें सिर्फ़ अपने नामों में दुन्यवी अश्या के मुशाबेह हैं, (या'नी जन्नत की ने'मतों की ह़क़ीक़त दुन्यवी चीज़ों से

www.dawateislami.net

मुख़्तलिफ़ है) । इस का सबब येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुन्यवी ने'मतों के ज़रीए उख़रवी ने'मतों का शौक़ दिलाया और दुन्यवी अ़ज़ाबात के ज़रीए आख़िरत के अ़ज़ाबों से डराया है। दुन्या में जारी मुआ़मलात में से एक येह भी है कि ज़ुल्म करने वाले को आख़िरत के बदले से पहले दुन्या में ही उस के ज़ुल्म का बदला मिल जाता है यूंही दीगर गुनाहों का इर्तिकाब करने वालों के साथ भी येही मुआ़मला होता है । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़रमाने आ़लीशान : مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो बुराई करेगा उस का बदला पाएगा । (پ٥،النساء:١٢٣) का येही मफ़्हूम है। बा'ज़ अवक़ात गुनाहों का इर्तिकाब करने वाला शख़्स अपने बदन और माल को सलामत देख कर येह गुमान करता है कि उसे कोई सज़ा नहीं मिल रही ह़ालांकि उस का अपनी सज़ा से ग़ाफ़िल होना भी एक क़िस्म की सज़ा है।

ह़ुकमा फ़रमाते हैं : एक गुनाह के बा'द दूसरे गुनाह में मुब्तला होना पहले गुनाह की सज़ा है जब कि एक नेकी के बा'द दूसरी नेकी की तौफ़ीक़ मिलना पहली नेकी का बदला है । बा'ज़ अवक़ात गुनाहों की जल्द मिलने वाली सज़ा (ह़िस्सी और ज़ाहिरी नहीं बल्कि) मा'नवी (बात़िनी, रूह़ानी) होती है जैसा कि बनी इस्राईल के एक इ़बादत गुज़ार शख़्स ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मैं तेरी कितनी ना फ़रमानी करता हूं लेकिन तू मुझे सज़ा नहीं देता । जवाब दिया गया : मैं तुझे सज़ा देता हूं लेकिन तुझे उस का एह़सास नहीं होता, क्या मैं ने तुझे मुनाजात की ह़लावत (मिठास) से मह़रूम नहीं कर दिया ?

www.dawateislami.net

जो शख़्स सज़ा की इस क़िस्म के बारे में ग़ौर करेगा वोह इसे अपनी ताक में पाएगा यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन वर्द رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई : क्या गुनाह करने वाला इत़ाअ़त की लज़्ज़त पाता है ? इरशाद फ़रमाया : (गुनाह का इर्तिकाब करने वाला तो दूर) गुनाह का इरादा करने वाला भी इत़ाअ़त की लज़्ज़त नहीं पा सकता। चुनान्चे, जो शख़्स अपनी निगाहों को आज़ाद छोड़ता है (या'नी बद निगाही से नहीं बचाता) वोह निगाहे इ़ब्रत से मह़रूम हो जाता है, ज़बान की ह़िफ़ाज़त न करने वाला दिल की सफ़ाई से मह़रूम हो जाता है, खाने के मुआ़मले में शुबहात से न बचने वाले का दिल सियाह हो जाता है और वोह रात में इ़बादत और मुनाजात व दुआ़ की ह़लावत (मिठास) से मह़रूम रहता है। येह एक ऐसा मुआ़मला है कि नफ़्स का मुह़ासबा करने वाले ह़ज़रात इस से वाक़िफ़ होते हैं। गुनाहों की जल्द सज़ा मिलने की त़रह़ नेकियों का मुआ़मला भी है कि इन की जज़ा भी जल्द (दुन्या में ही) मिल जाती है, जैसा कि ह़दीसे क़ुदसी में है : औ़रत की त़रफ़ देखना शैत़ान के तीरों में से एक ज़ह़रीला तीर है, जिस ने मेरी रिज़ा के ह़ुसूल के लिये उसे तर्क किया तो मैं उसे ऐसा ईमान अ़त़ा करूंगा जिस की मिठास वोह अपने दिल में पाएगा। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान नैशापूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی का बयान है : मैं नमाज़े जुमुआ़ के लिये जा रहा था कि मेरे जूते का तस्मा टूट गया। मैं उसे दुरुस्त करने के लिये ठहरा और फिर मैं ने कहा : येह तस्मा इस लिये टूटा है क्यूंकि मैं ने ग़ुस्ले जुमुआ़ नहीं किया। (صید الخاطر،ص۳۷، ملخصاً)

www.dawateislami.net

गुनाहों के अमराज़ से नीम जां हूं

पए मुर्शिदी दे शिफ़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾50﴿ झूटे गवाह बनने वाले ग़र्क़ हो गए

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन फ़र्जी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِي फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي के साथ एक किश्ती में सुवार था कि एक और किश्ती हमारे पास से गुज़री। किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي को बताया : येह किश्ती वाले बादशाह के पास जा रहे हैं और वहां जा कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़िलाफ़ कुफ़्र (या'नी مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के काफ़िर होने) की गवाही देंगे। येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस किश्ती के ग़र्क़ हो जाने की दुआ़ की। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दुआ़ करते ही उन की किश्ती उलट गई और सब के सब डूब गए। ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन फ़र्जी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِي फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मल्लाह (किश्ती चलाने वाले) का क्या कुसूर था ? फ़रमाया : उस ने उन लोगों को क्यूं सुवार किया हालांकि वोह उन के मक़्सदे सफ़र को जानता था। फिर फ़रमाया : उन लोगों का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ग़र्क़ हो कर ह़ाज़िर होना झूटा गवाह बन कर ह़ाज़िर होने से बेहतर है। इस के बा'द आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की कैफ़िय्यत तब्दील हुई और आप कांपते हुवे फ़रमाने लगे : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़ज़्ज़तो शान की क़सम ! मैं आयिन्दा किसी के लिये बद दुआ़ नहीं करूंगा। फिर एक दिन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

www.dawateislami.net

को बादशाहे मिस्र ने बुलाया और आप के अ़क़ाइद के बारे में पूछने लगा, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने वहां अह़सन अन्दाज़ से अपने अ़क़ाइद को बयान किया जिन्हें सुन कर वोह आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से ख़ुश हो गया। इस के बा'द एक दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को ख़लीफ़ए मुतवक्किल बिल्लाह ने भी त़लब किया, उस ने भी जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के नज़रिय्यात व इफ़्कार मुलाह़ज़ा किये तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का इतना दिलदादह और गिरवीदा हो गया कि कहा करता था : जब भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों का ज़िक्र हो तो सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی का ज़िक्र किया करो।

(سیر اعلام النبلاء،ذوالنون المصری، ۱۰/ ۱۸، رقم الترجمہ: ۱۹۵۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾51﴿ आज तो मुझे क़त्ल ही करा दिया था

ख़लीफ़ा मन्सूर के मुसाहिब रबीअ़ को ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से चश्मक थी, एक दिन इमाम साहिब की मौजूदगी में उस ने ख़लीफ़ा से कहा : ऐ अमीरल मोमिनीन ! अबू ह़नीफ़ा आप के जद्दे अमजद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की मुख़ालफ़त करते हैं, उन का क़ौल है कि अगर कोई क़सम खाए और फिर उस के एक दो दिन बा'द भी اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ कह दे तो उस का इस्तिस्ना सह़ीह़ है लेकिन अबू ह़नीफ़ा के नज़दीक सिर्फ़ वोही इस्तिस्ना दुरुस्त है जो क़सम से मुत्तसिल हो (या'नी क़सम के फ़ौरन बा'द اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ कहा गया हो)। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه (ने इरशाद

www.dawateislami.net

फ़रमाया : ऐ अमीरल मोमिनीन ! रबीअ़ का गुमान येह है कि आप के लश्कर की आप से बैअ़त दुरुस्त नहीं है। मन्सूर ने सबब पूछा तो आप ने इरशाद फ़रमाया : इस जगह क़सम खा कर बैअ़त कर ली और फिर घर में जा कर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कह कर बैअ़त को तोड़ दिया। येह सुन कर ख़लीफ़ा मन्सूर हंसने लगा और उस ने रबीअ़ से कहा : ऐ रबीअ़ ! इमाम साहिब के पीछे न पड़ा करो। जब दरबार से बाहर निकले तो रबीअ़ ने कहा : आज तो आप ने मुझे क़त्ल करा ही दिया था। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : नहीं, बल्कि तुम ने मेरे क़त्ल की कोशिश की थी लेकिन मैं ने तुम्हें और अपने आप को बचा लिया।

(تاریخ بغداد،رقم الترجمہ:۷۲۹۷،النعمان بن الثابت، ۱۳/۳۶۲)

ह़सद की बीमारी बढ़ चली है लड़ाई आपस में ठन गई है

शहा मुसलमान हूं मुनज़्ज़म, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 573)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿52﴾ पानी के चन्द क़त्रों का वबाल

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : किसी गाऊं में एक दूध फ़रोश रहा करता था जो दूध में पानी मिलाया करता था। एक मरतबा सैलाब आया और उस के मवेशी बहा कर ले गया तो वोह रोते हुवे कहने लगा कि सब क़त्रे मिल कर सैलाब बन गए जब कि क़ज़ा उसे निदा दे रही थी :

www.dawateislami.net

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿۱۰﴾

(پ۱۷،الحج:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह उस का बदला है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा और* ***अल्लाह*** *बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता।*

याद रखो ! चोरी और ख़ियानत हलाकत में डालने वाले और दीन के लिये शदीद नुक़्सान देह हैं। (بحرالدموع،الفصل الثانی والثلاثون، ص۲۱۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی धोका देही से माल कमाने वालों को समझाते हुवे लिखते हैं : **अस्ल बात** येह है कि इस बात का यक़ीन रखे कि दग़ा बाज़ी से रिज़्क़ कम ज़ियादा नहीं हो सकता बल्कि उल्टा माल से बरकत ख़त्म हो जाती है और बेहतरी जाती रहती है और अ़य्यारी व फ़रेब से इन्सान जो कुछ कमाता है अचानक ऐसा वाक़िआ़ पेश आता है कि वोह सब कुछ तबाह और ज़ाएअ़ हो जाता है और फ़रेब व अ़य्यारी का गुनाह ही बाक़ी रह जाता है और उस शख़्स का सा ह़ाल हो जाता है जो दूध में पानी मिलाया करता था एक बार अचानक सैलाब आया और उस की गाए को बहा ले गया। उस के दाना बेटे ने कहा : अब्बा जान बात येह है कि दूध में मिलाया हुवा सारा पानी जम्अ़ हुवा और सैलाब की शक्ल इख़्तियार कर के गाए को बहा ले गया।

(کیمیائے سعادت، باب سیم در عدل وانصاف.....الخ، ۳۲۹/۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾53﴿ यक़ीन की दौलत

दो बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिय्या رحمةالله تعالى عليها के यहां मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर हुवे और बाहम गुफ़्तगू करने लगे कि अगर राबिआ़ इस वक़्त खाना पेश कर दें तो बहुत अच्छा हो क्यूंकि उन के यहां रिज़्क़े ह़लाल मयस्सर आ जाएगा। उस वक़्त आप رحمةالله تعالى عليها के घर में सिर्फ़ दो ही रोटियां थीं, आप ने वोह रोटियां उन दोनों के सामने रख दीं, इतने में किसी साइल ने दरवाज़े पर सदा बुलन्द की तो आप ने वोह दोनों रोटियां उठा कर उसे दे दीं, येह देख कर वोह दोनों अफ़राद ह़ैरत ज़दा रह गए। कुछ ही देर के बा'द एक कनीज़ बहुत सी गर्म रोटियां लिये ह़ाज़िरे ख़िदमत हुई और अ़र्ज़ की, कि येह मेरी मालिका ने भिजवाई हैं। ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिय्या رحمةالله تعالى عليها ने जब गिनती की तो वोह अठ्ठारह रोटियां थीं, येह देख कर आप ने कनीज़ से फ़रमाया : शायद तुम्हें ग़लत़ फ़ह्मी हो गई है येह रोटियां मेरे यहां नहीं बल्कि किसी और के हां भेजी गई हैं। कनीज़ ने यक़ीन के साथ अ़र्ज़ की, कि येह आप ही के लिये भिजवाई गई हैं मगर आप ने कनीज़ के मुसलसल इसरार के बा वुजूद रोटियां वापस लौटा दीं। कनीज़ ने जब वापस जा कर अपनी मालिका से येह माजरा बयान किया तो उस ने हुक्म दिया कि इस में मज़ीद दो रोटियों का इज़ाफ़ा कर के ले जाओ, कनीज़ जब बीस रोटियां ले कर ह़ाज़िर हुई और ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिय्या رحمةالله تعالى عليها ने गिनती फ़रमा ली तो फिर इन के ज़रीए़ मेहमानों की ख़ातिर मदारत फ़रमाई। खाने से फ़राग़त के बा'द जब उन दोनों ने माजरा दरयाफ़्त किया तो ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिय्या رحمةالله تعالى عليها ने इरशाद फ़रमाया : जब आप ह़ज़रात तशरीफ़ लाए तो मुझे अन्दाज़ा हो गया था कि आप भूक का शिकार हैं चुनान्चे, जो कुछ घर में ह़ाज़िर था वोह मैं ने पेश कर दिया, इतने में साइल ने सदा लगाई तो मैं ने वोह दोनों रोटियां उसे दे कर बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरा वा'दा एक के बदले दस देने का है और मुझे तेरे वा'दे पर मुकम्मल यक़ीन है। जब वोह कनीज़ 18 रोटियां लाई तो मैं ने समझ लिया कि इस मुआ़मले में ज़रूर कोई ग़लती हुई है इस लिये मैं ने उन्हें वापस कर दिया, फिर जब वोह बीस रोटियां ले कर आई तो मैं ने वा'दे की तक्मील समझ कर उन्हें क़बूल कर लिया। (तज़किरतुल औलिया, ज़िक्रे राबिआ़, 1/68)

﴾54﴿ लुक़्मे के बदले लुक़्मा

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अस्अ़द याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي "**रोज़ुर्रयाह़ीन**" में नक़्ल फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये एक औ़रत ने किसी मोह़ताज (या'नी मिस्कीन) को खाना दिया और फिर अपने शोहर को खाना पहुंचाने खेत की त़रफ़ चल पड़ी, उस के साथ उस का बच्चा भी था, रास्ते में एक दरिन्दे (या'नी फाड़ खाने वाले जानवर) ने बच्चे पर ह़म्ला कर दिया, वोह दरिन्दा बच्चे को निगलना ही चाहता था कि नागहां (या'नी अचानक) ग़ैब से एक हाथ ज़ाहिर हुवा जिस ने उस दरिन्दे को एक ज़ोरदार ज़र्ब लगाई और बच्चे को छुड़ा लिया, फिर ग़ैब से आवाज़ आई : "ऐ नेक बख़्त ! अपने बच्चे को सलामती के साथ ले जा ! **हम ने लुक़्मे के बदले तुझे लुक़्मा अ़त़ा कर दिया**।" (या'नी तू ने ग़रीब को खाने का

www.dawateislami.net

लुक़्मा खिलाया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे बच्चे को दरिन्दे का लुक़्मा बनने से बचा लिया)। (رَوْضُ الرَّیاحِین ص ۲۷٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मैं सब दौलत रहे ह़क़ में लुटा दूं
शहा ऐसा मुझे जज़्बा अ़ता हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 316)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों से बच कर नेकियों भरी ज़िन्दगी का जज़्बा पाने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाना मुफ़ीद तरीन है। इस मदनी माह़ोल की बरकत से कैसे कैसे बिगड़े हुवे लोग सुधर गए, इस की एक झलक इस मदनी बहार में मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे,

न्यू इयर नाइट मनाने से बाज़ रहा

गुजरानवाला (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 35 साल) का बयान कुछ यूं है कि मेरा तअ़ल्लुक़ एक खाते पीते घराने से था, न नमाज़ पढ़ता न कुरआन बल्कि शराब नोशी, बदकारी, जुवा बाज़ी का शौक़ीन था ह़त्ता कि अपनी ज़मीनें बेच बेच कर जुवा खेला करता। बीवी बच्चों को भी तंग किया करता। मेरे किरदार की वज्ह से मेरे घर वाले भी सख़्त परेशान थे। वोह अक्सर मुझे बुराइयों से रोकते लेकिन मैं न मानता। एक मरतबा मैं ने अपने डेरे पर न्यू इयर नाइट मनाने का प्रोग्राम बनाया, शराब नोशी व बदकारी के

www.dawateislami.net

तमाम लवाज़िमात जम्अ़ किये, 31 दिसम्बर की रात मेरे यारे बद अत़्वार सब मेरे डेरे पर जम्अ़ हो गए। तक़रीबन 10 बजे मैं घर आया कि 12 बजे तक वापस आ जाऊंगा। घर पहुंच कर मैं ने टीवी लगाया और चैनल बदलते बदलते मदनी चैनल मेरे सामने आ गया जिस पर एक बुज़ुर्ग (या'नी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) न्यू इयर नाइट मनाने वालों को समझा रहे थे, अन्दाज़ ऐसा प्यारा और दिलचस्प था कि मैं ने वोह बयान सुनना शुरूअ़ कर दिया, इस बयान से मुझे बड़ी मा'लूमात मिलीं और इ़ब्रत हुई कि हम क्या करने जा रहे थे ? मैं ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने लगा और बिल आख़िर मैं ने न्यू इयर नाइट में ख़ुराफ़ात करने और दीगर गुनाहों से तौबा कर ली। दूसरी त़रफ़ मेरे दोस्त मेरे इन्तिज़ार में थे, जब मैं न पहुंचा तो वोह मुझे फ़ोन करने लगे लेकिन मैं ने अपना मोबाइल बन्द कर दिया और सो गया। बदली हुई सुब्ह़ से मेरी नई ज़िन्दगी का आग़ाज़ हुवा, मैं ने बुराइयां और बुरी सोह़बत छोड़ दी, अपना मोबाइल नम्बर भी तब्दील कर लिया ताकि बुरे दोस्तों से नजात मिल जाए, क़ादिरी अ़त्तारी सिलसिले में बैअ़त हो कर शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुरीद भी बन गया। अव्वलन तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र किया फिर दा'वते इस्लामी के ज़ेरे इन्तिज़ाम होने वाले 30 दिन के इजतिमाई ए'तिकाफ़ में भी बैठा। दाढ़ी बढ़ा ली, मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ना शुरूअ़ कर दिया। येह सब दा'वते इस्लामी का फ़ैज़ान है वरना इस वक़्त मैं न जाने किस ह़ाल में होता !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ماٰخذ ومراجع

نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
ترجمہ کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳٤۰ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
تفسیر خزائن العرفان	صدرالافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی، متوفی ۱۳٦۷ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
تفسیر کبیر	ابوعبداللہ محمد بن عمر التیمی الرازی، متوفی ٦۰٦ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱٤۲۰ھ
تفسیر صاوی	احمد بن محمد صاوی مالکی خلوتی، متوفی ۱۲٤۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱٤۲۱ھ
روح المعانی	ابوالفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱٤۲۰ھ
صحیح البخاری	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵٦ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱٤۱۹ھ
صحیح مسلم	امام ابوالحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲٦۱ھ	دارابن حزم، بیروت ۱٤۱۹ھ
سنن ابی داؤد	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث، بیروت ۱٤۲۱ھ
سنن الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دارالفکر، بیروت ۱٤۱٤ھ
المسند	امام احمد بن حنبل، متوفی ۲٤۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱٤۱٤ھ
مستدرک	امام ابوعبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ٤۰۵ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
الترغیب والترہیب	امام زکی الدین عبدالعظیم بن عبدالقوی منذری، متوفی ٦۵٦ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱٤۱۸ھ
المعجم الکبیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳٦۰ھ	داراحیاء التراث ۱٤۲۲ھ
المعجم الاوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳٦۰ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱٤۲۰ھ
مصنف عبدالرزاق	امام ابوبکر عبدالرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی، متوفی ۲۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ٤۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱٤۲۱ھ
مسند ابی یعلی	امام ابویعلی احمد بن علی موصلی، متوفی ۳۰۷ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۲۲ھ
مجمع الزوائد	حافظ نورالدین علی بن ابوبکر ہیثمی، متوفی ۸۰۷ھ	دارالفکر، بیروت ۱٤۲۰ھ
جمع الجوامع	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱٤۲۱ھ

www.dawateislami.net

کنز العمال	امام علی متقی بن حسام الدین ہندی، متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
جامع العلوم والحکم	عبد الرحمٰن بن شہاب الدین بن رجب حنبلی، متوفی ۷۹۵ھ	المکتبۃ الفیصلیہ مکۃ المکرمہ
شرح صحیح البخاری	ابو الحسن علی بن خلف بن عبد الملک، متوفی ۴۴۹ھ	مکتبۃ الرشد الریاض ۱۴۲۰ھ
فیض القدیر	علامہ عبد الرؤف مناوی، متوفی ۱۰۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ
التیسیر بشرح جامع الصغیر	علامہ عبد الرؤف مناوی، متوفی ۱۰۳۰ھ	مکتبۃ الامام الشافعی ریاض ۱۴۰۸ھ
کتاب الجامع	امام حافظ معمر بن راشد ازدی، متوفّٰی ۱۵۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
البدایہ والنہایہ	ابو فداء اسماعیل بن عمر بن کثیر دمشقی شافعی، متوفی ۷۷۴ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
المناقب للموفق	الموفق بن احمد المکی، متوفّٰی ۵۶۸ھ	کوئٹہ پاکستان
الزہد	امام ابو عبد اللہ احمد بن محمد بن حنبل، متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الغد الجدید ۱۴۲۶ھ
سیر اعلام النبلاء	امام شمس الدین محمد بن احمد ذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۷ھ
تاریخ بغداد	حافظ ابو بکر احمد بن علی خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ
حیاۃ الحیوان	کمال الدین محمد بن موسیٰ دمیری، متوفی ۸۰۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۵ھ
احیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر، بیروت ۱۸۶۳ء
مکاشفۃ القلوب	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت
کیمیائے سعادت	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	انتشارات گنجینہ تہران
الرّیاض النضرۃ	الامام شیخ ابو جعفر احمد الشہیر الطبری، متوفّٰی ۶۹۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
اسد الغابۃ	عز الدین ابو الحسن علی بن محمد الجزری، متوفی ۶۳۰ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۱۷ھ
القول البدیع	امام ابو الفرج محمد بن عبد الرحمٰن سخاوی شافعی، متوفی ۹۰۲ھ	مؤسسۃ الریان بیروت ۱۴۲۲ھ
شرح العلامۃ الزرقانی	محمد بن عبد الباقی بن یوسف زرقانی، متوفی ۱۱۲۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۷ھ
تذکرۃ الاولیاء	شیخ ابو حامد امام محمد بن ابو بکر ابراہیم فرید الدین عطار نیشاپوری، متوفی ۶۳۷ھ	انتشارات گنجینہ تہران ایران ۱۳۷۹ھ
صید الخاطر	امام ابو الفرج عبد الرحمٰن بن علی ابن جوزی، متوفّٰی ۵۹۷ھ	نزار مصطفیٰ الباز ۱۴۲۵ھ

www.dawateislami.net

بحرالدموع	امام ابوالفرج عبدالرحمٰن بن علی ابن جوزی، متوفّٰی ۵۹۷ھ	مکتبہ دارالفجر دمشق ۱۴۲۴ھ
عیون الحکایات	ابوالفرج عبدالرحمٰن بن علی جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
التذکرۃ الحمدونیۃ	ابن حمدون، متوفی ۵۶۲ھ	دارصادر، بیروت ۱۹۹۶ء
مستطرف	شہاب الدین محمد بن ابی احمد ابی الفتح، متوفّٰی ۸۵۰ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
اتحاف السادۃ المتقین	علامہ سید محمد بن محمد الحسینی الزبیدی الشہیر بمرتضی، متوفی ۱۴۰۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
الزواجر	احمد بن محمد بن علی بن حجر مکی ہیتمی، متوفی ۹۷۴ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
روض الریاحین	عبداللہ بن اسعد بن علی یافعی مالکی، متوفی ۷۶۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
کتاب الکبائر	الامام الحافظ محمد بن احمد بن عثمان بن قایماز الذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	پشاور
مثنوی مولوی معنوی	مولانا جلال الدین رومی	الفیصل ناشران
فضائل دعاء	رئیس المتکلمین مولانا نقی علی خان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
فتاوی رضویہ (مخرجہ)	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور ۱۴۱۸ھ
الملفوظ (ملفوظات اعلیٰ حضرت)	شہزادہ اعلیٰ حضرت محمد مصطفی رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
مراۃ المناجیح	حکیم الامت حضرت مفتی احمد یار خان	ضیاء القرآن
سیرت مصطفی	شیخ الحدیث حضرت علامہ عبدالمصطفی اعظمی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
آئینہ عبرت	شیخ الحدیث حضرت علامہ عبدالمصطفی اعظمی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
عجائب القرآن	شیخ الحدیث حضرت علامہ عبدالمصطفی اعظمی	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
نیکی کی دعوت	امیر اہلسنت حضرت علامہ ابو بلال محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتہم العالیہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
زلزلہ اور اس کے اسباب	امیر اہلسنت حضرت علامہ ابو بلال محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتہم العالیہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
ظلم کا انجام	امیر اہلسنت حضرت علامہ ابو بلال محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتہم العالیہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
وسائل بخشش	امیر اہلسنت حضرت علامہ ابو بلال محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتہم العالیہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारिये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

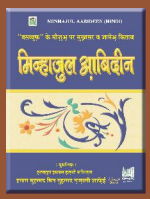

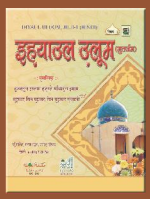

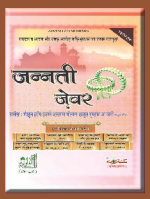

ISBN 978-969-631-593-3
0126102

MAKTABA TUL MADINAH
MC 1286

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ ह़ैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, ह़ैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net